राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-८ नवी मुंबई मई २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३२ नि:शुल्क

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी : दिमाग से भी हटनी चाहिए लाल बत्ती

नई दिल्ली। अपनी अनूठी योजना, जिसमे पीएम मोदी लोगों के सामने होते हैं, 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने वीआईपी कल्चर को छोड़ने की बात की। मोदी ने कहा कि लाल बत्ती की संस्कृति के कारण वीआईपी कल्चर बनी थी जो अब समाप्त होनी चाहिए। लाल बत्ती के हटाने के बारे में मोदी ने बताया कि लाल बत्ती गाड़ी से भी नहीं दिमाग से भी जानी चाहिए। वीआईपी संस्कृति की जगह प्रधानमंत्री मोदी ने एक नया शब्द प्रारम्भ करते हुए कहा कि हमें ईआईपी (EIP) संस्कृति को अपनाना चाहिए। इसका अर्थ बताते हुए कहा कि ऐवरी पर्सन इस इम्पोर्टेन्ट। इस प्रकार देश व सरकार के लिए हर आदमी का महत्त्व है कोई भी व्यक्ति विशेष नहीं है।

उल्लेखनीय है कि 'सबका साथ सबका विकास' का नारा भी वर्तमान सरकार का है और सरकार का लक्ष्य समावेशी विकास की अवधारणा को क्रियान्वित

करना है। अगर हर वंचित का विकास होगा तभी हम विशेष बन पाएंगे, क्योंकि पिछड़े, दलित, गरीब लोगों के लिए वीआईपी संस्कृति से मतलब नहीं होता है। अगर हमें देश को आगे ले जाना है तो सवा सौ करोड़ लोगों को साथ लेकर हर व्यक्ति का विकास करना होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत ने हमेशा से 'सबका साथ-सबका विकास' के मंत्र को लेकर आगे बढ़ने का प्रयास किया है और उसका यह मूलमंत्र सिर्फ देश के भीतर ही नहीं, बल्कि वैश्विक परिवेश और अड़ोस-पड़ोस के देशों के लिए भी है।

पीएम मोदी ने कहा, 'हम चाहते हैं कि हमारे पड़ोस के देशों का साथ भी हो, हमारे अड़ोस-पड़ोस के देशों का विकास भी हो।' प्रधानमंत्री ने कहा, 'पांच मई को भारत दक्षिण एशिया उपग्रह का प्रक्षेपण करेगा। इस उपग्रह की क्षमता तथा इससे जुड़ी सुविधाएं दक्षिण एशिया की आर्थिक और विकासात्मक प्राथमिकताओं को पूरा करने में काफी मदद करेंगी यह हमारे पूरे क्षेत्र के आगे बढ़ने में मददगार होगा।'

दुनिया में कई स्थानों पर हिंसा और युद्ध की स्थिति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, 'विश्व आज जिन समस्याओं से गुजर रहा है उनको देखते हुए बुद्ध के विचार प्रासंगिक लगते हैं। भारत में अशोक का जीवन युद्ध से बुद्ध की यात्रा का उत्तम प्रतीक है।'

उन्होंने एक मई को श्रमिक दिवस के मौके पर भारतीय मजदूर संघ के जनक दत्तोपंत ठेंगड़ी को उद्धृत करते हुए कहा, 'एक तरफ माओवाद से प्रेरित विचार था कि दुनिया के मजदूर एक हो जाओ और ठेंगड़ी जी कहते थे कि मजदूरो दुनिया को एक करो।' ■

मालेगांव विस्फोट में साध्वी प्रज्ञा को मिली जमानत, कर्नल पुरोहित को राहत नहीं

मुंबई। बॉम्बे हाई कोर्ट ने साल २००८ मालेगांव बम विस्फोट की साजिश रचने की आरोपी साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर को जमानत दे दी, लेकिन सह आरोपी और पूर्व लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद पुरोहित को कोई राहत देने से इनकार कर दिया। अदालत ने साध्वी को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) को अपना पासपोर्ट सौंपने और सबूतों से छेड़छाड़ नहीं करने का निर्देश दिया है। साथ ही उन्हें यह भी निर्देश दिया गया है कि जरूरत पड़ने पर वह एनआईए अदालत में रिपोर्ट करें।

न्यायमूर्ति रंजीत मोरे और न्यायमूर्ति शालिनी फनसाल्कर जोशी की बेंच ने कहा, 'साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर की अपील को मंजूरी दी जाती है। उन्हें पांच लाख रुपये की जमानत पर रिहा करने का निर्देश दिया जाता है। प्रसाद पुरोहित की ओर से दायर अपील को खारिज किया जाता है।' न्यायमूर्ति मोरे ने आज के आदेश पर रोक लगाने से इनकार करते हुए कहा, 'हमने अपने आदेश में कहा है कि पहली नजर में साध्वी के खिलाफ कोई मामला नहीं बनता है।'

उल्लेखनीय है कि २९ सितंबर २००८ को मालेगांव में एक बाइक में बम लगाकर विस्फोट किया गया था जिसमें आठ लोगों की मौत हुई थी और लगभग ८० लोग घायल हो गए थे। साध्वी और पुरोहित को २००८ में गिरफ्तार किया गया था और तभी से वे जेल में रहे हैं। अदालत के इस आदेश के बाद साध्वी को रिहा कर दिया गया।

जमानत पर रिहा होने के दो दिन बाद साध्वी प्रज्ञा ठाकुर मीडिया के सामने आईं। उन्होंने नौ साल तक जेल में रखे जाने और भगवा आतंकवाद की थिअरी के लिए पूर्व की यूपीए सरकार पर आरोप लगाए हैं। उन्होंने पूर्व गृह और वित्त मंत्री पी. चिदंबरम का नाम लेकर कहा कि कांग्रेस सरकार ने षड्यंत्र के तहत उन्हें फंसाया। साध्वी ने अपनी खराब सेहत के लिए एटीएस मुंबई की प्रताड़ना को जिम्मेदार बताया। उल्लेखनीय है कि साध्वी प्रज्ञा सिंह कैंसर से पीड़ित हैं। ■

चीन में मुस्लिमों के सद्दाम, जिहाद और इस्लाम जैसे नाम रखने पर रोक

बीजिंग। चीन ने शिनजियांग प्रांत में बढ़ती धार्मिक कट्टरता पर अंकुश लगाने के लिए नया कदम उठाया है। उसने मुस्लिमों पर अपने बच्चों का इस्लाम, कुरान, मक्का, जिहाद, इमाम, सद्दाम, हज और मदीना जैसे नाम रखने पर प्रतिबंध लगा दिया है। ऐसे नाम वाले बच्चे स्कूलों में दाखिल और सरकारी लाभ पाने से वंचित होंगे। इस प्रांत में मुस्लिम उइगरों की बड़ी आबादी रहती है। ये नाम पूरी दुनिया में मुस्लिम आमतौर पर अपने बच्चों का रखते हैं।

चीन ने हाल ही में मुस्लिम उइगरों के असामान्य दाढ़ी रखने और सार्वजनिक स्थानों पर नकाब पहनने पर प्रतिबंध लगाने समेत कई नए नियम बनाए थे। अशान्तिग्रस्त शिनजियांग प्रान्त में लगभग एक करोड़ मुस्लिम उइगर रहते हैं। ■

दिल्ली नगर निगम चुनाव में भाजपा की लगातार तीसरी जीत, आप और कांग्रेस को मिली करारी हार

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने जीत की तिकड़ी लगाते हुए तीनों निगमों की सत्ता पर कब्जा बरकरार रखा। वहीं, इस चुनाव में आप और कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा है। मतगणना पूरी होने पर तीन निगमों के २७० वार्ड के लिए राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा घोषित चुनाव परिणाम में भाजपा ने १८१ वार्ड में जीत दर्ज की है। वहीं, आप को ४८ और कांग्रेस को ३० सीट पर संतोष करना पड़ा। गत २३ अप्रैल को तीनों निगमों के कुल २७२ वार्डों में से २७० वार्ड पर मतदान हुआ था। दो वार्ड में उम्मीदवारों के निधन के कारण मतदान स्थगित कर दिया गया है।

दक्षिणी निगम की १०३ सीटों पर हुए चुनाव में भाजपा को ७०, आप को १६ और कांग्रेस को १२ सीट हासिल हुई हैं, जबकि पूर्वी निगम की ६३ सीटों पर हुए चुनाव में भाजपा को ४७, आप को ११ और कांग्रेस की झोली में सिर्फ ३ सीट गई हैं। वहीं, उत्तरी निगम की १०४ सीटों में भाजपा को ६४, आप को २१ और कांग्रेस को १५ सीट पर कामयाबी मिली है। भाजपा को साल २०१२ में हुए पिछले निगम चुनाव में १३८ वार्ड में जीत मिली थी, जबकि कांग्रेस की झोली में ७० सीटें गई थीं। अब चुनाव परिणाम के आधार पर आप दूसरे स्थान पर और कांग्रेस तीसरे स्थान पर खिसक गई है।

नगर निगम चुनाव में भाजपा की जीत पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मतदाताओं का आभार जताते हुए कहा कि मैं दिल्ली भाजपा कार्यकर्ताओं के कठोर परिश्रम की प्रशंसा करता हूं, जिसकी वजह से एमसीडी

में यह जीत संभव हो सकी।

नगर निगम चुनाव में बदतर प्रदर्शन केजरीवाल के लिए झटका है, क्योंकि निगम चुनाव को उनके दो साल के शासन का जनादेश माना जा रहा है। हार से सन्न मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पार्टी आप ने आरोप लगाया है कि भगवा पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के लिए ईवीएम से छेड़छाड़ की गई।

इन चुनावों में भाजपा को ३६ प्रतिशत, आप को २६ प्रतिशत और कांग्रेस को २१ प्रतिशत मत मिले। भाजपा के मत प्रतिशत में कोई वृद्धि नहीं हुई है। २०१२ में हुए पिछले चुनाव में भी भाजपा को ३६.७४ प्रतिशत मत मिले थे, लेकिन कांग्रेस का मत प्रतिशत पिछली बार के ३०.५४ प्रतिशत की अपेक्षा बहुत कम रहा है। दिल्ली नगर निगम चुनावों में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के तीन पार्षदों को जीत मिली है, जिसमें एक पार्षद एनडीएमसी से और दो पार्षद ईडीएमसी से हैं. समाजवादी पार्टी (सपा) और भारतीय राष्ट्रीय लोकदल को एक-एक सीट पर जीत मिली है। इसके अलावा छह निर्दलीय पार्षद भी जीतकर आए हैं। ■

लंदन से चीन तक चली मालगाड़ी

बीजिंग। चीन से लंदन के बीच चलने वाली पहली मालगाड़ी 'ईस्ट विंड' ३० अप्रेल को पूर्वी चीन के यिवू शहर पहुंच गई। ईस्ट विंड ट्रेन ने दुनिया के दूसरे सबसे लंबे रूट १२,००० किलोमीटर की दूरी तय की है। यह दूरी तय करने में इसे कुल २० दिन का समय लगा है। पश्चिमी यूरोप से व्यापार तेज करने की दिशा में यह चीन का महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

चीन ने अपने धीमे पड़े निर्यात को सुधारने के लिए दुनिया के शीर्ष व्यापारिक देशों विशेषतः पश्चिमी यूरोप के देशों के बीच २०१३ में 'वन बेल्ट, वन रोड' की शुरूआत की थी। १० अप्रैल को ईस्ट विंड ट्रेन झेझियांग प्रांत के यिवु शहर के लिए रवाना हुई थी। इस ट्रेन के जरिए चीन को व्हिस्की, बेबी मिल्क, दवायें और मशीनरी पहुंचाई गई है। ईस्ट विंड ने अपनी इस यात्रा के अन्तर्गत ६ देशों फ्रांस, जर्मनी, पोलैंड, रूस, कजाखस्तान और बेलारूस को पार किया। ■

कार्टून

जाने कहाँ गये वे लोग?

-- मनोज कुरील

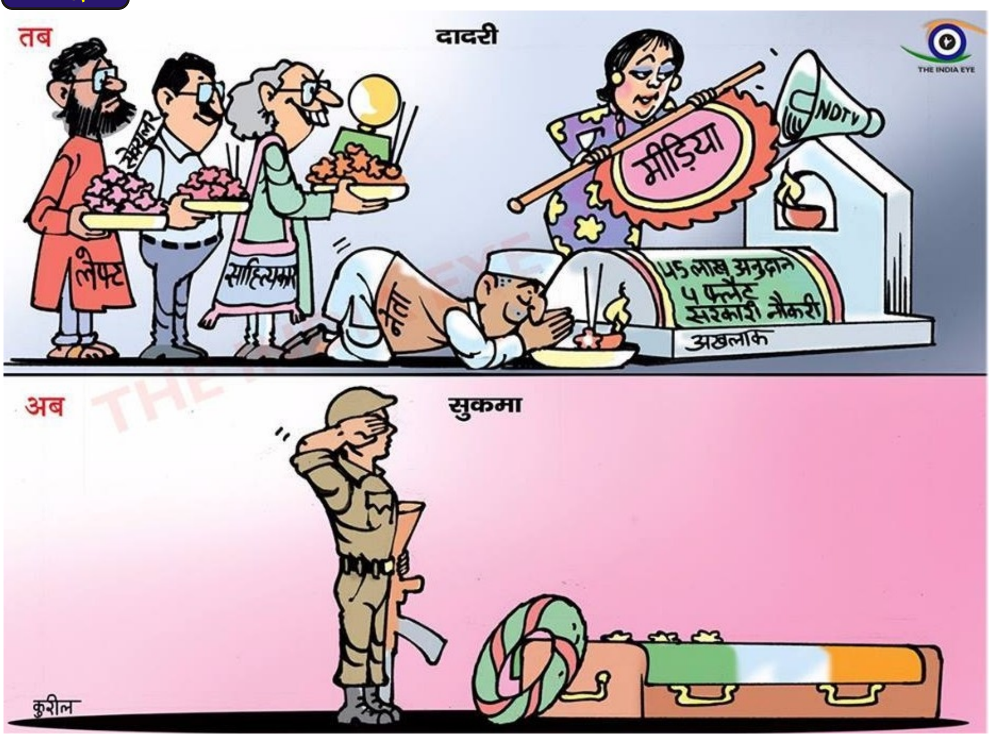

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. आधुनिक युग की मीरा किसे कहा जाता है?
२. बेलिंगटन ट्रॉफी किस खेल से सम्बन्धित है?
३. नॉन-स्टिक रसोई के बर्तन पर किसकी परत चढ़ाई जाती है?
४. खजुराहो के मन्दिर किस राजवंश ने बनवाये थे?
५. गीत गोविन्द के रचयिता कौन थे?
६. १९३९ ई. में कांग्रेस छोड़ने के बाद सुभाषचंद्र बोस ने किस दल की स्थापना की थी?
७. डॉ अम्बेडकर का जन्म कब हुआ था?
८. संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष कौन था?
९. महाभारत के अनुसार भीम की पहली पत्नी का क्या नाम था?
१०. रामायण में रावण और कुबेर आपस में क्या थे?

उत्तर-

१. महादेवी वर्मा; २. नौकादौड़; ३. टेफ्लॉन; ४. चन्देल; ५. जयदेव; ६. फॉरवर्ड ब्लॉक; ७. १४ अप्रैल १८९१; ८. डॉ राजेन्द्र प्रसाद; ९. हिडिम्बा; १०. सौतेले भाई।

सुभाषित

आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च।
पंचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- आयु, गुणानुसार कर्म, धन, विद्या, और मृत्यु ये पाँच वस्तुएं प्राणी के गर्भ में ही निश्चित हो जाते हैं।

पद्यार्थ- आयु विद्या मृत्यु धन कर्म पाँचवा ज्ञान।
गर्भकाल में ही सुनो नियत करे भगवान।। (आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

सुरक्षा बलों के सम्मान का प्रश्न

आये दिन भारत के सुरक्षा बलों पर नक्सलवादी या आतंकवादी हमले होते हैं, जिनमें हमारे जवानों के बहुमूल्य प्राणों की हानि होती है। हाल ही में सुकमा में नक्सलवादियों ने भोजन कर रहे सुरक्षा बल के सैनिकों पर घात लगाकर अंधाधुंध गोली वर्षा की, जिससे २६ जवानों के प्राण गये। कश्मीर में और पाकिस्तान से लगी सीमाओं पर सुरक्षा बलों के शिविरों पर अचानक किये जाने वाले आतंकवादी हमलों के समाचार भी आते रहते हैं। उनमें भी कभी एक, कभी दो-तीन तो कभी दर्जनों सैनिकों और सेना अधिकारियों के प्राण चले जाते हैं।

जब भी ऐसी कोई घटना होती है तभी हमारे देश में चिन्ता और क्रोध की लहर चल पड़ती है, जो कि स्वाभाविक ही है। जन साधारण ठीक ही यह आशा करता है कि सुरक्षा बल न केवल आतंकवादियों से देश की रक्षा करेंगे, बल्कि अपने और एक-दूसरे के प्राणों की भी उतनी ही निष्ठा से रक्षा करेंगे। हमारा प्रत्येक सैनिक देश की निधि है, जिसको तैयार करने में अनेक वर्ष लगते हैं और लाखों-करोड़ों रुपये का धन भी व्यय होता है, जो करदाता की मेहनत की कमाई से आता है। परन्तु जब यह आशा पूरी नहीं होती और उनकी जनहानि के समाचार आते हैं तो जनता में निराशा फैल जाती है। वे तात्कालिक तौर पर ऐसी घटनाओं का बदला लेने की माँग करने लगते हैं, भले ही ऐसी माँग को तुरन्त पूरा करना सम्भव न हो।

इसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया यह होती है कि लोग सरकार और उसमें भी रक्षा मंत्री या गृह मंत्री की आलोचना करने लगते हैं और उनको निकम्मा घोषित कर देते हैं। निस्संदेह देश की जनता की आशाओं को पूरा करना सरकार का दायित्व है और यदि जनता उसकी आलोचना करती है तो वह भी उनका लोकतांत्रिक अधिकार है। लेकिन जनता को यह भी समझ लेना चाहिए कि किसी भी क्रिया की तत्काल प्रतिक्रिया करना अपरिपक्वता का प्रतीक है। कोई भी कार्यवाही करने से पहले बहुत सोच-विचार करना पड़ता है और अपनी तथा शत्रु की शक्तियों और कमियों का भी विश्लेषण करना पड़ता है।

निस्संदेह यह सुरक्षा बलों के सम्मान का प्रश्न है, फिर भी हमें प्रतिक्रिया व्यक्त करने में बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। हमारे सुरक्षा बल संसार के सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा बलों में से एक हैं और उनकी विश्वसनीयता पर कोई प्रश्न कोई नहीं उठा रहा या उठा सकता। हालांकि जब दो पक्ष एक दूसरे के खून के प्यासे हों, तो दोनों ही पक्षों को कम या अधिक हानि होती ही है। इस बारे में सुरक्षा बलों को और अधिक धैर्य तथा सावधानी की आवश्यकता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि निराश करने वाली ऐसी अनेक घटनाओं के होने पर भी देश की जनता का विश्वास वर्तमान केन्द्रीय सरकार तथा मुख्य रूप से उसके प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति लेशमात्र भी कम नहीं हुआ है। इसका पता इसी से चल जाता है कि आये दिन होने वाले विधानसभा, नगरपालिका या स्थानीय निकाय और विभिन्न उपचुनावों में प्रधानमंत्री के नाम पर ही उनकी पार्टी भाजपा के प्रत्याशियों को भरपूर समर्थन मिलता है। इससे यह धारणा प्रबल होती है कि कई कठिनाइयों के बाद भी देश सही रास्ते पर बढ़ रहा है और देश का सम्मान मोदी जी के सुदृढ़ हाथों में पूरी तरह सुरक्षित है।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

जय विजय का अप्रैल अंक प्राप्त हुआ, कुछ पढ़ लिया कुछ पढ़ना बाकी है, बहुत बहुत धन्यवाद एवं शानदार अंक के लिए हार्दिक बधाई। **-- कल्पना रामानी**

उत्कर्ष रचनाओं का चयन! बहुत सुन्दर गठन! अभी भी पूरा नहीं पढ़ पाई, परन्तु जो पढ़ा पूरा किए बगैर न छूटा। **-- अर्चना ठाकुर**

जय विजय के निर्बाध प्रकाशन व शानदार संपादन के लिए हार्दिक बधाई। हमारी रचनाओं को पत्र में स्थान दिए जाने हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद।
-- विनोद कुमार विक्की, महेश खूंटबिहार

आपको उत्तम लेख और आकर्षक सामग्री प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद। वास्तव में यह एक उत्कृष्ट संकलन है। **-- भगवान सिंह कथायत**

बहुत शानदार मासिक पत्रिका। आपका बहुत बहुत अभिनन्दन।
-- प्रणव कुमार गोस्वामी

रोचक अंक के लिए बधाई। गोआ के मुख्यमंत्री से सम्बंधित आलेख अच्छा लगा। अर्चना पांडा की रचना 'आओ जीवन सीधा-सादा कर लें' ने ध्यान आकर्षित किया। पुस्तक समीक्षा प्रकाशित करने के लिए हार्दिक धन्यवाद। **-- पूनम माटिया**

धन्यवाद बड़े भ्राता! **-- पाठक जी गोआ, रविशंकर झा**

हमारी कविताओं को स्थान देने हेतु हार्दिक आभार।
-- अमित कुमार अम्बष्ट, तारकेश कुमार ओझा, राजीव चौधरी

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

शिक्षा माफिया पर लगाम लगे

मृदुल शरण

आज अपने देश में निजी विद्यालय खोलना एक व्यापार और शिक्षा माफिया का अड्डा बन गया है। इसने एक ऐसा रूप ले लिया है जो दहेज प्रथा से भी ऊपर चला गया है। सरकार की आखों के सामने मनमाने ढंग से बच्चों के माता-पिता का आर्थिक शोषण हो रहा है और शिक्षा को व्यापार बना दिया गया है। इसके लिए हम भी दोषी हैं जो अपने बच्चों को ऐसे स्कूलों में दाखिला दिलाने के पीछे पागल हो गये हैं। इसको हमने अपना स्टेटस सिम्बल बना लिया है। इसका फायदा निजी स्कूल वाले जमकर उठाते हैं और हमसे मोटी रकम वसूल कर अपनी जेब भरते हैं। सरकार भी वर्षों से इस विषय पर खामोश होकर तमाशा देखती रही है। दूसरा कारण यह भी है कि सरकारी स्कूलों का स्तर दिनों-दिन गर्त मे गिरता चला गया जिसका सीधा फायदा निजी स्कूल उठा रहे हैं।

सरकार को चाहिए कि सरकारी स्कूलों के स्तर को सुधारे और ऐसे शिक्षकों को नियुक्त करे, जिनमें बौद्धिक क्षमता हो और जो सिर्फ डिग्री ही न रखे हों। वर्ना आज सरकारी स्कूलों मे ऐसे शिक्षकों की भरमार है जो सिर्फ डिग्री का ही चोला पहने हैं। अतः सरकार ऐसे शिक्षकों की पहचान कर उन्हें विरमित करे।

निजी विद्यालयों के लिए सरकार एक पैमाना निर्धारित करे कि नर्सरी से लेकर हायर सेकंडरी तक ऐसे विद्यालय कितना सालाना फीस ले सकते हैं। साथ ही साथ किताबों और ड्रेस के लिए जो ये मनमानी करते हैं इस पर भी अंकुश लगाए।

अपने देश में गुजरात एक ऐसा राज्य है जहाँ ऐसे विद्यालयों के लिए सख्त नियम हैं और उल्लंघन पर दंड का भी प्रावधान है। ऐसा नियम सारे देश के निजी विद्यालयों में लागू होना चाहिए। आजकल उत्तर प्रदेश की जनता ने ऐसे निजी विद्यालयों की मनमानी के खिलाफ आन्दोलन शुरू कर दिया है। यह आन्दोलन सभी राज्यों में चलना चाहिए।

अगर गहराई में जाएं तो एक सच्चाई आपको देखने को मिलेगी कि ज्यादातर निजी विद्यालयों में भी शिक्षकों को विषयों की जानकारी का स्तर अच्छा नहीं है और बेरोजगारी के तले दबे ऐसे शिक्षकों को ये स्कूल वाले कम पैसों में नियुक्त करते हैं और उन्हें भी शोषित करते हैं। ऐसे शिक्षक बच्चों को पढाते कम हैं, अपनी नौकरी ज्यादा बचाते हैं। मेरी ये बातें निजी विद्यालयों के प्रबंधकों को नागवार लगेंगी, पर वे जरा सोचें कि क्या नैतिकता और मानवता के दृष्टिकोण से यह सही है? ■

पुराणों के कृष्ण बनाम महाभारत के कृष्ण

डॉ विवेक आर्य

प्रशांत भूषण ने उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा चलाये जा रहे रोमियो अभियान के विरोध में श्री कृष्ण पर आपत्तिजनक टिप्पणी करते हुए श्री कृष्ण को छेड़छाड़ करने वाला बताया है। इसे हम विडम्बना ही कहेंगे कि श्री कृष्ण पर जूठे आरोप लगाकर प्रशांत भूषण अपने राजनीतिक हितों को साधना चाहते हैं। वैसे श्री कृष्ण पर ऐसे मिथ्या आरोप पहले भी लगते रहे हैं। जैसे- फिल्म रेडी में सलमान खान पर फिल्माया गया गाना 'कुड़ियों का नशा प्यारे, नशा सबसे नशीला है, जिसे देखो यहाँ वो हुस्न की बारिश में गीला है, इश्क के नाम पे करते सभी अब रासलीला है, मैं करूँ तो साला करैक्टर ढीला है, मैं करूँ तो साला करैक्टर ढीला है।'

सन २००५ में उत्तर प्रदेश में पुलिस अफसर डी के पांडा राधा के रूप में सिंगार करके दफ्तर में आने लगे और कहने लगे कि मुझे कृष्ण से प्यार हो गया है और में अब उनकी राधा हूँ। अमरीका से उनकी एक भगत लड़की आकर साथ रहने लग गई। उनकी पत्नी वीणा पांडा का कथन था कि यह सब ढोंग है।

इस्कोन के संस्थापक प्रभुपाद जी एवं अमरीका में धर्म गुरु दीपक चोपरा के अनुसार 'कृष्ण को सही प्रकार से जानने के बाद ही हम वैलंटाइन डे (प्रेमियों का दिन) के सही अर्थ को जान सकते हैं। इस्लाम को मानने वाले जो बहुपत्नीवाद में विश्वास करते है सदा कृष्ण पर १६००० रानी रखने का आरोप लगाकर उनका मखोल करते हैं। इस लेख के माध्यम से हम श्री कृष्ण के विषय में फैलाई जा रही भ्रांतियों का निराकरण करेंगे।

प्रसिद्द समाज सुधारक एवं वेदों के प्रकांड पंडित स्वामी दयानंद जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण के बारे में लिखते हैं कि 'पूरे महाभारत में श्री कृष्ण के चरित्र में कोई दोष नहीं मिलता एवं उन्हें आप्त (श्रेष्ठ) पुरुष कहा है।' स्वामी दयानंद श्री कृष्ण को महान विद्वान सदाचारी, कुशल राजनीतिज्ञ एवं सर्वथा निष्कलंक मानते हैं, फिर श्री कृष्ण के विषय में चोर, गोपिओं का जार (रमण करने वाला), कुब्जा से सम्भोग करने वाला, रणछोड़ आदि प्रसिद्ध करना उनका अपमान नहीं तो क्या है? श्री कृष्ण के चरित्र के विषय में ऐसे मिथ्या आरोप का आधार क्या है? इन गंदे आरोपों का आधार है पुराण। आइये हम सप्रमाण अपने पक्ष को सिद्ध करते है।

गोपियों से कृष्ण का रमण करने का मिथ्या वर्णन

विष्णु पुराण अंश ५ अध्याय १३ श्लोक ५९-६० में लिखा है- 'वे गोपियाँ अपने पति, पिता और भाइयों के रोकने पर भी नहीं रुकती थीं, रोज रात्रि को वे रति (विषय भोग) की इच्छा रखने वाली कृष्ण के साथ रमण किया करती थीं। कृष्ण भी अपनी किशोर अवस्था का मान करते हुए रात्रि के समय उनके साथ रमण किया करते थे।' कृष्ण उनके साथ किस प्रकार रमण करते थे इस पर भी पुराणों के रचयिता ने श्री कृष्ण को कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

भागवत पुराण स्कन्द १० अध्याय ३३ श्लोक १७ में लिखा है- 'कृष्ण कभी उनका शरीर अपने हाथों से स्पर्श करते थे, कभी प्रेम भरी तिरछी चितवन से उनकी और देखते थे, कभी मस्त हो उनसे खुलकर हास विलास करते थे। जिस प्रकार बालक तन्मय होकर अपनी परछाई से खेलता है वैसे ही मस्त होकर कृष्ण ने उन ब्रज सुंदरियों के साथ रमण, काम क्रीड़ा किया।'

भागवत पुराण स्कन्द १० अध्याय २९ श्लोक ४५-४६ में लिखा है- 'कृष्ण ने जमुना के कपूर के सामान चमकीले बालू के तट पर गोपिओं के साथ प्रवेश किया। वह स्थान जलतरंगों से शीतल व कुमुदिनी की सुगंध से सुवासित था। वहां कृष्ण ने गोपियों के साथ रमण बाहें फैलाना, आलिंगन करना, गोपियों के हाथ दबाना, उनकी चोटी पकरना, जांघों पर हाथ फेरना, लहंगे का नारा खींचना, स्तन पकड़ना, मजाक करना नाखूनों से उनके अंगों को नोच-नोचकर जख्मी करना, विनोदपूर्ण चितवन से देखना और मुस्कराना तथा इन क्रियाओं के द्वारा नवयोवना गोपिओं को खूब जागृत करके उनके साथ कृष्णा ने रात में रमण किया।'

ऐसे अभद्र विचार श्री कृष्ण को कलंकित करने के लिए भागवत के रचियता नें स्कन्द १० के अध्याय २९-३३ में वर्णित किये है जिसका सामाजिक मर्यादा का पालन करते हुए मैं वर्णन नहीं कर रहा हूँ।

राधा और कृष्ण का पुराणों में वर्णन

राधा का नाम कृष्ण के साथ लिया जाता है। लेकिन महाभारत में राधा का वर्णन तो क्या नाम तक नहीं मिलता। राधा का वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण में अत्यंत अशोभनीय वृतांत का वर्णन करते हुए मिलता है। इसके कृष्णजन्म खंड अध्याय ३ श्लोक ५९-६२ में लिखा है कि गोलोक में कृष्ण की पत्नी राधा ने कृष्ण को पराई औरत के साथ पकड़ लिया तो शाप देकर कहा- 'हे कृष्ण ब्रज के प्यारे, तू मेरे सामने से चला जा तू मुझे क्यों दुःख देता है। हे चंचल, हे अति लम्पट कामचोर मैंने तुझे जान लिया है। तू मेरे घर से चला जा। तू मनुष्यों की भांति मैथुन करने में लम्पट है, तुझे मनुष्यों की योनि मिले, तू गौलोक से चला जा। हे सुशीले, हे शशिकले, हे पद्मावती, हे माधवी! यह कृष्ण धूर्त है इसे निकालकर बहार करो, इसका यहाँ कोई काम नहीं।'

ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खंड अध्याय १५ में राधा का कृष्ण से रमण का अत्यंत अश्लील वर्णन लिखा है जिसका सामाजिक मर्यादा का पालन करते हुए मैं यहाँ विस्तार से वर्णन नहीं कर रहा हूँ।

राधा का कृष्ण के साथ सम्बन्ध भी भ्रामक है। राधा कृष्ण के वामांग से पैदा होने के कारण कृष्ण की पुत्री थी अथवा रायण से विवाह होने से कृष्ण की पुत्रवधु थी। चूँकि गोलोक में रायण कृष्ण के अंश से पैदा हुआ था इसलिए कृष्ण का पुत्र हुआ जबकि पृथ्वी पर रायण कृष्ण की माता यशोदा का भाई था इसलिए कृष्ण का मामा हुआ जिससे राधा कृष्ण की मामी हुई।

कृष्ण की गोपियां कौन थीं?

पदम् पुराण उत्तर खंड अध्याय २४५ कलकत्ता से प्रकाशित में लिखा है कि रामचंद्र जी दंडक-अरण्य वन में जब पहुचे तो उनके सुंदर स्वरुप को देखकर वहां के निवासी सारे ऋषि मुनि उनसे भोग करने की इच्छा करने लगे। उन सारे ऋषिओं ने द्वापर के अंत में गोपियों के रूप में जन्म लिया और रामचंद्र जी कृष्ण बने तब उन गोपियों के साथ कृष्ण ने भोग किया। इससे उन गोपियों की मोक्ष हो गई। वर्ना अन्य प्रकार से उनकी संसार रुपी भवसागर से मुक्ति कभी न होती। क्या यह दृष्टान्त बुद्धि से स्वीकार किया जा सकता है?

श्री कृष्ण का वास्तविक रूप

आनंदमठ एवं वन्दे मातरम के रचियता बंकिम चन्द्र चटर्जी जिन्होंने ३६ वर्ष तक महाभारत पर अनुसंधान कर श्री कृष्ण पर उत्तम ग्रन्थ लिखा ने कहा है कि महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण की केवल एक ही पत्नी थी- रुक्मणी। उनकी २ या ३ या १६००० पत्नियाँ होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। विवाह के पश्चात श्री कृष्ण रुक्मणी के साथ बदरिका आश्रम चले गए और १२ वर्ष तक तप एवं ब्रह्मचर्य का पालन करने के पश्चात उनका एक पुत्र हुआ जिसका नाम प्रद्युम्न था। यह श्री कृष्ण के चरित्र के साथ अन्याय है कि उनका नाम १६००० महिलाओं के साथ जोड़ा जाता है।

महाभारत के श्री कृष्ण जैसा अलौकिक पुरुष, जिसने कभी कोई पाप नहीं किया और जिस जैसा इस पूरी पृथ्वी पर कभी-कभी जन्म लेता है। स्वामी दयानद जी सत्यार्थ प्रकाश में वहीं कथन लिखते हैं जैसा बंकिम चन्द्र चटर्जी ने कहा है। पांडवों द्वारा जब राजसूय यज्ञ किया गया तो श्री कृष्ण को यज्ञ का सर्वप्रथम अर्घ प्रदान करने के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त समझा गया जबकि वहां पर अनेक ऋषि मुनि, साधू महात्मा आदि उपस्थित थे। वहीं श्री कृष्ण की श्रेष्ठता समझें कि उन्होंने सभी आगंतुक अतिथियों के धूल भरे पैर धोने का कार्य भार लिया। श्री कृष्ण को सबसे बड़ा कूटनीतिज्ञ भी इसीलिए कहा जाता है क्यूंकि उन्होंने बिना हथियार उठाये न केवल दुष्ट कौरव सेना का नाश कर दिया बल्कि धर्म की राह पर चल रहे पांडवों को विजय भी दिलवाई।

ऐसे महान व्यक्तित्व पर चोर, लम्पट, रणछोर, व्यभिचारी, चरित्रहीन, कुब्जा से समागम करने वाला आदि कहना अन्याय नहीं तो और क्या है और इस सभी मिथ्या बातों का श्रेय पुराणों को जाता है।

इसलिए महान श्री कृष्ण पर कोई व्यर्थ का आक्षेप न लगायें। साधारण जनों को श्री कृष्ण के असली व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने के लिए पुराणों का बहिष्कार और वेदों का प्रचार अति आवश्यक है। ■

हिंदुत्व की मूल भावना पर प्रहार

राजीव चौधरी

'जो लोग ये कहते हैं कि राम मंदिर का निर्माण किया तो उसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे, हम उनकी गर्दन काटने का इंतजार कर रहे हैं.' यह बयान भाजपा विधायक राजा सिंह का उस समय आया जब देश की मीडिया अलवर में कथित गौरक्षक द्वारा एक आदमी की हत्या को भाजपा की विचारधारा से जोड़ने की जी तोड़ कोशिश में लगी है. अभी तक ऐसे बयानों के लिए साध्वी प्राची, साक्षी महाराज आदि कुछ लोग ही जाने जाते थे लेकिन उत्तर प्रदेश में मिले बम्पर बहुमत के बाद हिदुत्व के नाम पर एक बड़ी फौज हिंसात्मक बयानों के लिए खड़ी हो गयी है. पिछले महीने ही खतौली से बीजेपी विधायक विक्रम सैनी ने गाय प्रेम में कुछ ज्यादा ही उत्साहित होकर बड़े बोल दिये थे कि गौहत्या करने वालों के हाथ-पांव तुड़वा दूंगा. मुझे नहीं पता इनके घर कितनी गाय हैं, लेकिन इनका गौप्रेम इनके बयानों के बाद मीडिया के लिए चर्चा का विषय जरूर बन गया था.

मैं धर्म या गौमाता के खिलाफ नहीं, लेकिन इस मानसिकता के जरूर खिलाफ हूँ, जो आज सिर और हाथ-पैर गिन रही है. हाल ही में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता का सिर कलम करने के फरमान का वीडियो सोशल मीडिया पर छाया है. अभी तक इस तरह के कार्यों और बयानों के लिए एक धर्म विशेष का ही नाम आता था. अक्सर उनके धर्म गुरु धर्म की कमजोरी का राग अलाप कर इस तरह के हिंसात्मक कार्यों के लिए लोगो को उकसाने का कार्य करते नजर आते थे.

लेकिन पिछले कुछ समय से हिंदुत्व के नाम पर एक ऐसी ही भीड़ तैयार हो रही है और इनके गुस्से का शिकार कोई भी हो सकता है. दादरी में अखलाक की हत्या के बाद मेरा मत था कि यह एक अकेली घटना है, जिसे कुछ लोगों द्वारा अंजाम दिया गया, लेकिन इसके बाद गुजरात ऊना में गौरक्षा के नाम पर कुछ दलित युवकों की पिटाई का मामला सामने आने के बाद पूरे देश में बवाल मच गया था, जिसके बाद प्रधानमंत्री की तक को तथाकथित गौरक्षकों को चेताना पडा था कि गुजरात में गौरक्षा के नाम पर जो किया, वह पूरी तरह से हिंदुत्व की मूल भावना पर प्रहार था.

मैं अक्सर सोशल मीडिया पर हर रोज देखता हूँ कि नये-नये सोशल मीडियाबाज जब तक दो चार पोस्ट हिंदुत्व पर न डाल लें, उनको तस्सली नहीं मिलती. कोई गौरक्षा के नाम पर, तो कोई हिंदुत्व की रक्षा के नाम पर अपना पूरा समय सोशल मीडिया पर दे रहा है. सालों पहले लोग कबीलों में बंटे थे वो लोग अपनी कबीलाई संस्कृति को बचाने के लिए हिंसा का सहारा ही श्रेष्ठ समझते थे, पर एक बार फिर कुछ ऐसा ही देखने को मिल रहा है. आज सोशल मीडिया भी एक तरह से कबीलों में बंटा नजर आता है.

लोग अपने जैसे विचारों को पसंद करते हैं, अन्य कोई भी सद्भावना, सहिष्णुता या सामाजिक समरसता से भरा विचार उन्हें देश या धर्म के विपरीत लगने लगा है. राजा सिंह हो या विक्रम सैनी इनका बयान ऐसे लोगों की विचारधारा को मजबूत करने का कार्य करता है. हिंदुत्व के नाम पर गौरक्षा की पहरेदारी के नाम पर हो रही गुंडई और हिंसा को अब रोजमर्रा की रीत बनाने की कोशिश की जा रही है.

अभी तक इन सब हिंसा के मामलों का उदाहरण एक इस्लामिक धड़ा था. राम के नाम पर जो बयान राजा सिंह ने दिया अब से पहले ऐसे बयान इस्लामिक चरमपंथी दिया करते थे. चाहे उसमें डेनमार्क के पत्रकार पर नबी के चित्र का मामला हो या फ्रांस की पत्रिका चार्ली हेब्दो पर हुआ हमला या प्रधानमंत्री की गर्दन काटने के हिन्दुस्तानी फतवेत्र यह सब उनकी अपनी रीत का हिस्सा थे, लेकिन वर्तमान में उभरता हिंदुत्व उसी ओर जाता दिखाई दे रहा है.

ऐसे बयान देने वाले नेताओं या धर्मगुरुओं को सोचना चाहिए कि आज हम कबीलों या राज्यों की धार्मिक सत्ता का हिस्सा नहीं हैं. हम एक संवैधानिक राष्ट्र का हिस्सा हैं, जिसके अन्दर सब मत-मतांतर रहते हैं. यदि आप ही संविधान की धज्जियां उड़ायेंगे तो बाकी क्या करेंगे? ऊना, दादरी या अलवर? नहीं यह सब हिंदुत्व का हिस्सा नहीं है. हिंदुत्व की सर्वप्रथम परिभाषा वीर सावरकर ने देते हुए कहा था कि हिन्दुत्व शब्द केवल धार्मिक और आध्यात्मिक इतिहास को ही अभिव्यक्त नहीं करता, अपितु हिन्दू के विभिन्न जातिगत सोपान पर मौजूद लोगों के सभी मत-मतांतरण को मानने वाले और उनकी धारणाएं भी इसके अंतर्गत आती हैं.

लेकिन क्या हम नहीं जानते कि व्यवहार में धर्म ठीक इसके उल्टा काम कर रहा है? नई दिल्ली से लेकर सीरिया (दमिश्क) तक धर्म के नाम पर लोग कहां नहीं मारे गए हैं? पहले भी मारे गए और आज भी मारे जा रहे हैं. कहीं चर्च पर आत्मघाती हमला, तो कहीं शिया-सुन्नी के नाम पर मस्जिद पर हमला. कुछ दिन पहले ही तुर्की में एक चर्च को उड़ा दिया गया. क्या धर्म मात्र कुछ लोगों के निजी सुकून का जरिया बनकर रह गया है? खुद की राजनैतिक या धार्मिक हैसियत बचाने के लिए लोगों के समूह को संगठित कर एक-एक सिर को गिन रहे है. क्या यही धर्म की परिभाषा रह गयी है कि हमारे पाले से कोई एक कम न हो जाए या उनके पाले में एक ज्यादा न हो जाए?

आखिर क्यों आज एकता के लिए नेताओं या धर्म गुरुओं की भाषा हिंसक हो गयी है? क्या हमें यह पसंद है या यह सब हमारी पसंद का हिस्सा बनाया जा रहा है? आखिर क्यों आज ईश्वर या अल्लाह की प्रप्ति का साधन साधना के बजाय बम-बन्दूक बनाये जा रहे हैं? आज सवाल यह है कि गौरक्षा सिर्फ लाठी या बन्दूक से होगी या फिर घर-घर उसके पालन पोषण से होगी? कितने हिन्दुत्ववादियों के घर में गाय है? क्या ये आंकड़े भी सार्वजनिक नहीं होने चाहिए?

आज चाहे इस्लाम हो या हिन्दू, यह देखना होगा कि इनके नाम पर कोई हिंसा की सोच को बढ़ावा तो नहीं दे रहा है? अगर हम चुप रहे, तो अपने-अपने धर्मों का हम इतना बुरा करेंगे, जितना हम इन धर्मों को छोड़कर नास्तिक होकर भी नहीं कर पायेंगे! ■

मुँह से दुर्गंध आना

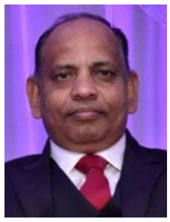

विजय कुमार सिंघल

कई लोगों के मुँह से बहुत दुर्गंध आती है, जो उनके निकट बैठने वाले व्यक्तियों को भी ज्ञात हो जाती है। सुबह सोकर उठने पर ऐसे लोगों का मुँह चिपचिपा रहता है और बदबूदार होता है। कई बार मंजन और पेस्ट करने पर भी यह दुर्गंध दूर नहीं होती।

मुँह से दुर्गंध आने का मुख्य कारण पायरिया होता है। यह दाँतों का वात रोग है जिसमें मसूड़ों से खून या पीव निकलता रहता है और मुँह में जम जाता है। कभी कभी मसूड़े फूल भी जाते हैं और दर्द करते हैं। कई बार उनमें गर्म या ठंडा पानी लगने पर भी बहुत दर्द होता है।

इसकी चिकित्सा कई स्तरों पर करनी होती है। सबसे पहले तो यह सुनिश्चित करें कि पेट हमेशा साफ रहे। इसके लिए पेडू पर मिट्टी की पट्टी और एनीमा का उपयोग सप्ताह में एक बार करना चाहिए। यदि इसकी व्यवस्था न हो सके, तो शौच के बाद पेडू पर ठंडे पानी की पट्टी रखें और फिर तेज चाल से टहलें।

पेट साफ रखने के लिए रोज खूब पानी भी पीना चाहिए। सात्विक भोजन और नियमित व्यायाम अति आवश्यक है। सप्ताह में एक दिन का उपवास या रसाहार इसमें रामवाण होता है।

दूसरी बात, दाँतों से खून न निकले इसके लिए टूथब्रश का उपयोग बन्द करके कोई आयुर्वेदिक मंजन या दातुन करनी चाहिए। महीन पिसा हुआ सेंधा नमक और सरसों के तेल का पेस्ट सबसे अच्छा रहता है। इससे बादी का जो खून मसूड़ों में भर गया होगा, वह एक बार में निकल जाता है। मंजन के बाद गीली उँगली से दातों और मसूड़ों की मालिश भी करनी चाहिए।

मुख की दुर्गंध बाहर न आये और पास बैठे व्यक्तियों को असुविधा न हो, इसके लिए जाडों में लौंग (लवंग) तथा गर्मियों में छोटी इलायची चबाते रहना चाहिए। ऐसे लोगों को पान सुपाडी कभी नहीं खानी चाहिए। ■

दीवानों की दुनिया की ये कैसी रवायत है
उनसे ही मुहब्बत है उनसे ही शिकायत है
दोनों सूरतों में चैन ना आए मेरे दिल को
वो आएं तो हंगामा ना आएं तो कयामत है
मुझे मालूम है तुम साथ मेरे चल नहीं सकते
मिल जाते हो राहों में इतनी ही गनीमत है
बड़ी तकलीफ देते हैं नाज-ओ-अंदाज ये तेरे
अपनों पर सितमगारी गैरों पर इनायत है
तेरे चाहने वाले बहुत होंगे यहां लेकिन
दिल लेकर मुकर जाना
कैसी पर शराफत है
बिना तेरे भी यूँ तो
जिंदगी कट जाएगी अपनी
हमारा दिल ना संभलेगा
मगर ये भी हकीकत है

-- भरत मल्होत्रा

ये मेरा दिल है, तेरे शहर का बाजार नहीं
प्यार करता है फकत, प्यार का व्यापार नहीं
नातवां हूँ मैं मगर इतना भी लाचार नहीं
इश्क का मेरे मुकाबिल कोई बीमार नहीं
भुला दे करके जो वादा मैं वो किर्दार नहीं
तेरा मुजरिम ही सही पर मैं गुनहगार नहीं
एक मुद्दत से तुझे दिल में लिए बैठा हूँ
फिर भी क्यूँ तेरी मोहब्बत का मैं हकदार नहीं
फिर से इक बार इन आँखों को रौशनी दे दे
बड़ी मुद्दत से हुआ है, तेरा दीदार नहीं
फैसला जो भी हो तेरा वो बता दे मुझको
मुझसे अब और तेरा
होगा इंतजार नहीं
यूँ सताता है इसे तेरी
जुदाई का अलम
'भान' का इस दिले-
पागल पे अख्तियार नहीं

-- उदय भान पाण्डेय 'भान'

बिन तेरे जिंदगी में पहरेदार भी नहीं
दुनिया में किसी से मुझे प्यार भी नहीं
बेइश्क जिंदगी नहीं आसान है यहाँ
इस मर्ज की दवा मिले आसार भी नहीं
कटती नहीं निशा तेरे दीदार के बिना
दीदार और का कभी स्वीकार भी नहीं
अब काटनी है उम्र खुशी हो या गम सनम
तू याद में बसेगी तो दुश्वार भी नहीं
अनजान देश में कभी तुम यदि उदास हो
सन्देश किस तरह मिले अखबार भी नहीं
दीवानगी 'प्रसाद' पे वहशत की हद हुई
अब वेदना का कोई भी आजार भी नहीं
दिल से अगर कभी मिलता नहीं है दिल
समझौता मायने नहीं तकरार भी नहीं
इनकी कला बखान करूँ क्या खुदा बता
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

-- कालीपद 'प्रसाद'

आपका जो भी खास होता है
दूर होकर भी पास होता है
वो ही बस वो ही याद आता है
जब कभी दिल उदास होता है
उसकी आँखों में झाँक लेता हूँ
जब भी खाली गिलास होता है
वो ये कहता है प्यार का मतलब-
'बुझ न पाये वो प्यास' होता है
मिल ही जाती है कोई पारो भी
कोई जब देवदास होता है
आँकिये मत लिबास से उसको
आदमी क्या लिबास होता है

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

वो समंदर है तो होने दीजिए
सीप ही काफी है मोती के लिए
इन हवाओं का भरोसा है कोई
रूख दिशाओं का किधर है देखिये
छोड़िये माजी के सब रस्मो रिवाज
वक्त के हमराह चलना सीखिए
कौन पीतल और सोना कौन है
गर न वाकिफ जौहरी फिर किसलिए
मत गलत तालीम दो बच्चों को इन
मत सिखाओ, झूठ की जय बोलिए
जंगलों में रोशनी करने चले
जुगनुओं का हौसला भी देखिए

-- डॉ डी.एम. मिश्र

तू मेरे सहारे, मैं तेरे सहारे
न तुम थे हमारे, न हम थे तुम्हारे
सितम ढाके मुझको रुलाओ न जालिम
कि बुझ जाते हैं आँसुओं से शरारे
समुंदर की गहराई क्या उनको मालुम
जो चलते हैं बचकर किनारे किनारे
जिन्हें पढ़ने-लिखने को भेजा गया था
वतन बाँटने को, लगाते हैं नारे
खिलाने को रोटी बदन बेचती हूँ
कहाँ से मैं लाऊँ खिलौने तुम्हारे
खुदाया मेरे सिर्फ इतना करम कर
मुसीबत पड़े 'धर्म' हिम्मत न हारे

-- धर्म पाण्डेय

सुविधा की डोरी पर लटके हमने रिश्ते देखे हैं
सम्बंधों की धूप में हमने लोग झुलसते देखे हैं
भाई-बहिन माँ-बाप सभी इस घेरे में आते हैं पर
लक्ष्मण रेखा से बाहर कुछ पाँव निकलते देखे हैं
रिश्ते चुभते हैं चुभने दो बिल्कुल मत प्रतिरोध करो
आग में चाहत की मैंने कुछ फूल महकते देखे हैं
दोषी केवल व्यक्ति नहीं अपराधी वक्त भी होता है
अपनी ही किस्मत से हमने
लोग झगड़ते देखे हैं
शिकवा-गिला कभी न करना,
आँसू व्यर्थ बहाना मत
सच की आँख में झूठे दरपन
'शान्त' चटखते देखे हैं

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

कभी गर्दिशों से दोस्ती कभी गम से याराना हुआ
चार पल की जिन्दगी का ऐसे कट जाना हुआ
इस आस में बीती उमर कोई हमें अपना कहे
आज के इस दौर में ये दिल भी बेगाना हुआ
जिस रोज से देखा उन्हें मिलने लगी मेरी नजर
आँखों से मय पीने लगे मानो कि मयखाना हुआ
इस कदर अन्जान हैं हम आज अपने हाल से
मिलकर के बोला आइना
ये शख्स दीवाना हुआ
ढल नहीं जाते हैं लब्ज
ऐसे रचना में कभी
गीत उनसे मिला, कभी,
गजल का पाना हुआ

-- मदन मोहन सक्सेना

जब कोई मुझको बनाता है मजा आता है
बात अपनी वो छुपाता है मजा आता है
हमने विश्वास किया शोख पे खुद से ज्यादा
अपनी चतुराई दिखाता है मजा आता है
चेहरा मासूम ना करता है हकीकत उसकी
जब भी वो नाज उठाता है मजा आता है
सहज भोलापन गहनें सदा रहे अपने
चमक उनकी जो चुराता है मजा आता है
बाल खोपड़ी के जो सफेद हो गये सारे
काले जब कोई बनाता
है मजा आता है
पैसा भगवान नहीं 'व्यग्र'
मगर कम भी नहीं
जाल अपना वो बिछाता
है मजा आता है

-- विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

गए तुम कहाँ छड़ निशानी लिखेंगे
बचपना बिरह की कहानी लिखेंगे
अदाएं उभर कर बढ़ाती उम्मीदें
जिसे आज अपनी जुबानी लिखेंगे
सुबह नित उठाती जगाती हँसाती
जतन मात करती सुहानी लिखेंगे
न कोयल थी काली न भौंरा दिवाना
चहकती चिरैया उड़ानी लिखेंगे
उड़ी चंहक गौतम फिर-फिर न आए
तितलियां पकड़ना विरानी लिखेंगे

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

राहें जुदा हुई जो अब गुजर हो कैसे
ताउम्र रहे तड़पते अब बसर हो कैसे
तुम बिन जीने की आदत-सी हो गई है
पाया तुम्हे सामने अब नजर हो कैसे
मुलाकातों का अब दौर न शुरु हो यूं
यादों के पन्ने खोल के सहर हो कैसे
रहनुमा न रहे बनके तुम तो बता दो
ख्वाबों में भी तुम्हारा वो शहर हो कैसे
'कामनी' ये ख्वाहिशें यूंही थमी रहने दो
इनको संग लेकर अब खबर हो कैसे

-- कामनी गुप्ता

(दूसरी किस्त)

मेवे वाला

मनोज कुमार शिव

अगली सुबह जब यशोधा गौशाला में गोबर हटा रही थी तो आँगन से किसी की आवाज आई- 'अम्मा ओ अम्मा!' बाहर निकली तो देखा बिरजू था। सर पर एक बड़ा संदूक, कंधे पर एक झोला और साथ में दो और लड़के, उनके हाथों में भी सामान था। संदूक को साथियों की मदद से जमीन पर रखते हुए बिरजू बोला- 'अम्मा ! ये हैं गोलू और पिंकू, मेरे ही गांव से हैं।' दोनों लड़कों ने यशोदा को नमस्ते की और बिरजू से कुछ बात करके चले गए।

यशोधा ने आंगन के कोने में बनी छोटी हौदी से नल खोलकर अपने गोबर वाले हाथ साफ किए। हौद के साथ वाले कमरे का ताला खोलते हुए बोली, 'यह होगा तेरा कमरा बिरजू, कमरा एकदम बढ़िया है, दीवारों पर पिछली दिवाली को ही चूना किया है, रोशनदान भी है हवा के लिए, बस तू सफाई का ध्यान रखना और दीवारें गंदी मत करना।'

दरवाजा खुल चुका था। बिरजू ने कमरे में एक नजर दौड़ाई। कमरा उसे अच्छा लगा। उसे यशोधा की सारी शर्तें भी मंजूर थी। बिरजू सामान को कमरे में ले आया। एक थैला यशोधा भी ले आई। 'क्या लाया है बे इतना कुछ तू।' 'ज्यादा नहीं अम्मा! कुछ कपड़े हैं, थोड़े से बर्तन हैं, एक थैले में मेवा है, रुको मैं दिखाता हूं।' बिरजू ने झट से थैला खोला। उसमें छोटी-छोटी कपड़ों की पोटलियाँ थी, एक में बादाम, एक में किशमिश, एक में पिस्ता, एक में छुआरे, एक में मिश्री, बिरजू ने थोड़ा-थोड़ा हर पोटली से निकाला और यशोधा की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'लो अम्मा, खाकर तो देख, कैसा है।' यशोधा ने पहले तो थोड़ा इनकार किया मगर बिरजू के दोबारा कहने पर हथेली आगे बढ़ा ली। यशोधा सोचने लगी कि जिद्दी तो बहुत है बिरजू, बिल्कुल उसके मंगलू जैसा, नटखट भी बातूनी भी,। कैसे प्यार से कहता है- 'अम्मा...!' जैसे मैं ही उसकी अम्मा हूं,पर कितना सुकून मिलता है उससे अम्मा सुनने में, जैसे मंगलू ही लौट आया हो।

'कैसे लगे अम्मा मेरे मेवे?' बिरजू यशोधा को विचारों के समंदर से वापिस ले आया। 'बहुत अच्छे हैं बे' हल्की मुस्कान के साथ यशोधा बोली। 'कल सुबह से काम पर निकल जाऊंगा, दिनभर मेहनत करूंगा, ताकि चार पैसे कमा सकूं, बाकी लड़कों ने भी काम शुरु कर दिया है।' बिरजू ने सामान थैलों से निकालते हुए कहा। यशोधा ने भी सामान को लगाने में उसकी मदद की।

सर्दियां अब बढ़ने लगी थीं। सुबह जब सूरज सामने वाले पहाड़ पर से झांकने लगता तो विजयपुर में रौनक सी आ जाती थी वरना उस ठंडी सुबह में कोई बाहर नहीं निकलता। ऐसी ही एक सुबह यशोधा घर का काम निपटाकर गाय के लिए पत्ते लाने घासणी की ओर जाने लगी थी, 'अम्मा! मैं भी चलूंगा तेरे साथ पत्ते लाने।' यशोधा को जाते हुए देखकर बिरजू ने विनयपूर्ण ढंग से कहा। 'तुझे मेवा बेचने नहीं जाना क्या? रहने दे मैं खुद ले आऊंगी।' 'अभी इतनी धूप भी कहां खिली है अम्मा! जब खासी धूप आएगी तब चला जाऊंगा।'

यशोधा समझ गई थी कि बिरजू अपनी जिद्द पर अड़ गया है। 'चलो फिर' मुस्कुराते हुई यशोधा ने कहा। बिरजू के चेहरे की आभा बढ़ गई। दोनों घासणी की ओर बढ़ चले। यशोधा को बिरजू में अपने मंगलू की हर बात नजर आती थी। उसे तो यही लगता था कि जैसे कुल देवता ने बिरजू के भेष में मंगलू को ही उसे वापस लौटा दिया है। वह कौन सा मंदिर है अम्मा उस पहाड़ी पर? बिरजू ने पहाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा। 'वह हमारे कुलदेवता का मंदिर है।' यशोधा ने सर झुकाते लगभग दोनों हाथों को जोड़कर मंदिर की ओर देखते हुए कहा। बिरजू ने भी अम्मा को देखकर सर झुकाकर कुल देवता को प्रणाम किया। 'ये हमारी रक्षा करते हैं हमारी हर मनोकामना पूरी करते हैं और हमें खतरों से बचाते हैं।' यशोधा ने चलते-चलते कहा। 'अच्छा इतने कृपालु हैं ये देवता?' बिरजू ने पूछा।

बातें करते-करते दोनों कब घासणी पहुंच गए पता भी नहीं चला। यशोधा बिहूल के पेड़ पर चढ़कर पत्तियां निकालने लगी। बिरजू ने गिर रही पत्तियों के दो हल्के-हल्के बोझे बनाए। दोनों ने बोझे पीठ पर उठाए और घर की ओर चल दिए। जिस तरह समय आगे बढ़ता जा रहा था दोनों में आत्मीयता बढ़ने लगी थी। घर के बाकी कामों में भी बिरजू सुबह-शाम मदद कर दिया करता था। काम भी पूरी तत्परता से करता जैसे उसके अपने घर का काम हो। शाम को जब मेवा बेचकर थका हारा घर आता तो यशोधा उसके लिए अदरक वाली चाय बनाती, जिसे वह सुड़प-सुड़प कर पी जाता।

एक शाम रोज की तरह बिरजू फेरी लगाकर लौटा। चेहरा कुछ उदास लग रहा था। 'क्या हुआ बिरजूवा? आज कोई गाहक नहीं मिलया क्या?' बिरजू चुप रहा। हुआ क्या तुझे? तबीयत तो ठीक है ना तेरी? यशोधा ने चिंता जताते हुए पूछा। मन ही मन सोच रही थी कि कहीं गांव वालों ने तो नहीं डांट दिया इसे, या फिर प्रधान के लड़कों ने तो कोई शरारत नहीं करी इसके साथ। यशोधा को चिंता होने लगी थी।

'नहीं अम्मा, तबीयत तो ठीक है।' 'फिर इतना उदास क्यों है बे तू? पहले जैसा हंसता मुस्कराता भी तो नहीं है?' 'वो अम्मा...।' 'बोल क्या बोलना चाहता है।' यशोधा ने कारण जानने की उत्सुकता से कहा। 'वो अम्मा! गांव की एक महिला ने मुझे आपके बारे में बताया, उसने कहा कि आपका परिवार उत्तराखंड...' बिरजू बोलते-बोलते रूक गया। यशोधा के चेहरे पर दर्द उभर आया था, कोई हरकत नहीं, कोई शिकन नहीं। 'अम्मा मुझे बहुत बुरा लगा, बहुत दुख हुआ जानकर, सच में अम्मा!' बिरजू की आंखों में आंसू छलछलाने लगे थे। यशोधा उस घटना को याद करने लगी। 'मेरा मंगलू, मेरा परिवार...' कहते कहते यशोधा फफक-फफककर रोने लगी, 'अम्मा! रो मत अम्मा!! भगवान की मर्जी के आगे किसका जोर है, अम्मा देख मेरा भी तो कोई नहीं है दुनिया में, अनाथ हूं मैं अनाथ।' यूँ कहते ही बिरजू की आँखों से गंगा-जमुना बहने लगी।

'चुप कर बे बिरजूवा, मैं हूं ना तेरी अम्मा, अम्मा बोलता भी है और मुझे पराया भी समझता है तू, पगला कहीं का। यशोधा ने बिरजू को गले लगाते हुए कहा। बिरजू अब और जोर-जोर से रोने लगा। कुछ देर दोनों सुबकते रहे। एक दूसरे को ढाढ़स देते रहे। दोनों की आँखों से वर्षों का इकटठा दर्द रिसता रहा जिसे गंवाकर दोनों बहुत हल्का महसूस करने लगे थे।

अगली सुबह यशोधा ने गौशाला का काम निपटाया, चाय बनाई, दो गिलासों में डाली और ओबरे में बिरजू के पास आ गई, बिरजू, ओ बिरजू! उठ!! दरवाजा खटखटाते हुए यशोधा ने कहा, जब थोड़ा और दरवाजा खटखटाया तो पाया कि बिरजू अंदर नहीं था। कहां चला गया यह लड़का सुबह सुबह, मेवों की पोटलियाँ भी अभी यहीं पड़ी हैं। यशोधा ने आंगन में खड़े होकर इधर उधर देखा तो वहां भी बिरजू नहीं था।

आँगन में एक कोने के पास जाकर जब नजर घर के सामने वाली पहाड़ी पर पड़ी, सूर्य उदय होने वाला था। पहाड़ी पर कुल देवता का मंदिर चमक उठा था, जय सूरज देवा, नमस्कारी तेरे नाम की, जय कुलदेवा!

यशोधा ने सर झुका कर नमस्कार की, कुल देवता के मंदिर को निहार रही थी कि उसी रास्ते किसी को गांव की तरफ आते देखा, 'अरे! यह तो बिरजू है, सुबह सुबह इतनी ठंड में कहाँ घूम रहा है ये पगला!' यशोधा ने खुद से बात करते हुए कहा। बिरजू बिजली की तेजी से पहाड़ी से नीचे उतर रहा था। कुछ समय बाद वह आँगन में पहुंच गया। 'कहां गया था तू? देख तेरे लिए चाय लाई थी, अब तो ठंडी भी होने लगी है!'

'बस अम्मा मंदिर तक गया था, बहुत अच्छा मंदिर है। वो आपने कहा था ना कि देवता बड़ा दयालु हैं सबकी कामनाएं पूरी करता है तो मैं देवता से कुछ मांगने गया था।' यशोधा ने बिरजू की बातों में छुपी मासूमियत देख कर मुस्कुराई। 'अच्छा, तो सुन ली क्या कुलदेवता ने तेरी फरियाद?' यशोदा ने कहा।

'पता नहीं, बाद में ही पता चलेगा।' 'वैसे क्या मांगा तूने आज कुलदेव से सुबह-सुबह ठंड में जाकर?' यशोधा ने चाय का गिलास बिरजू को थमाते हुए कहा। दोनों आंगन की दिवाल पर बैठ गए थे। 'वो मैंने देवता को कहा...कि आपको मंगलू और उसके बाबू जी को वापिस लौटा दे।'

(अगले अंक में जारी)

पृष्ठ २५ की पहेलियों के उत्तर-

(१) सरसों तेल (२) तबला (३) दूध (४) माचिस (५) पहेली

पत्रकारिता के जज्बे को प्रणाम!

जवाहर लाल सिंह

दर्शकों को रोजाना देश-दुनिया की खबरों से वाकिफ कराने वाली छत्तीसगढ़ के एक प्राइवेट न्यूज चैनल की २८ वर्षीय एंकर की जिंदगी में उस समय दुखों का पहाड़ टूट पड़ा जब उन्हें अपने पति की एक सड़क हादसे में दर्दनाक मौत की खबर मिली। उससे भी दुखद बात यह रही कि इस हादसे की ब्रेकिंग न्यूज खुद उन्हें ही पढ़नी पड़ी। एंकर के इस अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा की लोग भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं और उनके साहस को सलाम कर रहे हैं। उनके साथ बीती इस दर्दनाक घटना को लेकर लोग दुःख भी जता रहे हैं। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह ने भी सुप्रीत कौर के पति हर्षद गावड़े के निधन पर दुख जताया है।

उक्त मामला ७ अप्रेल की सुबह का है, जब प्राइवेट न्यूज चैनल IBC-२४ पर लाइव न्यूज बुलेटिन के प्रसारण के दौरान न्यूज एंकर सुप्रीत कौर खबरें पढ़ रही थीं। इसी दौरान एक सड़क दुर्घटना की ब्रेकिंग न्यूज आई। एंकर सुप्रीत कौर को रिपोर्टर से बातचीत के दौरान ही अंदेशा हो गया कि इस हादसे में मरने वालों में उनके पति भी शामिल हैं। इस बेहद मुश्किल वक्त में भी सुप्रीत ने खुद को संभाले रखा और वे न्यूज बुलेटिन पढ़ती रहीं। सुप्रीत ने रिपोर्टर से बात करते हुए दर्शकों को हादसे की विस्तृत जानकारी भी दी।

दरअसल, राष्ट्रीय राजमार्ग-३५३ पर लहरौद के पास एक ट्रक और रेन डस्टर के बीच टक्कर हुई थी। इस हादसे में कार में सवार पांच में से तीन लोगों की मौत हो गई। मृतकों में एंकर के पति भी शामिल थे। हादसे में घायल अन्य दो लोगों को उपचार के लिए पिथौरा स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया।

दर्शकों को हादसे की पूरी जानकारी मुहैया कराने के बाद भी सुप्रीत ने पूरा न्यूज बुलेटिन पढ़ा। इसके बाद वह स्टूडियो से बाहर आईं और फूट-फूटकर रोने लगीं और दुर्घटनास्थल के लिए रवाना हो गईं।

सुप्रीत के एक सहकर्मी ने कहा, 'सुप्रीत बहुत बहादुर हैं। पूरी टीम को उनके काम पर गर्व है, लेकिन आज जो हुआ उससे हम सब स्तब्ध हैं'। उनके एक और सहकर्मी ने जानकारी देते हुए बताया कि सुप्रीत को ब्रेकिंग न्यूज पढ़ते ही यह अंदेशा हो गया था कि यह दुर्घटना उनके पति के साथ हुई है। बुलेटिन खत्म करने के बाद उन्होंने स्टूडियो से बाहर निकलते ही अपने रिश्तेदारों को फोन मिलाने शुरू कर दिए थे।' उसने आगे बताया कि 'हम सभी को उनके पति की मौत की खबर पहले ही मिल चुकी थी, लेकिन हममें से किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उन्हें यह बता सकें।'

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह ने ट्वीट कर सुप्रीत कौर के जज्बे को सलाम किया, जिन्होंने इस दुखद घड़ी में भी साहस के साथ अपना कर्तव्य निभाया। ट्विटर पर अन्य लोग भी अपनी प्रतिक्रिया में उनके साहस को सलाम कर रहे हैं और उनके पति की मृत्यु पर शोक जाहिर रहे हैं।

सुप्रीत पिछले ६ साल से इस चैनल में न्यूज एंकर के तौर पर कार्यरत हैं। वह मूल रूप से भिलाई की रहने वाली हैं। सालभर पहले ही उनकी शादी हर्षद गावड़े से हुई थी।

पत्रकार अमिताभ श्रीवास्तव लिखते हैं, "पत्रकारों को गाली देने वालों को इस महिला एंकर सुप्रीत कौर की कहानी से शायद कुछ सबक मिले, जिन्होंने पेशेवर जिम्मेदारी की मिसाल कायम करते हुए एक सड़क हादसे में अपने पति की मौत की खबर को भी अपनी भावनाओं पर काबू पाते हुए सहज ढंग से पढ़ा।"

रोहित ने फेसबुक पर लिखा, "हम सुप्रीत कौर के जज्बे को सलाम करते हैं। भगवान ऐसे वक्त में सुप्रीत को शक्ति दे।"

सुप्रीत कौर के अपने पेशे के प्रति जज्बे को जितनी प्रशंसा की जाय कम है!

सुप्रीत कौर के साथ जरा दूसरी महिला पत्रकारों की भी चर्चा कर लें।

अंजना ओम कश्यप जो वर्तमान में आजतक की एंकर हैं काफी बोल्ड और साहसी हैं। लाइव रिपोर्टिंग के साथ-साथ भीड़-भाड़ पर नियंत्रण रखते हुए कई बार परेशानियों से गुजरती हैं पर हिम्मत नहीं हारती। उन्होंने महिला और पुरुष में भेदभाव की लड़ाई अपने घर से ही और बचपन से ही लड़ती आई है। इसका खुलासा उन्होंने हाल ही में एक साक्षात्कार में किया था। मनपसंद खबर न बताने पर इन्हें सोशल मीडिया में भी कई बार अभद्रता का शिकार होना पड़ता है। 'आज तक' के 'थर्ड डिग्री' कार्यक्रम में भी काफी बोल्ड अंदाज में कड़े सवाल करती थीं। कश्मीर की बर्फबारी में भी इन्हें मैंने फिल्मी अंदाज में लाइव रिपोर्टिंग करते हुए देखा है। समाजवादी पार्टी की हार के बाद जब अंजना शिवपाल यादव के पास हाल-चाल पूछने गयी थी तब शिवपाल यादव के भद्दे कमेन्ट को भी बखूबी बर्दाश्त कर गयी थी।

अंजना आरा बिहार में जन्मी और रांची में पढ़ी-बढी है। इनके अलावा श्वेता सिंह तथा अन्य कई महिला रिपोर्टर आजतक चैनेल पर हैं जो हर क्षेत्र में अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाती हैं और दर्शकों के दिल में जगह बना पाती हैं। श्वेता सिंह का एक कार्यक्रम ईश्वर एक खोज बहुत ही लोकप्रिय हुआ है। यह भी पटना बिहार की हैं।

एनडीटीवी छोड़ चुकी बरखा दत्त काफी चर्चित नाम है, जो कई बार विवादों में भी घिरी हैं, पर रिपोर्टिंग और लाइव कवरेज का जज्बा काबिले तारीफ ही कहा जायेगा। कारगिल युद्ध के समय सैनिक बंकर से रिपोर्टिंग का साहसिक प्रयास एक यादगार है। इसके अलावा अन्य विषम परिस्थितियों की कवरेज से भी वह नहीं घबरातीं। एनडीटीवी की ही सिक्ता देव और निधि कुलपति की रिपोर्टिंग का अंदाज आकर्षित करता है।

एबीपी न्यूज में भी काफी महिला रिपोर्टर हैं, जो हर परिस्थिति में एंकरिंग और लाइव रिपोर्टिंग करती हैं। कुछ नाम जो मुझे याद आ रहे हैं वे हैं नेहा पन्त, रूमाना, विनीता जादव, सरोज सिंह, चित्रा त्रिपाठी आदि ऐसी हैं जो सभी सम-विषम परिस्थितियों में रिपोर्टिंग करती हैं, उन्हें अक्सर मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

आपलोगों को याद होगा अगस्त २०१३ का मामला जब मुंबई के पास बंद पड़े शक्ति मिल में रिपोर्टिंग के दौरान एक महिला रिपोर्टर, जिसका सामूहिक बलात्कार हुआ था। और भी कई ऐसे मामले हैं जहाँ महिला पत्रकारों को मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, तो कहीं पर पेशे से जुड़े अनावश्यक समझौते करने पड़ते हैं।

महिला पत्रकारों की श्रेणी में और भी कई नाम है जिनका नाम हम सभी आदर के साथ लेते हैं वे हैं मृणाल पाण्डे, तवलीन सिंह, शोभा डे, नीरजा चौधरी, आदि आदि!

महिलाओं के बारे में ऐसी धारणा है कि वे मेहनती और सहनशील होती हैं, पुरुषों के साथ महिलाओं से भी खुलकर बात कर सच निकलवा लेती हैं। ज्यादातर मामलों में यह भ्रष्ट नहीं होतीं। (अपवाद हर जगह होते हैं)

सरकार और समाज को चाहिए कि पत्रकारों को सुरक्षा प्रदान करें। उन्हें सच कहने से न रोकें क्योंकि वही लोग लोकतंत्र के चौथे खम्भे हैं जो सरकार के साथ साथ विरोधियों को भी कटघरे में खड़ा करते हैं। महिला सुरक्षा की बात आज हर जगह हो हो रही हैं, उन्हें सुरक्षित अपना काम करने दें। उनके सामने अपनी परेशानियाँ खुल कर रक्खें, ताकि वे हमारी आपकी बात को सरकार और जनता तक पहुंचा सकें। लोकतंत्र में इनकी अपनी अलग महत्ता है और इनका सम्मान करना हम सबका कर्तव्य है।

यह भी ख्याल रखना चाहिए कि वे भी हमारी आप की तरह मनुष्य हैं जिनकी अपनी भावनाएं और विचार होते हैं, उनके भी अपने दुःख सुख होते हैं। हर परिस्थिति में वे अपना काम करते हैं।

मैंने कई बार कहा है रिपोर्टिंग का काम बहुत कठिन है। हर बाढ़, तूफान, सूखा, गर्मी, आदि प्राकृतिक विपदाओं के साथ मानव जनित दुर्घटनाओं का भी लाइव रिपोर्टिंग करते/करती हैं।

अभी हाल ही में रामनवमी का त्योहार बड़े उत्साह और उल्लास के साथ जमशेदपुर में भी मनाया गया। आमलोगों को थोड़ी परेशानी अवश्य हुई पर ये पत्रकार सारे करतब/करिश्मे को कवर करते रहे और रिपोर्ट अखबारों और टीवी में देते रहे। एक बार मन से उन्हें याद ही कर लें।

बीती जा रही शाम सुहानी
एक तेरे आने की आस दिल में लगी
पलकों पे सज रही ख्वाब सुहानी
चांदनी रातों में शुरू होगी अपनी प्रेम कहानी
तुम चाँद और मैं चकोर तुम्हारी
न हो कोई दूरियां दरम्यान हमारी
नैन बिछाए देख रही राह तुम्हारी
आ जाओ अब जल्दी
बीती जा रही शाम सुहानी
दिख जाए गर तेरी परछाई
दौड़ी-भागी चली आउंगी
एक तुम्हे पाकर दिलवर/होगी इस दिल की तमन्ना पूरी

-- बबली सिन्हा

तुम्हें सोचती हूँ तो/गुम हो जाती हूँ
तेरी परछाई-सी बन जाती हूँ
गजलें लिखती हूँ/गीत गुनगुनाती हूँ
शब्दों से अठखेलियां कर, तुझे रिझाती हूँ
तेरे एहसासों की खुशबू से
हर पल महकाती हूँ
कितना लड़ती झगड़ती हूँ
फिर मैं तुमसे बेहद प्यार करती हूँ
नदी किनारे पाँव पानी में डाले
हाथों में हाथ लिये मन डूबता है
और तुम छपाक से पानी उछाल देते हो
चलो वापस चलो/ख्यालों से निकल हकीकत में आओ
प्यार मोहताज नहीं साथ का/बस गुरुर है दो दिलों का!!

-- डॉली अग्रवाल

कतरा-कतरा पिघल रही हैं/आहें तेरी यादों की
जी चाहे साँसों में भर लूँ/खुशबू तेरी चाहत की
टकरा कर लहरों सी लौटें/आहट तेरी पायल की
जी चाहे उर बीच सजा लूँ
धड़कन तेरी चाहत की
अँगारों की सेज पे सोई
अर्थी तेरी चाहत की
जी चाहे पलकों पे रख लूँ
ख्वाहिश तेरी चाहत की

-- डॉ रजनी अग्रवाल 'वाग्देवी रत्ना'

मिट्टी की दीवारों पर/न जाने क्या लिखती हो?
कभी जड़ती हो शब्द अनेक/कभी शब्द व्यंजना करती हो
तुम कैसी हो? तुम कौन हो?
परिचय अपना क्यों नहीं देती हो?
पर लगती हो माँ सी तुम/मुझे माँ की मूरत दिखती हो!
किन्तु अधर तुम्हारे क्यों काँप रहे?
क्यों डरी हुई सहमी सी
पर आँखों पर तेज जरूर
प्रबल ज्वाला जलती है
अपना अस्तित्व गूढ़ दिखा
क्योंकि तुम माँ की ममता
माँ सागर की खान हो!

-- अशोक बाबू माहौर

शिकायतों और उम्मीदों के बीच
कहीं एक पतला सा धागा है
बस इतनी ही है जिन्दगी
उम्मीदों की डोरियों से जब
दूसरों के मन बंध जाते हैं
तब शिकायतें सिरों पर टिकती नहीं
अक्सर फिसल जाया करती हैं
जिन्दगी की डोर पर से
बस ये ही तो है जिन्दगी!

-- अंशु प्रधान

ये नीर नहीं है आंसू हैं/जो इन आंखों से बहते हैं
क्या वही पुराने लोग हैं/जो सदियों से देश में रहते हैं
वो कहां गई ममता-माया?/जो इक पहचान हमारी थी
क्या दया-धर्म का मान घटा?/जिसने संस्कृति संवारी थी
आजाद हुए यह बात सही/पर बची गुलामी की कड़ियां
सोचा था सुमन हंसाएंगे/पाईं विस्फोटों की लड़ियां
क्या यही हमारी परम्परा?/क्यों दुःख पलनों में पलते हैं?
है यही हमारी व्यथा-कथा/आंसू नयनों के कहते हैं
अब ली करवट है भारत ने/और तनिक सजगता आई है
शायद कुछ कर दिखलाने की
कसमें अब सबने खाई हैं
है एक बार आशा जागी
शायद यह देश संभल जाए
जो मूल्य हमारे कुम्हलाए
वे पुनः सुमन-सम खिल पाएं

-- लीला तिवानी

मेरी जिंदगी की किताब के/ हर हरफ हर शिफहे पर
तुम्हारी खामोश मौजूदगी/मजबूत दरख्त सा भरोसा मेरा
तुम हो यहीं कहीं/जिस्म तो दूर है
पर रूहानी एहसास तुम्हारा
हर लम्हा हर पल हर शिमत
वहीं मुड़ा है उस पन्ने का कोना
जहाँ छूटी थी हमारी अधूरी कहानी
कैसा राब्ता है ये कि जब लिखती हूँ
सिर्फ तुम्हें लिखती हूँ/तुम्हें खबर तो है न?
कि जब पुरजोर कोशिशें भी हार जाती हैं
तुम्हें पाने की और/नतीजा शिफर रहता है
तब उम्मीद की लौ फड़फड़ाती है
मेरी जिंदगानी के स्याह पहलू को
रोशन करने को तुम्हारी बेइंतहा जरूरत है
तुम्हें खबर तो है न?

-- अंकिता कुलश्रेष्ठ

फूटकर ही बीज से वृक्ष उपजता है
फूटकर ही पहाड़ से झरना निकलता है
फूटता दर्द का सैलाब दिल में जब कहीं
शब्द सृजन कर कवि वाल्मीकि बनता है
माना फूट होती नहीं अच्छी परिवार में
फूट से ही अकबर को जयचंद मिलता है
फूट जाता जब कहीं पीपल मकां की ओट में
कौन देता जल वहाँ प्रभु कृपा फल दिखता है

-- अ कीर्तिवर्धन

खो न जाऊँ कहीं धुन्ध में
आ फिर से प्यार ओढ़कर आ
चांदनी रात में हो हाथ मेरे हाथ में
बनाकर तारों को घूंघट शर्म का
जिंदगी की सौगात लेकर आ
पलकें मगरूर हों फिर से इश्क में
आंखों में आंखें डालने का वो
भूला हुआ वक्त लेकर आ
जिद्दी हूँ या हूँ मैं वक्त की बहती धारा
नदिया को लौटाने का फिर से
वो हसीन नजारा लेकर आ
खो न जाऊं 'वर्षा' कहीं दीप की
जलती लौ की चमकती ज्वाला में
वो प्यार के सेतु दरिया से चुराकर ला

-- वर्षा वार्ष्णेय

कई आगें सुलग रही हैं सीने में/कौन सी बुझाऊँ?
कई दर्द छुपे सीने में/कौन कौन से दिखाऊँ
गमों में मन उलझा है/कौन सा गम भुलाऊँ?
तुमको भूलना चाहती हूँ
पर खुद को भूल गई
जख्म इतने गहरे हैं
मरहम भी बेकार हुआ
मैं भँवर में फंस गई हूँ
और मुझ में मन !

-- कुमारी अर्चना

ऐ परिन्दे! उड़, अभी तेरी उड़ान बाकी है
नजर ऊपर तो उठा, अभी पूरा आसमान बाकी है
निर्मल-नील-गगन में गुनगुनाता चल
नित्य-नए सफलता के गीत गाता चल
जाना है जहां तुझे, अभी वो मुकाम बाकी है
ओस की चादर को चीर के आगे निकल
वृष्टि और उष्ण-अनिल के सामने ना हो विफल
बनानी है जो तुझे, अभी वो पहचान बाकी है
तू भी इस परिन्दे के साथ चल
दुःखियों का सहारा बन,
इनके उत्कर्ष के लिए मचल
क्योंकि तेरा भी कुछ है,
जो अभी अरमान बाकी है

-- अनुराग कुमार

बरसात में छतरी का भी/एक अलग अंदाज है!
जानते हो क्यों?/बरसात में आते हैं जब
दो जिस्म एक छतरी के नीचे
तो पनपते हैं मधुर एहसास!
मिलती हैं नजरें एकाकार होकर
उतरते हैं दिल में आँखों के रस्ते से
स्नेहिल भाव जो निर्मलता लिये हुए
श्रीगणेश करते हैं पावन प्रेम का!
वह प्रेम जो जीवन है, खुशी है, उमंग है
और उज्ज्वल लौ है 'दीप' के सम!

-- डॉ प्रदीप कुमार 'दीप'

हसरत

आज नीरू और रमेश के लिए खास दिन था, वे बहुत खुश थे. आज उनकी शानदार नौकरी का पहला दिन था. उन्हें याद आ रहा था १७ साल पहले का वह दिन जब सुदेश आंटी से उनकी पहली बार मुलाकात हुई थी. आज सुदेश आंटी विदेश में हैं, फेसबुक पर उनसे सम्पर्क बराबर बना हुआ था. वे भी बहुत खुश थीं.

उस दिन भी पहली अप्रैल था. स्कूलों का समय बदल चुका था. सुदेश रोज से आधा घंटा पहले स्कूल जा रही थी. वह संस्कृत की अध्यापिका थी. उसके आगे-आगे स्कूल की यूनीफॉर्म पहने, पीठ पर बस्ता लेकर एक लड़का और एक लड़की स्कूल जा रहे थे. उसी समय सामने से एक लड़का और एक लड़की कूड़ा बीनने के लिए कई झोले लादे आ रहे थे और स्कूल जा रहे बच्चों को हसरत भरी निगाहों से देख रहे थे.

सुदेश की पैनी नजर से उनकी पढ़ाई की हसरत छिप न सकी. वह बच्चों को अपने पीछे आने का इशारा करके चलती रही. स्कूल के गेट पर उसने गार्ड से कहा- 'इन बच्चों के झोले अपने कमरे में रख दो और प्रार्थना के बाद मेरे पास एडमीशन रूम में ले आना.' 'जी मैडम!', कहकर गॉर्ड ने उनकी आज्ञा का पालन किया.

एडमीशन शुरु होने के उस पहले दिन नीरू और रमेश का ही एडमीशन सबसे पहले हुआ था. पढ़ने में होशियार वे बच्चे तभी से हर कक्षा में छात्रवृत्ति लेकर पढ़ते रहे, आगे बढ़ते रहे. एम.बी.ए के परिणाम में नीरू ने प्रथम स्थान हासिल किया था और रमेश ने द्वितीय. कैम्पस रिक्रूटमेंट के जरिए अच्छी-अच्छी कम्पनियों में दोनों की नौकरी लग गई थी.

दोनों सबसे पहले सुदेश आंटी को मिठाई खिलाना चाहते थे. उनके सिवाय उनका अपना था भी कौन? नाम भी उनका दिया हुआ था. मुन्नी और छोटू की जगह वे नीरू और रमेश हो गए थे. आज उनकी वह हसरत भी पूरी हो गई, सुदेश आंटी ने फेसबुक पर उनका संदेश पढ़ लिया था और उनकी खुशी में शामिल होने में असमर्थता जताई. आशीर्वाद तो उनके साथ था ही. सुदेश आंटी की सहृदयता रंग ला चुकी थी.

-- लीला तिवानी

घटिया

'ये आयोजक लोग भी सस्ती लोकप्रियता के लिए किसी को भी बुला लेते हैं।' सामने खड़े उपन्यासकार कंवलजीत को देखकर एक साहित्यकार महोदय मुंह बनाते हुए बोले।

दूसरे साहित्यकार महोदय ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा- 'इसका नया उपन्यास पढ़ा आपने। कितना घटिया है। कहता है कि समाज की सेक्स संबंधी कुंठाओं पर चोट है।' दोनों लोग ठठा कर हंसने लगे।

तभी एक नवयुवती कुछ जल्दी में वहाँ से गुजरते हुए उनसे टकरा गई। हाथ में पकड़े कागज जमीन पर गिर गए। दोनों की आँखें उन्हें उठाने झुकी युवती के शरीर पर दौड़ने लगीं।

रिटर्न

सुबह सुबह ही विकास बाबू के घर एक आदमी मिलने आया। उसने पॉलीथीन बैग में रखा एक पैकेट उन्हें थमा दिया। अपनी तसल्ली कर लेने के बाद विकास बाबू आश्वासन देते हुए बोले- 'आप इत्मिनान रखें। काम हो जाएगा।' आश्वस्त होकर वह व्यक्ति चला गया।

पास बैठे विकास बाबू के चचेरे भाई ने उनकी तरफ सवालिया दृष्टि डाली। 'यह रिटर्न है।' विकास बाबू हंसे। फिर समझाते हुए बोले- 'जब कहीं पैसा इन्वेस्ट करते हो तो ब्याज मिलता है। मैंने भी इस पोस्टिंग के लिए इन्वेस्ट किया है।'

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

गुनाह

करण के पड़ोस में रहने वाले शर्माजी जाते हुए करण के पिताजी से मिलने आये हुए थे। शर्माजी ने उन्हें बताया- "पत्नी की मृत्यु के बाद अकेलापन महसूस कर रहा था कि बड़ी बेटी और दामाद आ गए हैं और मुझे अपने साथ ले जाने की जिद्द कर रहे हैं। आज सुबह ही छुटकी का भी फोन आया था। अपने यहाँ आने के लिए कह रही थी। उनके प्यार और आग्रह को देखते हुए मुझे उनके साथ जाना होगा। तब तक जरा मेरे घर की तरफ भी ध्यान देना।" विदा लेकर शर्माजी चले गए थे।

अपनी पत्नी और माँ के बीच हो रहे नित नए झगड़े से परेशान करण ने अपने माँ-बाप को वृद्धाश्रम में छोड़ आने का फैसला किया। अपनी दबंग पत्नी को नाराज करने की जुर्रत करण नहीं कर सकता था। अनचाहे ही सही करण माँ-बाप को वृद्धाश्रम के नजदीक पहुंचाकर वापसी के लिए मुड़ा, लेकिन फिर रुक गया। उसकी दुविधा को ताड़कर उसके पिताजी ने बड़े ही स्नेह से उसे पुचकारा और कहा- "बेटा! तुमने वही किया है जो तुम्हें करना चाहिए था। तुम अपने मन में कोई अपराध बोध मत पालो। आज जो भी हुआ है उसके जिम्मेदार तुम नहीं हम खुद हैं। काश! बेटे की चाहत में हमने अपनी दो बेटियां जन्म से पहले ही कुर्बान नहीं की होतीं, तो कम से कम आज शर्माजी की तरह हमारी बेटियां हमारे साथ होतीं। लेकिन भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं और देखो, हमें अपने गुनाहों की सजा यहीं मिलनी शुरू हो गयी है।"

-- राजकुमार कांदु

अहंकार

बात बात पर स्नेहा अपने जुड़वा बेटों की बात छेड़कर खुद को सर्वश्रेष्ठ औरत और माँ साबित करने की कोशिश करती थी, जैसे दुनिया में पहली बार जुड़वाँ बच्चे उसी के हुए हैं। सभी उसके व्यवहार से परिचित हो उसे अनदेखा और उसकी बातों को अनसुना करते थे।

घर में छोटी बहू वंदना की हाल में हुई बेटी की छठी पूजा का समय आया तो सासू माँ ने मारे खुशी के मोहल्ले भर में बुलावा लगा दिया। छठी पूजा के साथ जच्चा-बच्चा के गीत भी करवा रही थी ,क्योंकि बडी बहू स्नेहा के बेटों के बाद घर में लक्ष्मी का आगमन हुआ था।

मोहल्ले की औरतें ढोलक की थाप पर गीत गाते हुए हँसी ठिठोली कर रही थी और वंदना सासू माँ के बताए अनुसार पूजा कर रही थी, तभी स्नेहा कमरे से रोती हुई बच्ची को ले वंदना को देते हुए बोली, "वंदना तुम्हारी बेटी रोती बहुत है, मेरे बच्चों ने कभी इस कदर परेशान नहीं किया।"

"आपको बच्चों ने इसलिए परेशान नहीं किया दीदी, क्योंकि आपने हीरे-मोती जने हैं और मैंने कंकड़ -पत्थर!" वंदना बोली। अब स्नेहा का चेहरा देखने लायक था।

-- संयोगिता शर्मा

कृष्ण-सुदामा

अपनी घनिष्ट मित्र नंदिनी के पार्थिव शरीर को अग्नि को सौंपकर सतीश अपने भावों को यादों का खाद पानी देकर सींच रहा था। उसकी बिटिया की शादी अचानक से तय हो गई। जल्दी में लाखों का इंतजाम करना था। समय ने उसे आखिर सिखा ही दिया कि लेखन के राजा-रानी को लक्ष्मी का साथ नहीं मिलता, ना ही सगे अपने रिश्तेदार करीब आना चाहते हैं।

दिन करीब आता जा रहा था और चिंता बढ़ती जा रही थी। एक दिन वह अपने कमरे में बैठा था कि नंदिनी उससे मिलने आई। उदासी में घिरे मित्र को देखकर उसकी चिंता का कारण जान गई । बिना रकम भरे हस्ताक्षर कर चेक थमाते हुए बोली- "बैंक में रखा रकम मिट्टी ही है, जब दोस्त के काम ना आए। जितना है, सब निकाल लेना और बिटिया की शादी धूम-धाम से कर, अपनी मुस्कुराहट वापस ले आना।"

बिटिया की शादी के कई महीनों के बाद। सतीश जब रकम वापस करने लगा, तो नंदनी बोली- "क्या रकम तुम्हारे हाथों में दी थी? ना हाथ में दी थी, ना हाथ में लूँगी! जहाँ से लिये थे वहीं रख आओ। फिर किसी के काम आ जाएँगे।"

-- विभा रानी श्रीवास्तव

(तीसरी किस्त)

अनुत्तरित प्रश्न

डॉ राजेन्द्र प्रसाद सिंह

कमरे से जाते वक्त जावेद ने मुझसे कुछ कहना चाहा लेकिन उसके मुंह से आवाज बाहर न आयी। वह सिर झुकाये कमरे से बाहर निकल गया। मेरी तल्ख आवाज से घर के सभी लोग जग गये। खालाजान मेरे कमरे में दाखिल हुईं और रंज लहजे में उन्होंने मुझसे पूछा, 'क्या बात है? इतनी रात! जावेद यहां क्या कर रहा था?' उनकी खोजी निगाहें मेरे शरीर पर पड़ी। बड़े इत्मीनान से उन्होंने अस्त-व्यस्त कपड़ों तथा बेतरतीब लटों को देखा और मेरे बिखरे हुए बालों का अर्थ समझने में लग गयीं। उनका संदेह और पुष्ट हो गया।

अक्सर कुत्ते सूंघकर हर बात समझने का प्रयास करते हैं। लगभग उसी अंदाज में उन्होंने भी मेरी देह को सूंघा। बदन के कपड़ों को अपने हाथ से स्पर्श किया। और भी उन्होंने कई ऐसे सवाल दागे जिनके उत्तर देना मेरे बस में नहीं था। मेरे साथ उनका सलूक बिल्कुल जानवरों जैसा था। दरअसल वह यह समझना चाह रही थीं कि इस तरह कितनी बार मैंने अपनी आबरु से गैर मर्दों को खेलने की इजाजत दी है। कितनी बार?

खालाजान एक के बाद एक सवाल दागने लगीं। मैं बेहद सकपका गयी थी। उनके बेतुके सवालों का सामना करना मेरे लिए बेहद कठिन था। जावेद को बचाते हुए मैं बोली, 'उनकी किताब मेरे कमरे में रह गयी थी। इतनी रात बीते किताब पढ़ने की सूझी, सो आये थे अपनी किताब लेने और चादर को लेकर मुझसे झगड़ा हो गया। बस इतनी-सी बात है। बस इतनी-सी!'

मगर खालाजान को मेरी बातों पर यकीन न हुआ। मैंने गौर से देखा, उनके चेहरे का रंग जरा बदला-बदला-सा नजर आया। उनकी जुबान में तिक्तता थी। मेरे जिस्म के हर अंग पर वह अपनी नजर बार-बार गड़ातीं और फिर बड़बड़ाने लगतीं। जबकि वह खुद भी अपने जीवन में दो बार तलाक के दर्द से गुजर चुकी थीं। अपनी प्रौढ़ अवस्था को पार कर चुकी खालाजान खास-खास नारी अंगों की अहमियत बखूबी समझ सकती थीं। जाहिर है अनुभव के मामले में वह काफी आगे निकल चुकी थीं। अपनी तल्खी का इजहार करते हुए बोलीं, 'तुम्हें शर्म नहीं आयी झूठ बोलते। अपना चाल-चलन ठीक करो! आबरू से बड़ी कोई चीज नहीं होती। तुम्हारे लच्छन तो पहले से ही मुझे ठीक नहीं लग रहे थे। तुम्हारे मरद को परदेश गये अभी साल भर भी नहीं हुआ कि तुम्हारे पांव बहकने लगे। तुम्हारी तरह हम भी एक दिन जवान थी। तुमसे भी अधिक खूबसूरत। पर पुरुष ने कभी मुझ पर हाथ नहीं डाला। अगर औरत सह न दे तो किसी गैर मरद की क्या हिम्मत जो हाथ लगा दे।'

उन्हें जो भी भला-बुरा कहना था, सो जी भरकर कह लिया। उनकी निगाह में मैं ही कसूरवार थी। किसी के सामने मैं अपनी कौन-सी सफाई पेश करती, जब मैंने कोई गुनाह ही नहीं किया था। एक भेद मेरी दृष्टि मुझ पर डालते हुए वह कमरे से निकल गयीं।

भोर होते न होते अम्मा भी मुझ पर बरस पड़ीं, 'कुलबोरन' कहकर उन्होंने मुझे संबोधित किया। 'जग हंसाई' कराने का मुझ पर आरोप लगा। मेरी ननदों ने मुझे चरित्रहीन कहा। ससुर ने मुझे देखते ही घृणा से मुंह फेर लिया और जावेद बिना किसी को कुछ बताये घर छोड़कर कहीं चला गया। पूरे गांव-जवार में इस घटना की विकृत चर्चा चल पड़ी।

मर्द चाहे कुछ भी करें, उन्हें कोई दोष नहीं देता। मगर औरत की देह सफेद चादर की तरह है जिस पर आब का हल्का छींटा भी अपना दाग छोड़ जाता है और दाग भी ऐसा जो कभी मिटता ही नहीं। बेशक खुद मजहब और शरीयत ही उसके सारे कुकर्मों की हिफाजत करते हैं, पहरेदारी करते हैं। औरत हिली-डुली नहीं कि उसके दामन में दाग लग जाते हैं और दाग भी ऐसा जो कभी धुलता नहीं। मर्दों की बनायी शरीयत की इस बेरहम दुनिया में औरत नाचीज है। मैं अपने ही घर में नाचीज बनकर रह गयी। सबके ताने सुनती रही।

एक रोज मेरे जेहन में आया कि अम्मा को सब कुछ सच-सच बता दूं। पर जावेद की रोनी सूरत का ख्याल कर मैं चुप रह गयी। दरअसल मैं नहीं चाहती थी कि इसे लेकर अशरफ और जावेद के बीच दरार पैदा हो और दोनों भाइयों के बीच उनकी दुश्मनी की मैं अहम् वजह बनूं। हालांकि मेरा चुप रहना ही मेरी मुसीबत की वजह बनी। मैं चुप रहकर भी अपने पाक साफ दामन को कलंकित होने से न बचा सकी। जिसे मैंने स्नेह दिया, प्यार दिया, जिस पर मैंने इतना विश्वास किया- वह सूरत इस कदर विकृत होगी!' यह सोचकर मैं अन्दर ही अन्दर पीड़ा महसूस करती रही।

इस बीच घटना की खबर पाकर मेरे शौहर भी कलकत्ता से घर लौट आये। उनका तेवर पहले से काफी बदला हुआ नजर आया। जिस शौहर पर मैं गुमान करती, जिसे लाखों में एक समझती और न जाने कितनी रातें हमने एक दूसरे के जिस्म को देखा-परखा था और जीवन-सुख का अनुभव किया था, उस मर्द को भी मैं कहां समझ पायी! उसने भी मुझसे मुंह फेर लिया। जबकि मुझे उन पर यकीन था। सोचा था, उन्हें अपने विश्वास में ले लूंगी। उनके विश्वास की डोर को कभी टूटने न दूंगी। चाहे मुझे और कोई न समझे मगर वह जरूर समझेंगे। मगर ऐसा न हो सका। शरीयत के कानून आदमियत पर भारी पड़ी।

'अशरफ अर्थात् मेरे शौहर यकीनन मेरा साथ देंगे और हम दोनों एक साथ मिलकर सारी मुसीबतों का सामना करेंगे।' अंततः मेरा यह विश्वास भी टूट गया। एक मर्द की बनायी शरीयत के आगे मैं हार गयी। देवर के स्पर्श मात्र से मेरा सतीत्व कलंकित हो चुका था।

मगर मेरे शरीर के हर अंग से खेलने वाला मेरा शौहर अशरफ अब भी पवित्र बना हुआ था। जाहिर है कि गैर औरत के स्पर्श से कोई मर्द कभी भी अपवित्र नहीं होता। अपवित्र तो सिर्फ औरत ही होती है!

चूंकि मैं अपवित्र हो चुकी थी, इसलिए अब अशरफ का मेरे साथ रहना मुमकिन नहीं था। वह दूसरी शादी का मन बना चुके थे। हालांकि मैं यह समझती हूं, कोई भी जगह किसी के जाने से खाली नहीं होती। अशरफ मुझे तलाक देना चाहते हैं। वह अपने जीवन से मुझे निकाल बाहर करना चाह रहे हैं। वर्षों के देह-मन के रिश्तों को वह एक ही झटके में तोड़ देना चाह रहे हैं। वह बेरुखी से बोले, 'तुम्हारा साथ अब कतई मुमकिन नहीं रहा। मैं तुम्हें तलाक देने आया हूं। तुम अपने जीवन का फैसला कर लो।' यह सुनते ही मेरे शरीर का रोआं-रोआं कांप गया।

मैं घबड़ाकर बोली, 'आप भी मुझ पर संदेह करने लगे! इस घर को छोड़कर मैं कहां जाऊंगी!' मेरा गला इतना भर आया कि इससे आगे कुछ कहते न बन पड़ा। तभी अम्मा बड़बड़ाने लगीं, 'तुम्हारी वजह से मेरा जावेद घर छोड़कर चला गया। तुमने उस पर ऐसा जादू का जाल बिछा दिया कि...। मैं और बखेड़ा घर में खड़ा करना नहीं चाहती। जग-हंसाई तो तूने करवा ही दी। हम मोहल्ले में मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहे। अब तुम इस घर में नहीं रह सकती। समझी?' फिर उन्होंने पलटकर अपने बेटे को हिदायत दीं, 'अशरफ तुम भी दो टूक कान खोलकर सुन लो, अगर इस कुलच्छनी से तुम्हें ज्यादा मोहब्बत है और इसे तलाक नहीं दे सकते तो इसे लेकर मेरी आंखों से कहीं दूर चले जाओ। हम अपने बूते अपना गुजारा कर लेंगे।' अशरफ ने अम्मा का कोई जवाब नहीं दिया। वह चुप रहे।

आफत तो आ ही चुकी थी। मैं चुप रहने के सिवाय और क्या कर सकती थी! हालत बिगड़ती ही चली गयी। एक दिन मेरे अब्बा को बुलाकर मुझे उनके हवाले कर दिया गया। सो मैं मायके में ही रहने लगी। मेरे हाल को देखकर अब्बा भी परेशान हो गये। अम्मा हर समय किच-किच करतीं। भाई व भाभी बेरुखी से पेश आते।

अब्बा पर घर-गृहस्थी का बोझ था। आय का कोई दूसरा जरिया नहीं था। मैं भी उन पर एक बोझ बन गयी। इसी फिक्र में अब्बा के चेहरे बदरंग होते चले गये। एक रोज मेरे छोटे भाई ने अब्बा को राय दी कि क्यों न जावेद को पंचायत में बात खुलासा करने को कहा जाय। आखिर बदनामी तो ऐसे भी हो रही है, वैसे भी होगी। भाई की राय अब्बा ने मान ली। मेरी ससुराल में ही पंचायत बैठायी गयी। भरी महफिल में मेरे अब्बा को बेइज्जत होना पड़ा। अब्बा इस बेइज्जती को बर्दाश्त न कर पाये और फिक्र के मारे महीना बीतते न बीतते इस जहां से रुख्सत हो गये।

(अगले अंक में समाप्त)

दिल्ली में बैठे शेरों को, सत्ता का लकवा मार गया
इस राजनीति के चक्कर में, सैनिक का साहस हार गया
मैं हूँ जवान उस भारत का, जो 'जय जवान' का पोषक है
जो स्वाभिमान का वाहक है, जो दृढ़ता का उद्घोषक है
मैं हूँ जवान उस भारत का, जो शक्ति-शौर्य की भाषा है
जो संप्रभुता का रक्षक है, जो संबल की परिभाषा है
उस भारत की ही धरती पर, ये फिर कैसी लाचारी है
हम सैनिक कैसे दीन हुए, अब कहाँ गयी खुद्दारी है?
'कश्मीर हमारा' कहते हो, पर याचक जैसे दिखते हो
तुम राष्ट्रवाद के थैले में, गठबंधन करके बिकते हो
वर्दी सौंपी, हथियार दिए, पर अधिकारों से रीते हैं
हम सैनिक घुट-घुट रहते हैं, कायर का जीवन जीते हैं
छप्पन इंची वालों ने कुछ, ऐसे हमको सम्मान दिए
कागज की किश्ती सौंपी है, अंगारों के तूफान दिए
हर-हर मोदी घर-घर मोदी, यह नारा सिर के पार गया
इक दो कौड़ी का जेहादी, सैनिक को थप्पड़ मार गया
अब वक्ष ठोकना बंद करो, घाटी में खड़े सवालों पर
ये थप्पड़ नहीं तमाचा है, भारत माता के गालों पर
सच तो ये है दिल्ली वालो, साहस संयम से हार गया
इक पत्थरबाज तुम्हारे सब, कपड़ों को आज उतार गया
इस नौबत को लाने वालो, थोड़ा सा शर्म किये होते
तुम काश्मीर में सैनिक बन, केवल इक दिवस जिए होते
इस राजनीति ने घाटी को, सरदर्द बनाकर छोड़ा है
भारत के वीर जवानों को, नामर्द बनाकर छोड़ा है
अब और नहीं लाचार करो, हम जीते जी मर जायेंगे
दर्पण में देख न पाएंगे, निज वर्दी पर शर्मायेंगे
या तो कश्मीर उन्हें दे दो, या आर-पार का काम करो
सेना को दो जिम्मेदारी, तुम दिल्ली में आराम करो
थप्पड़ खाएं गद्दारों के, हम इतने भी मजबूर नहीं
हम भारत माँ के सैनिक हैं, कोई बंधुआ मजदूर नहीं
मत छुट्टी दो, मत भत्ता दो, बस काम यही अब करने दो
वेतन आधा कर दो, लेकिन
कुत्तों में गोली भरने दो
भारत का आँचल स्वच्छ रहे,
हम दागी भी हो सकते हैं
दिल्ली गर यूँ ही मौन रही,
हम बागी भी हो सकते हैं

-- कवि गौरव चौहान

अपना धर्म निभाओगे कब, जग को राह दिखाओगे कब
अभिनव कोई गीत बनाओ, घूम-घूमकर उसे सुनाओ
स्नेह-सुधा की धार बहाओ, वसुधा को सरसाओगे कब
सुस्ती-आलस दूर भगा दो, देशप्रेम की अलख जगा दो
श्रम करने की ललक लगा दो, नवअंकुर उपजाओगे कब
देवताओं के परिवारों से, ऊबड़-खाबड़ गलियारों से
पर्वत के शीतल धारों से,
नूतन गंगा लाओगे कब
सही दिशा दुनिया को देना,
अपनी कलम न रुकने देना
भाल न अपना झुकने देना
सच्चे कवि कहलाओगे तब

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

जिंदगी की क्यारी में इक पौधा तो लगाइए
दूसरों को हँसने दें औ खुद भी मुस्कराइए
जल रही है धरती और जल रहा जहान है
जल रहा है चप्पा -चप्पा ,जल रहा आसमान है
नफरतों को त्याग कर प्यार को अपनाइए
जिंदगी की क्यारी में इक पौधा तो लगाइए
तेरा-मेरा करके हमें कुछ नहीं मिल पाएगा
मिल बाँट के खाएंगे गर स्वर्ग भी मिल जाएगा
शिकवे -गिले छोड़कर अब तो मान जाइए
जिंदगी की क्यारी में इक पौधा तो लगाइए
खाली हाथ आये हैं ,खाली हाथ जाएंगे
गर किए सत्कर्म तो साथ वे ही जाएंगे
जिन्दगी है चार दिन कुछ पुण्य करके जाइए
जिंदगी की क्यारी में इक पौधा तो लगाइए
पंच तत्व से बना मानव का शरीर है
कर्ज है प्रकृति का तुझपे
फिर भी तू अधीर है
ब्याज भी गर छोड़
दें मूल तो बचाइए
जिंदगी की क्यारी में
इक पौधा तो लगाइए

-- डॉ रमा द्विवेदी

बनो विशाल वृक्ष से, जिन्दगी सँवारो तुम
लो सबक अतीत से भविष्य को सुधारो तुम
ज्योतिमा के भव्य दीप बनके तुम जल उठो
हो मनुज मनुजता के दुर्ग तुम नये गढ़ो
तुम खिलो सुमन सदृश सुवास को बिखेरते
उद्योग के उद्यान को संवारते सहेजते
त्यागकर अहम को तुम लक्ष्य ओर बढ़ चलो
कदम रहे जमीन पर गगन को जब निहारो तुम
जियो कुछ इस तरह कि जिन्दगी चहक उठे
प्राण जो निष्प्राण है, जी उठे महक उठे
व्याष्टि और समिष्टि बीच प्रेम ही आराध्य हो
विश्व बन्धुत्व भाव
जिन्दगी का साध्य हो
धरती के लाल सुन
धरती की आर्तनाद
खो रही मानवता को
फिर से पुकारो तुम

-- सफलता सरोज

पिया मोरे नयना पीर झरे
बिरहन बैठी बाट जोहती, मुख आँचल ओट करे
किस विध मन को समझाऊँ, सजना नित साँझ परे
दीप जलाए जोगन बैठी, दिल बाती जैसे जरे
ढुलक-ढुलक अँसुवन की धारा, अब पल नहीं धीर धरे
सुध-बुध भूली मीत-प्रीत में,
यह मन बैरी भीत करे
न बिंदी न काजल भाए,
सेज पिया अंगार धरे
अबके फागुन आओ पिया जी,
'मौज' कर जोड़े विनती करे

-- विमला महरिया 'मौज'

कारी कारी, भारी रातें, फिरती मारी मारी रातें
पछुआ पवन जलाये तन को, झुलसाये हर कली सुमन को
यह जलती सी जेठ दुपहरी, अस्त-व्यस्त करती जीवन को
रात हवा ठप हो जाती है, चिपचिप करें, उघारी रातें
कारी कारी...
नदी, ताल, नाले उमड़ाये, रात रात मेढक गोहराये
मेरा मन अब गीला घी है, काले नीले बादल आये
छान पुरानी टप टप चूती, कजरी भरी, मल्हारी रातें
कारी कारी...
हवा! तू जरा धीरे बह री, काल संदेशा तू मत कह री
शीतलहर के तेज थपेड़े, क्या रोकेगी बूढ़ी कथरी ?
पूष माघ की कोहरे वाली, निष्ठुर हाहाकारी रातें
कारी कारी...
बीती रातें करवट करवट,
थी तेरी यादों की आहट
सूख गयी तुम बिन उर सरिता,
रिक्त हो गये नैनों के घट
मत पूछो! तारे गिन-गिन के,
बीती मेरी सारी रातें। कारी कारी...

-- डॉ दिवाकर दत्त त्रिपाठी

पर्यावरण गीत

हरी भरी अपनी वसुधा को आज बनायेंगे
आओ मिलकर हम सारे कुछ पेड़ लगायेंगे
संतुलन है बहुत जरूरी, बीच नियति के
छेड़छाड़ अब नहीं करो, तुम साथ प्रकृति के
अपनी धरती को हम फिर से स्वर्ग बनायेंगे
आओ मिलकर हम सारे कुछ पेड़ लगायेंगे
जल के बिन जीवन होगा, हम सोच नहीं पाये
फिर बोलो किसलिए भला, हम जंगल कटवाएं
बिन जंगल बादल भी कैसे जल बरसाएंगे
आओ मिलकर हम सारे कुछ पेड़ लगायेंगे
इतना बढ़ा प्रदूषण, भूमि हो गई है बंजर
कहीं है सूखा, बाढ़ कहीं पर, कैसा है मंजर
मार ये कुदरत की बोलो, कैसे सह पायेंगे
आओ मिलकर हम सारे कुछ पेड़ लगायेंगे
दूषित नदियाँ दूषित वायु, स्वच्छ नहीं पानी
देख-देख बढ़ती बीमारी, होती हैरानी
कूड़ा करकट कभी नदी में नहीं बहायेंगे
आओ मिलकर हम सारे कुछ पेड़ लगायेंगे
पेड़ों से मिलता आक्सीजन, नष्ट नहीं करना
वक्त के रहते चेतो वरना, कष्ट यहाँ भरना
पेड़ों से ही जीवन है सबको समझायेंगे
आओ मिलकर हम सारे कुछ पेड़ लगायेंगे
ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से, जूझ रही धरती
परमाणु का झेल परीक्षण,
घुट-घुट कर मरती
कर लो ये संकल्प
प्रदूषण नहीं बढ़ायेंगे
आओ मिलकर हम
सारे कुछ पेड़ लगायेंगे

-- रमा प्रवीर वर्मा

(ग्यारहवीं कड़ी)

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

कृष्ण को सबसे अधिक आश्चर्य पितामह भीष्म के व्यवहार पर हुआ था। वे कुरुवंश में सबसे वरिष्ठ थे और सबसे अधिक बलवान भी। उनकी कुलवधू और महाराज द्रुपद की पुत्री को भरी सभा में निर्वस्त्र किया जा रहा था, जो उनके लिए घोर अपमानजनक कार्य था, परन्तु उन्होंने इसे रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया। यदि वे एक बार भी जोर से दुर्योधन को डाँट देते और द्रोपदी को मुक्त कर देने का आदेश देते, तो दुर्योधन का साहस उनके आदेश का उल्लंघन करने का न होता। लेकिन वे केवल अपना रोष प्रकट करके नपुंसकों और निर्बलों की तरह बैठे रह गये। क्या दुर्योधन का अन्न खाकर उनकी बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो चुकी थी? यदि यह कार्य दुर्योधन के बजाय किसी बाहरी व्यक्ति ने किया होता या ऐसा करने की बात भी की होती, तो क्या तब भी भीष्म इसी तरह बैठे रहते या एक ही बाण से उसका मस्तक उड़ा देते? द्रोणाचार्य और कृपाचार्य ने एक-एक बार उठकर इस कृत्य का विरोध किया भी था, परन्तु दुर्योधन ने उनको यह कहकर चुप करा दिया कि वे कुरुवंश का अन्न खाने वाले हैं, उनकी स्थिति वेतन प्राप्त सेवक से अधिक नहीं है, इसलिए उनको बोलने का कोई अधिकार नहीं है। तब वे अपनी स्थिति देखकर चुप होकर बैठ गये।

महामंत्री विदुर ने अवश्य कई बार इसका खुला विरोध किया और दुर्योधन तथा उसके साथियों को अनेक प्रकार से समझाया, डराया और डाँटा भी, परन्तु उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं हुआ। महामंत्री विदुर ने महाराज धृतराष्ट्र को भी कई बार कहा कि महाराज इसे रोकिये, यह आपके पूरे वंश का विनाश करा देगा। परन्तु अंधे महाराज की बाहर की ही नहीं भीतर की आँखें भी फूटी हुई थीं। वे बुद्धिहीन और विवेकहीन महाराज एक निर्जीव पत्थर की तरह बैठे रहे। वे किसी को कुछ भी करने से नहीं रोक सके और दुर्योधन मनमानी करता रहा। दुर्योधन के भाइयों में से केवल विकर्ण ने इस कृत्य का खुला विरोध किया, लेकिन उसका कथन शोर में दब गया और उसे दुर्योधन ने डाँटकर चुप करा दिया।

कृष्ण को कुरुओं की राजसभा में द्रोपदी के अपमान की सभी बातें बाद में ज्ञात हुईं। उनको इन घटनाओं का भली प्रकार स्मरण था। दुःशासन द्रोपदी के वस्त्र खींचने का पूरे बल से प्रयत्न कर रहा था और द्रोपदी भी असहायों की तरह अकेली ही अपनी लज्जा बचाने का प्रयास कर रही थी।

पांडव स्वयं को हार चुके थे। वे चुपचाप सिर नीचा किये अपनी विवाहिता पत्नी के अपमान और उसके वस्त्रहरण की कोशिशों को सहन करते रहे। उनको भी अपनी विवाहिता पत्नी के अपमान पर क्रोध आ रहा था, परन्तु युधिष्ठिर ने सबको नियंत्रित रखा और वे कोई सक्रिय विरोध न कर पाये। केवल भीम ने कठोर प्रतिज्ञायें की थीं। पहले जब दुर्योधन ने द्रोपदी को अपनी नंगी जाँघ दिखाते हुए उसे पर बैठने का इशारा किया था, तो भीम ने जोर से घोषणा करते हुए उसकी जाँघ तोड़ने की प्रतिज्ञा की थी। इस प्रतिज्ञा पर महामंत्री विदुर ने कहा था कि यह प्रतिज्ञा कुरुवंश के विनाश की घोषणा है। परन्तु दुर्योधन और उसके दुर्मति साथियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ।

भीम ने दूसरी प्रतिज्ञा तब की थी, जब दुःशासन ने द्रोपदी के बालों को पकड़कर खींचा था। तब भीम ने उठकर घोषणा करते हुए प्रतिज्ञा की थी कि जिन हाथों से दुःशासन ने द्रोपदी के बालों को पकड़कर खींचा है, उनको मैं जड़ से उखाड़ दूँगा और उसके सीने को फाड़कर खून पीयूँगा। उसी समय द्रोपदी ने भी प्रतिज्ञा की कि जब तक इन बालों को दुःशासन के रक्त से नहीं धो लूंगी, तब तक इनको खुला ही रखूंगी।

इन भीषण प्रतिज्ञाओं को सुनकर कौरवों को पांडवों पर हँसी आ रही थी। वे उनको उकसाने के लिए तरह-तरह के व्यंग्य कस रहे थे। भीम और अर्जुन क्रोध से उबल रहे थे, परन्तु अपने बड़े भाई के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन ऐसी विषम परिस्थिति में भी उन्होंने अपने बड़े भाई के प्रति कोई असम्मान नहीं दिखाया।

यह बहुत आश्चर्यजनक बात थी, क्योंकि साधारण भाइयों के बीच अत्यंत तुच्छ विषयों पर भी वाद-विवाद हो जाते हैं, जो आगे चलकर शत्रुता में बदल जाते हैं। लेकिन पांडव इसमें अपवाद सिद्ध हुए। अपनी पत्नी को दांव पर लगाने की इतनी बड़ी भूल पर भी छोटे भाइयों ने बड़े भाई के प्रति रोष व्यक्त नहीं किया। एक बार भीम क्रोध से उबला भी, लेकिन अर्जुन ने उसको संभाल लिया। नकुल और सहदेव ने भी कुछ नहीं कहा और सदा की तरह अपने बड़े भ्राताओं के प्रति सम्मान बनाये रखा।

यहाँ तक कि महारानी द्रोपदी ने भी अपने पतियों को ललकारा, लेकिन एक बार भी अपने अपमान के लिए उनको दोषी नहीं ठहराया। इसका कारण क्या हो सकता है? क्या उनको यह विश्वास था कि वे किसी नियति के हाथों में खेल रहे हैं और अंततः इसका परिणाम सुखद ही होगा?

कृष्ण ने सोचा कि यह अच्छा ही हुआ कि पांडवों ने उस अवसर पर स्वयं को नियंत्रित रखा और कोई तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। अगर पांडव अपना संयम खोकर उसी समय हथियार उठा लेते और कौरवों पर हमला कर देते, तो क्या होता? तो केवल यह होता कि सारे कौरव एक साथ मिलकर उनके ऊपर टूट पड़ते, जिनमें भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य और कर्ण भी शामिल होते। सभी मिलकर पांडवों की हत्या कर देते। दस-बीस को मारकर पांडव वहीं समाप्त हो जाते। पांडवों के न रहने पर द्रोपदी की और भी अधिक दुर्दशा होती, उनको और अधिक अपमान सहन करना पड़ता।

इसलिए कृष्ण इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह वास्तव में अच्छा ही हुआ कि पांडवों ने उस समय अपने रोष को पी लिया और उचित समय पर हथियार उठाने का निश्चय कर लिया। भीम ने जो प्रतिज्ञाएँ की थीं, उनको पूरा होना ही था। केवल उचित समय की प्रतीक्षा थी और वह समय शीघ्र ही आने वाला है। पांचाली के अपमान का पूरा-पूरा प्रतिशोध कौरवों से और उनके सहयोगियों से लिया जायेगा।

कृष्ण कौरवों की राजसभा में हुई आगे की घटनाओं पर विचार करने लगे, जैसा कि उनको बाद में ज्ञात हुआ। महारानी द्रोपदी अपने वस्त्रों को शरीर से अलग होने से बचाने का पूरे बल से प्रयास कर रही थी, इसलिए दुःशासन उसमें पूरी तरह सफल नहीं हुआ। कदाचित वह सफल हो भी जाता, लेकिन तभी किसी ने महारानी गांधारी को इसकी सूचना दे दी और वे राजसभा में आ गयीं। आंखों पर पट्टी बंधे होने पर भी उन्हें राजसभा का दृश्य समझने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

एक नारी की पीड़ा दूसरी नारी ही अच्छी तरह समझ सकती है। उन्होंने महान कुरुवंश की राजसभा में घट रही इस अमानवीय घटना पर बहुत क्रोध प्रकट किया और अंधे महाराज धृतराष्ट्र को धिक्कारा कि आपके होते हुए यह अनर्थ क्यों हो रहा है? अभी तक निर्विकार बैठे हुए महाराज को भी पत्नी द्वारा धिक्कारने पर लज्जा आयी और उन्होंने तत्काल आदेश देकर दुःशासन को वहीं रोक दिया। इतना ही नहीं उन्होंने द्यूत में हारी हुई समस्त सम्पत्ति और पांडवों को भी कौरवों के स्वामित्व से मुक्त कर दिया। पांडवों सहित सभी ने राहत की सांस ली और फिर शीघ्र ही वे इन्द्रप्रस्थ को प्रस्थान कर गये।

पांडवों के इस प्रकार मुक्त हो जाने से दुर्योधन और उसके साथियों की सारी योजनायें रखी रह गयीं। वह इस बात को सहन नहीं कर सकता था। इसलिए पांडवों के जाते ही उसने धृतराष्ट्र पर दबाब डालकर उनको फिर द्यूत के लिए बुलाया। पिछली बार की तरह पांडवों ने इस बार भी महाराज धृतराष्ट्र के आदेश का पालन करने में कोई देरी नहीं की और युधिष्ठिर फिर से द्यूत खेलने बैठ गये।

इस बार द्यूत की केवल एक बाजी रखी गयी। उसमें दांव के रूप में १२ वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास रखा गया। युधिष्ठिर ने यह दांव भी स्वीकार कर लिया। पासे फेंके गये और जैसा कि पहले हुआ था, यह दांव भी शकुनि ने जीत लिया। दांव हारने के बाद पांडव १२ वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास करने को तैयार हो गये।

(अगले अंक में जारी)

पत्थरबाज कश्मीर में नहीं, दिल्ली में हैं

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

कितना अजीब लगता है की चोर बैठा है थाने में और हम उसे ढूढ़ रहे है गांव गली में! ऐसा ही कुछ हम पत्थरबाजों के साथ कर रहे हैं. कुछ साल पहले हम ऐसा ही खालिस्तानियों के साथ भी कर रहे थे जिनके तार दुनिया के सारे देशों के साथ जुड़े हुए थे. जिसे इंदिरा जी ने अपने दृढ़इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए एक ही झटके में समाप्त कर दिया. आज वैसी ही कार्यवाही की जरूरत है लेकिन हमारे प्रधानमंत्री का पैर वोट की लालसा और गाँधी बनने की ललक से बुरी तरह बंधा हुआ है. जबकि यह आईने की तरह साफ है की तमाम प्रयास करने के बावजूद वे उनका विश्वास कभी नहीं जीत सकते जिनके खून की हर बूँद में कट्टरता समाई हुई है. चाहे वह जातीय हो या धार्मिक!

जिस लोकतंत्र का पीठ हम ७० साल से थपथपा रहे हैं वह आज पूरी तरह से देश के अखंडता पर नहीं खंडता पर टिका हुआ है, स्वच्छंदता पर टिका हुआ है. मोदी जी बस थोड़ी सी लगाम लगाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसके फलस्वरूप रदन से लेकर कश्मीर तक देश को खंड-खंड करने के नारे लग रहे है, पत्थर फेंके जा रहे हैं. जिस बंगाल में दुर्गा माँ के थोड़े से अपमान पर पूरा प्रदेश जल उठता था, वहाँ अब दुर्गा माँ को खुलेआम वेश्या कहा जा रहा है. फिर भी ममता जीत रही है तो किसके बूते पर यह अनुसंधान का विषय है. हिन्दू जनमानस अपने संस्कृति और परम्परा के प्रति कितना उदासीन हो चुका है यह चिंता का विषय है. जिस भारतीय सेना से पूरी दुनिया खौफ खाती है वह अपने देश में ही चूहा बन गयी है. यहाँ का लोकतंत्र, यहाँ का संविधान यहाँ के मतदाताओं के एक वर्ग ने सेना को इतना दयनीय बना दिया है. इस्लामी कट्टरपंथी तो कोढ़ हैं ही, हिन्दुओं का एक तबका भी इसमें खाज का काम कर रहा है.

समझ में नहीं आता कि सारी पंचायत हिन्दुस्तान में ही क्यों होती है? कभी जाति के नाम पर, तो कभी धर्म के नाम पर ! चीन अपने यहाँ बुरका पहनना तो दूर नमाज तक पढ़ने की इजाजत नहीं देता, लेकिन वहाँ कोई पंचायत नहीं होती. यहाँ बहाना बनाया जाता है कि भारत एक लोकतांत्रिक और सेक्युलर देश है. समझ में नहीं आता कि जिस प्रावधान से देश का इतना बड़ा नुकसान हो रहा है, देश खंड-खंड होने की स्थिति में पहुंच रहा है, उसे कुछदिन के लिए छोड़ क्यों नहीं दिया जाता? कुरआन के आयत की तरह उसे सीने से लगाकर हम कबतक देश को खंड-खंड होने का इन्तजार करते रहेंगे.

पिछले कई दिनों से टीवी पर पत्थरबाजों पर हो रहे डिबेट को देख रहा हूँ. पैनलिस्ट स्पष्ट रूप से दो भागों में बंटे दिखाई देते हैं. पता नहीं अभी समझने और समझाने को क्या बचा है? कुछ पैनलिस्टों द्वारा जिस प्रकार हिन्दुओ को अबे-तबे कहा जाता है, जिस प्रकार मोदी-योगी को अपशब्द कहा जाता है, वह उनके इरादे को स्पष्टतया प्रकट करता है.

कांग्रेस के एक नेता बड़े मासूमियत से कहते हैं कि बच्चो पर गोली चलाओगे? कश्मीर की क्या हालत बना दी है? कश्मीर में पाकिस्तानी झंडा लहराता रहे, सारे पंडित भाग जायें, वह हालत ठीक है. लेकिन उस पर लगाम लगाने की कोशिश हो तो वह ठीक नहीं है. हमारे रंगरूट बच्चे पत्थर खायें, लेकिन उनके बदतमीज बच्चे गोली न खायें! राजनेताओं के कारण हमारी सेना नपुंसक लगने लगी है. कम से कम सियासत के पासे पर सेना के इज्जत को दांव पर न लगाया जाय, गोली टॉप बंदूकों से जूझ रही सेना को न्यायालय और संसद से निर्देश न दिया जाय. बेहतर तो यह होगा कि एक पत्थर लगने पर सारे पत्थरबाज मार दिए जायें, भले ही उनकी संख्या सैकड़ों में न होकर हजारों में हो. ये पत्थरबाज क्यों आते हैं, कहाँ से आते हैं, किसके इशारे पर आते हैं, इस पर चिंतन करने की कोई आवश्यकता नहीं है.■

हास्य-व्यंग्य

सुबह लाठी, शाम चपाती!

तारकेश कुमार ओझा

न्यूज चैनलों पर चलने वाले खबरों के ज्वार-भाटे से अक्सर ऐसी-ऐसी जानकारी ज्ञान के मोती की तरह किनारे लगते रहती हैं, जिससे कम समझ वालों का नॉलेज बैंक लगातार मजबूत होता जाता है। अभी हाल में एक महत्वपूर्ण सूचना से अवगत होने का अवसर मिला कि देश के एक बड़े राजनेता का केस लड़ रहे वकील ने उन्हें मात्र चार करोड़ रुपए की फीस का बिल भेजा है। इस बिल पर हंगामा ही खड़ा हो गया। इसलिए नहीं कि बिल बहुत ज्यादा है, बल्कि इसलिए कि बिल का पेमेंट राजनेता करें या वह सरकार जिसके वे मुख्यमंत्री हैं।

विवाद जारी रहने के दौरान ही एक और राजनेता ने बयान दिया कि वकील साहब एक जमाने में उनका केस भी लड़ चुके हैं। वे काफी दयालू प्रवृत्ति के हैं। क्लाइंट गरीब हो तो वे केस लड़ने की अपनी फीस नहीं लेते। अब काफी बुजुर्ग हो चुके इन वकील साहब की चर्चा मैं छात्र जीवन से सुनता आ रहा हूं।वे पहले भी अमूमन हर चर्चित मामले में ये किसी न किसी तरह कूद ही पड़ते थे। साल में दो-चार केस तो ऐसे होते ही थे जिसकी मीडिया में खूब चर्चा होती। वाद-वितंडा भी होता। विवाद के चरम पर पहुंचते ही मैं अनुमान लगा लेता था कि अब मामले में जरूर उन वकील साहब की इंट्री होगी। बिल्कुल बचपन में देखी गई उन बम्बईया फिल्मों की तरह कि जब मार-कुटाई की औपचारिकता पूरी हो जाती थी और हीरो पक्ष के लोग एक-दूसरे के गले मिल रहे होते थे, तभी सायरन बजाती पुलिस की जीप वहां पहुंचती थी।

अक्सर ऐसा होता भी था। कभी किसी के पीछे हाथ धोकर पड़ जाते और जब बेचारा शिकार की तरह आरोपी बुरी तरह फंस जाता तो खुद ही वकील बनकर उसे बचाने भी पहुंच जाते। पहले मैं समझता था कि यह उनके प्रतिवादी स्वभाव की बानगी है जो उन्हें चैन से नहीं बैठने देती। जिसके पीछे पड़ते हैं फिर उसे बचाने में भी जुट जाते हैं। तब तक मोटी फीस का मसला अपनी समझ में नहीं आया था। मुझे तो यही लगता था कि स्वनाम धन्य ये वकील साहब प्रतिवादी होने के साथ ही दयालु प्रवृत्ति के भी होंगे। तभी तो पहले जिसे लपेटते हैं उसकी हालत पर तरस खाकर उसे बचाने के जतन भी खुद ही करते हैं। लेकिन चार करोड़ी फीस मामले ने धारणाओं को बिल्कुल उलट-पलट कर रख दिया। मेरे शहर में भी अनेक ऐसे प्रतिवादी रहे हैं जो पहले तो बात-बेबात किसी के पीछे पड़ते हैं। फिर सुबह जिसके साथ लाठियां बजाई थीं, शाम को उसी के साथ बैठकर चपाती खाते और दारू पीते नजर आ जाते और कल जिसके साथ रोटियां तोड़ रहे थे, आज उसी के साथ लट्ठम-लट्ठा में जुटे हैं।

जनाब इसे अपने प्रतिवादी स्वभाव की विशेषता बताते हुए बखान करते कि यह संस्कार उन्हें रक्त में मिला है। वे अन्याय बर्दाश्त नहीं कर सकते। उनके सामने कोई मामला आएगा तो वे चुप नहीं बैठेंगे। कड़ा प्रतिकार होगा वगैरह-वगैरह। फिर एक दिन अचानक बिल्कुल विपरीत मोड में नजर आएंगे। आश्चर्य मिश्रित स्वर में यह पूछते ही कि अरे आप तो...! फिर रहस्यमय मुस्कान में जवाब मिलेगा- 'समझा करो विरोध-प्रतिवाद अपनी जगह है। लेकिन धंधा-पेशा या वाणिज्य भी तो कोई चीज है।' मेरे चेहरे पर उभर रहे भावों को समझते हुए फिर बोलेंगे- 'समझा करो यार! बी प्रैक्टिकल! एक डॉक्टर के पास यदि किसी डाकू का केस आएगा तो क्या डॉक्टर उसे नहीं देखेगा। कहेगा कि यह गलत आदमी है, इसलिए मैं इसका उपचार नहीं करूंगा। यही बात मेरे साथ भी लागू होती है। व्यक्तिगत तौर पर तो मैं उस आदमी का अब भी विरोधी हूं। लेकिन बात पेशे की है।' मुझे पहले अंदाजा नहीं था कि शून्य से शिखर तक ऐसे रहस्यमयी चरित्र बिखरे पड़े हैं। अब मैं भी कुछ-कुछ समझने लगा हूं। ■

हम गुजरे हैं आज दर्द के बेहद करीब से
शायद मिलीं ये घड़ियां हमको नसीब से
गम ए दर्द की सदाएं ये हवाएं ला रहीं
सुना रहीं हैं पुरवाइयां किस्से अजीब से
जीभर के उनको देखें ये शौक रह गया
हां फुर्सत नहीं मिली उन्हें मेरे रकीब से
रंगीनियां जहां की थीं गर तेरी आरजू
तो क्यों लगाया दिल भला तूने गरीब से
गुजरे जो वो करीब से दिल ने दुआएं दी
मिल सकेगा क्या तुम्हें मुझसे फकीर से
अल्फाज नहीं 'जानिब' जो कर दे दर्द बयां
चाहत है मुझे कितनी अपने हबीब से

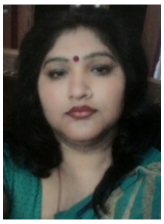

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

गलत मेरे अपने ही यार समझते हैं मुझे
क्यों नहीं प्यार का हकदार समझते हैं मुझे
हाँ कभी दी थी सदा मैंने तुझे भी बढ़कर
लोग हर बार खतावार समझते हैं मुझे
काश बतलाए कोई आज दवा मुझको भी
अब तो सब लोग ही बीमार समझते हैं मुझे
प्यार माँगा है यहां भीख सा मैंने हरदम
और वो इसपे भी खुद्दार समझते हैं मुझे
मैं खबर एक नई बन के रही हूँ 'शुभदा'
और वो पुराना सा अखबार समझते हैं मुझे

-- शुभदा वाजपेई

बनाकर जिन्दगी अपनी बहुत दुश्वार बैठा है
जिसे देखो वही इस प्यार में बीमार बैठा है
मुहब्बत के अदब के वास्ते घातक है वो इंसान
लिए दिल में जो नफरत का कोई हथियार बैठा है
भले कोई करे इनकार मेरी बात से लेकिन
हरिक इंसान के भीतर छुपा मक्कार बैठा है
किया इजहार मैंने बारहा अपनी मुहब्बत का
जमाने से लबों उसके मगर इनकार बैठा है
सताएगा मुझे क्या खौफ इस कानून का यारो
पिया बनकर मेरा थाने में थानेदार बैठा है
जो होना है वो हो जाये नहीं कुछ फिक्र अब दिल में
ये 'माही' मुश्किलों को बेझिझक ललकार बैठा है
उसे मिलती नहीं मंजिल किसी भी हाल में 'माही'
सफर करने से पहले ही जो हिम्मत हार बैठा है
नहीं है फर्क उसमें और मुर्दा में कोई 'माही'
जमीर अपना हमेशा के लिए जो मार बैठा है

-- महेश कुमार कुलदीप 'माही'

दिल अदद पत्थर हुआ यूं चोट खाई जिंदगी
आंख ही बहती रही बह ना सकी ये जिंदगी
वो खफा मुझसे है या फिर है खफा ये जिंदगी
बात कुछ भी हो मगर नही जिंदगी सी जिंदगी
रोशनी घुलता अंधेरा गर्दिश में लिपटी जिंदगी
बस धुआं ही औ धुआं कुछ यूं जली ये जिंदगी
उफ नही कोई न कोई है शिकन उस पे नवाज
हर कमतरी ली ढाँप कि उससे बड़ी ये जिंदगी
दर्द सीने में उठे या फिर जीने में कोई गम नहीं
एक मुद्दत से यूँ ही मिली भेंटी थी हर सूं जिंदगी
देखना उस पार शायद फिर से मिले कोई जिंदगी
नींद आंखों से खला और ख्वाब एक ये जिंदगी

-- प्रियंवदा अवस्थी

चेहरे पे तेरे जो नूर आया है
तुझ पर किसी हसीं का साया है
मैकदा देख तेरी आंखों ने भी
बदल दिया घर अपना पराया है
हसीं शाम जो मिली वफा ढूंढ़ने
फिर कोई मरीजे इश्क आया है
उदास होंठ हैं जो तेरे अब तलक
मुस्कान बेचने कोई खरीदार आया है
करवट बदल-बदल बीती हैं रातें
ख्वाबों में भी पहलू में तुझे पाया है
दिन रात मेरे ख्यालों में तेरा
इश्क कातिल जुनूं बनके छाया है

-- प्रीती श्रीवास्तव

आ गया है फिर सिकन्दर देखिये
हारते पोरस का मंजर देखिये
लुट रही थी आबरू सड़कों पे तब
रोमियों को अब बुलाकर देखिये
गाँव जीता था अंधेरों में कभी
रौशनी है गाँव जाकर देखिये
सब मवाली भागकर जाने लगे
अब चमन में सर उठाकर देखिये
बच रहे मासूम कटने से यहाँ
पाप का घटता समंदर देखिये
बन्द होगी वह वसूली इस तरह
दिख रही खाकी में अंतर देखिये
खूब सीएमओ मरे थे लूट में
जां बचाते आज रहबर देखिये
हाथियों ने खा लिया गैरों का हक
पेट में क्या-क्या है अंदर देखिये
आ रहे उम्मीद से मिलने बहुत
चोर के बचने का ऑफर देखिये
थी वो अय्याशी में डूबी सल्तनत
हुक्मरां का सर मुड़ाकर देखिये
खास मजहब से लुटी हैं औरतें
दीजिये हक फिर मुकद्दर देखिये

-- नवीन मणि त्रिपाठी

नजर की क्या कहें अब तो जिगर भी हो गए पत्थर
कहाँ बू-ऐ-वफा खोयी कि घर भी हो गए पत्थर
खुदा तब बेबसी में शब-सहर रोया यकीनन है
गुलों से खिलखिलाते जब शजर भी हो गए पत्थर
बड़ी उम्मीद लेकर मैं चली आयी सुनो प्यारे
मगर थी क्या खबर दीवार-दर भी हो गए पत्थर
मुलम्मा वक्त का चढ़ता गया क्यूँ इस कदर बोलो
कि पत्थर को हँसाकर बाहुनर भी हो गए पत्थर
भरा किसने जहर दिल में तुम्हारे बोल दो इतना
असर ऐसा मुहब्बत के शहर भी हो गए पत्थर
हवा झोंका नहीं लाया कभी क्या मेरी यादों का
कहाँ है दफ्न रोजन इश्क-तर भी हो गए पत्थर
नदी का साथ देने की तड़प पाली समन्दर ने
निभाना खेल समझा तो मुखर भी हो गए पत्थर
यकीं करना हुआ मुश्किल कसम टूटे सितारे की
वही तुम बिन यही शम्सो-कमर भी हो गए पत्थर
सदा ही नाज था तुझपे मुझे ऐ दोस्त मेरी जां
किया क्यूँ वार दिल पे ही 'अधर' भी हो गए पत्थर

-- शुभा शुक्ला मिश्रा 'अधर'

दिल को फिर से चाहतों का तकाजा हुआ है
आंख के तट पे आंसुओं का जनाजा हुआ है
काश लम्हे वो लौट आये जो गुजारे थे साथ
दिल की धड़कनों में फिरसे अंदाजा हुआ है
हम हों तुम हों और हमारी बातें हों आपस में
अहसासों का मन पे फिरसे शिकंजा हुआ है
जमाने की रूसवाईयां अब डराती नहीं मुझे
जमाने की रूसवाई से ईश्क बेमजा हुआ है
आज आकर थाम ले हाथ हमारा ऐ जिंदगी
अरमानों का रंग आज फिर फिरोजा हुआ है
नादां ये दिल मानता ही नहीं जुदा हुए थे हम
दिल फिर से दीवाना तुझ पे जाने जां हुआ है

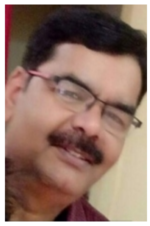

-- नन्द सारस्वत

रोता और रुलाता क्यूँ है, आँसू रोज बहाता क्यूँ है
इतना दर्द दबाकर दिल में, महफिल में मुस्काता क्यूँ है
तुझ पर बंद करे जो दर को, उसके दर पर जाता क्यूँ है
तुझको छोड़ गया जो तन्हा, उसको यार बताता क्यूँ है
सबकुछ लूट लिया अपनों ने, अपनों से फिर नाता क्यूँ है
तुझको भूल गये जो तेरे, उनकी बात सुनाता क्यूँ है
बहरे हैं सब दुनिया वाले फिर आवाज लगाता क्यूँ है
कड़वी है सच्चाई फिर तू सच की कविता गाता क्यूँ है
कुंभकरण से सोये हैं सब तू बेकार जगाता क्यूँ है

-- सतीश बंसल

परम्परा का परिष्करण

ठसाठस भरे होने के बावजूद भी पांडाल में पूर्ण शांति थी। स्वामी जी अपने प्रवचन के बाद देश-विदेश से आये अपने अनुयायियों की अध्यात्म सम्बन्धी शंकाओं के उत्तर दे रहे थे। उस समय एक व्यक्ति ने पूछा, "स्वामी जी, भगवान कृष्ण ने इंद्र के स्थान पर गोवर्धन पर्वत की पूजा की जो परंपरा प्रारंभ की, क्या वह उचित थी?"

स्वामी जी अपने चिर-परिचित अंदाज में मुस्कुरा दिये, और बहुत प्रेम से उस व्यक्ति की तरफ देख कर शांत और मधुर स्वर में कहा, "बिल्कुल उचित थी, प्रभु कृष्ण ने पुरानी रीतियों का समयानुसार परिष्करण किया। चूँकि गोवर्धन पर्वत द्वारा कई प्रकृति प्रदत्त लाभ थे, गोवर्धन वहां के निवासियों के सुविधापूर्ण जीवन-यापन में सहायक था, तो निर्जीव होते हुए भी उसका सरंक्षण आवश्यक था।"

इतने में पहली पंक्ति में बैठे हुए एक व्यक्ति के मोबाइल फोन की घंटी घनघनाने लगी। स्वामी जी कुछ क्षण को चुप हुए और पुनः शांति हो जाने के पश्चात् आँखें बंद कर कहने लगे, "संरक्षण केवल भौतिक ही नहीं मानसिक और अध्यात्मिक रूप से भी आवश्यक है, ताकि सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होकर उसे सशक्त..."

उस व्यक्ति के मोबाइल फोन की घंटी पुनः बजी। स्वामी जी की तन्द्रा जैसे टूटी, और वह मोबाइल फोन वाले व्यक्ति की तरफ देखकर मुस्कुरा दिये। स्वामी जी का इशारा समझकर, उनके सेवामंडल का एक कार्यकर्ता आगे बढ़ा और मोबाइल फोन वाले व्यक्ति के पास जाकर उससे कहा, "यहाँ मोबाइल लाना सख्त मना है, यदि लाये हैं तो उसे बंद रखिये।"

पहली कतार में बैठा वह व्यक्ति उठा और अपने मोबाइल फोन को अपने सिर-आँखों पर लगाया, बड़ी श्रद्धा से मोबाइल को अपने बैग में डाला, फिर स्वामी जी की तरफ देखकर मुस्कुराया और चुपचाप चला गया।

स्वामी जी को उसके जाने तक कुछ कहने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे।

-- डॉ चंद्रेश कुमार छतलानी

शान्ति का रसास्वादन

चेतना आज बहुत खुश है, परन्तु उसका दिमाग खलबली मचाए हुए है। लगभग बाईस वर्षों बाद उसके सास-ससुर उसके घर आ रहे हैं। हाँ वही सास-ससुर, जिन्होंने आज से ठीक बाईस वर्ष पहले उन्हें धक्के मारकर अपने घर से बाहर निकाल दिया था। उस समय उनके पास तन पर कपड़ों के सिवा और कुछ भी नहीं था। वह तो देवता रूप में किशन उसके साथ शादी के पवित्र बंधन में बंधा हुआ था। दोनों ने अपनी गृहस्थी को इस मुकाम पर लाकर खड़ा किया कि वही सास-ससुर आज उसके घर में रहने आ रहे हैं।

चेतना का शैतानी दिमाग उसे प्रेरित कर रहा था कि जिस प्रकार से सास-ससुर ने बाईस वर्ष पहले उसे धक्के मारकर घर से बाहर निकाला था, उसी प्रकार अब वह उन्हें प्रताड़ित कर अपमानित कर अपने घर से धक्के मार-मारकर निकाले और अपने बाईस वर्ष पहले हुए अपमान का बदला ले ले।

तभी घर की डोर बैल बजी। चेतना ने जल्दी से दरवाजा खोला। सामने किशन खड़ा था। उसके पीछे बूढ़े सास-ससुर खड़े थे। उसने भारतीय परम्परा का निर्वहन करने के लिए सास-ससुर के पाँव छुए। ससुर ने चेतना के सर पर हाथ रखा और सास ने उसे गले लगाया। सास के गले लगे हुए चेतना ने अपने कंधे पर कुछ गीला-गीला महसूस किया। उस गीलेपन की गर्मी ने चेतना के दिल को जगाया। दिल से आवाज आई 'समय समय की बात है, जिन्होंने उस वक्त तुम्हें बेघर किया था वही आज तुम्हारे घर में शरण मांगने आए हैं। अपने दिमाग की बात मानकर इन्हें धक्के मारकर घर से निकाल दो और इस परम्परा को आगे बढ़ाओ या फिर इनकी सेवा कर इस परम्परा को यहीं दफन कर डालो।'

चेतना ने दिमाग के बजाय अपने दिल की आवाज को तवज्जो दी। अब उसकी आत्मा शान्ति का रसास्वादन कर रही थी।

-- विजय 'विभोर'

अपना अपना डर

आज बेटी हास्टल नहीं पहुंची। माँ और पापा का दिल किसी अनजान घटना की आशंका से जोरों से धडक रहा था। काल भी नहीं लग रहा था, स्विच आफ बता रहा था। हास्टल पंहुचकर पता चला दोपहर की एन्ट्री से बापस नही आई। जैसे-जैसे समय गुजर रहा था सीने में दर्द उठता जा रहा था, पूरी रात इसी भय में निकल गई क्या पता क्या अनहोनी हुई है। सुबह के ११ बजे चुके थे पर कुछ पता न चला। सारी सहेलियों को काल करके पूछ चुके थे पर कुछ अता पता नहीं।

'मुझे लगता है रिपोर्ट करवा देनी चाहिए।'

'कैसी बातें करती हो? एक बार पुलिस केस बन गया तो जानती हो कितनी बदनामी होगी?' पिता ने मां की बात को काटते हुए कहा।

'पर बेटी को कुछ हो गया, तो बदनामी और बेटी दोनों से जाओगे।'

'अभी २४ घंटे पूरे नहीं हुए हैं। मुझे लगता है एक दो घंटे और इंतजार करना चाहिए, पुलिस भी २४ घंटे के बाद ही रिपोर्ट लेती है।'

दोनों की बैचैनी बढ़ती जा रही थी। पिछले कई घंटों से डर और चिन्ता में पानी भी हलक से नहीं उतरा था। तभी अचानक से रिंग हुई, दोनों की धड़कन रुक गईं। उस तरफ से बेटी बोल रही थी। 'कहां हो तुम? कैसी हो तुम?'

'माँ, मैं ठीक हूँ, मेरी कोचिंग मे मेरी एक सहेली का एक्सीडेंट हो गया था। उस समय मैं ही साथ थी उसके, फिर मेरा भी फोन स्विच ऑफ हो गया। इतना समय नहीं था कि हास्टल जाकर किसी को बता सकूँ।, अभी हास्पिटल से वापस आई। फोन चार्ज किया तब आपको बता पाई, सॉरी माँ!'

'तो किसी और के नंबर से काल कर लेती, तुमको पता है हम लोग कितना डर गयी थे।'

'माँ, नंबर याद नहीं था, सब मोबाइल में सेव है।'

'पागल लडकी, तेरी इस हरकत से मैं और तेरे पापा कितना परेशान हैं, इसका अंदाजा नहीं है तुमको। चल रख फोन हम लोग आते हैं हास्टल।'

दोनों के दिलों की धड़कन एकदम शांत हो गयी।

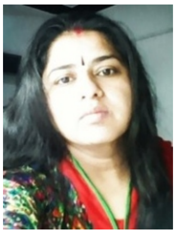

डर दोनों का एक सा था। बाप को अपनी इज्जत का डर कि कुछ ऊंच-नीच हो गई, तो? माँ को इस बात का डर कि कहीं उसको कुछ हो गया तो?

-- रजनी विलगैयाँ

छोटी सी खुशी

'आप अपनी माँ को समझाते क्यों नहीं ,बुढ़ापे में भी मियां-बीवी प्रेमी युगल की तरह घूमने का कार्यक्रम बना रहे हैं। क्या यह सब उनको शोभा देता है?' सीमा राजीव के माता-पिता पर बेकार के आक्षेप लगाये जा रही थी ।

'तुम्हें तो कुछ सुनना नहीं पड़ता। बच्चे व पड़ोसी क्या सोचेगें? मेरे माँ-बाऊजी ने तो ये सब कभी नहीं किया। और आपके माँ-पापा ने पैकेज लेने से पहले मुझसे सलाह क्यों नहीं ली?' अब सीमा के स्वर में तल्खी सी थी ।

काफी देर सीमा की झक-झक सुनने के बाद राजीव ने तस्वीर दिखाते हुये कहा- 'यह देखो अपने माँ और बाऊजी की तस्वीर! दोनों नैनीताल में घूम रहे हैं। और यह आईडिया भी मुझे तुम्हारे भाई यानी मेरे साले साहब व बच्चों ने ही दिया है। हमारे माँ-पापा ने जीवन भर हमारी खुशी के लिए क्या-क्या नहीं किया। क्या हम उन्हें उनके जीवन के संध्याकाल में इतनी खुशी भी नहीं दे सकते?'

'माँ-पापा से कहना ऐसी ही एक फोटो वे भी खिचवायें।' सीमा के भाव अब बदल चुके थे।

-- अल्पना हर्ष

मुफ्त में ऊपर का सफर

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

जवानी में हमें पब्ब अच्छे लगने लगे थे। दोस्त इकठे होकर बीअर पीते। बातें इतनी करते कि हर कोई यही बोलता, "यार पहले मेरी बात सुन!", यूँ ही कोई कहता, "यार उस शहर में नया पब्ब खुला है, यहां की बियर डैनमार्क की है, तो गाड़ियां उठाकर वहीं चल पड़ते। बीअर का तो बहाना होता था, मन तो बातें और सैर करने का ही होता था। कोई भी दोस्त शराबी नहीं था। फिर भी कभी कभी कुछ ज्यादा भी हो जाती थी।

ऐसा ही एक दिन था। पत्नी जी किसी काम के सिलसिले में इंडिया गई हुई थीं और जाते वक्त बहुत बड़ी लिस्ट भी दे गई थी जो काम मैंने करने थे। इनमें ही एक काम था एक कमरे में कार्पेट डालना। मैंने बहुत सुन्दर कार्पेट का आर्डर दे दिया और वे आकर कार्पेट फिट कर गए। मन खुश हो गया और पत्नी के तेवर से आजाद हो गया। उसी दिन शाम को सभी दोस्त मेरे घर आ गए। कार्पेट देखकर बधाइयां देने लगे और हंसने लगे कि अब नई कार्पेट की पार्टी तो बनती ही है। लो जी नजदीक ही एक पब्ब में डेरे डाल दिए, यहां पहले ही कई दोस्त बीयर के ग्लास लिए हुए जोर जोर से 'हा हा' कर रहे थे। क्या पीना है, क्या पीना है, कहते हुए हर कोईं बटुए से नोट निकाल रहा था। भट्टी गर्म थी, लोहा गर्म होने लगा। लो भई दोस्तो, आज इसने कमरे में नई कार्पेट पाई है, इसकी आज पार्टी हैं और सभी जोर जोर से हंसने लगे।

जब कोई पीता है, चाहे मामूली सी पीता हो लेकिन एक वक्त तो ऐसा आ ही जाता है, जब उसको ज्यादा पीनी पड़ जाती है। आज मेरा भी यही हाल था। ग्यारह बजे पब्ब बंद हुए और फिर घर आ गए। अब मेहमानों की आवभगत तो करना बनता ही था, कैबनेट खोली और कौन सी पीनी है, तो सभी ने सदर्न कम्फर्ट की ओर इशारा कर दिया, कि अब लेडीज ड्रिंक ही हो जाए। पीते पीते, हंसते हंसते और बातें करते करते काफी रात बीत चुक्की थी। दोस्त कब गुड़ नाइट कह के चले गए, कोई होश नहीं रहा और मैं सीधा बैड पे जा लेटा और लेटते ही बेसुध हो गया।

तभी बिजली कड़की, तेज रौशनी से कमरा दिन जैसा हो गया। उठा और देखा तो एक भैंसा मेरे कमरे में घुस चुका था और उस भैंसे पे बड़ी-बड़ी मूंछों वाला, मुकट पहने मुझे बहुत भारी गदा दिखा रहा था। गोबर से खराब हुई कार्पेट को देखकर मुझे गुस्सा आ गया। "ओए नामाकूल! तेरा दिमाग भी भैंसे जैसा है, देख आज ही मैंने यह नई कार्पेट डाली है और तूने खराब कर दी। मैं अभी पुलिस को टेलीफोन करता हूँ, तुझे सारे पैसे भरने पड़ेंगे।"

मुकट वाला राक्षस जैसा आदमी हा हा करता हंस पड़ा और बोला, "मैं यमराज हूँ, अब तुझे लेने आया हूँ, इस धरती पर तेरे दिन अब खतम हो गए!"

"क्या बकवास करता है तू? मैंने तो अभी बहुत काम करने हैं।" मैंने बोला। 'हा हा' करते यमराज ने मुझे कलाई से पकड़ा और एक झटके के साथ मुझे भैंसे पर बिठा लिया। कैसे दरवाजे से बाहर आया, मुझे पता ही नहीं चला, बस जल्दी ही यह पता चल गया कि अब हम हवा से बातें करते हुए आसमान की ओर उड़ रहे थे। यार तू बोलता क्यों नहीं, मैं उस राक्षस की ओर देख कर चीख सा उठा। यमराज ने पीछे की ओर मुड़कर देखा, वोह बोला नहीं, बस मुस्करा रहा था। मुझे कुछ ऐसा महसूस हुआ, जैसे मैंने उसको कहीं देखा हो।

कुछ ही देर बाद हम बादलों में से घिरी एक नगरी में लैंड हो गए। हर तरफ सोने चांदी के महल, हरे-भरे फूलों से लदे बाग, तरह-तरह के पशु-पक्षी और खूबसूरत लोग देखकर मन बाग-बाग हो उठा। जब उस ने मेरी तरफ देखा तो मुझे उसकी शक्ल हमारे गाँव के गब्बर चंद से मिलती जुलती महसूस हुई जो दो साल हुए एक एनकाउंटर में मारा गया था। ऊंची-ऊंची हँसता हुआ यमराज बोला, "तूने ठीक पहचाना है, मैं गब्बर चंद ही हूँ जो मारा गया था।" "तो तू यहां किया कर रहा है?" मैंने पूछा। वोह बोला, "जब तुझे पता चल ही गया है तो बता देता हूँ, अभी अभी यह यमराज की पोस्ट खाली हुई थी, बहुत देर से मैंने एप्लाई किया हुआ था, जिसम में सबसे तगड़ा होने के कारण सिलैक्शन में मेरी किस्मत जाग उठी और यह मेरा पसंदीदा काम है।"

अब तू मुझे ले कहाँ ले कर जा रहा है, मैने पुछा। वोह बोला," तुझे धर्मराज जी के सामने हाजर होना होगा, यहां तेरे कर्मों के हिसाब से फैसला होगा अब तो धर्म राज जी की कचौहरी बन्द है, सुबह तुझ को पहले चित्र गुपत से क्लीरेंस सर्टिफिकेट लेना पड़ेगा, सर्टिफिकेट ले कर तुमारी पेशी होगी और तेरे कर्मों के हिसाब से तुझे नरक या स्वर्ग में भेज दिया जाएगा ", अब मैं डर गया और बोला, "यार मुझे नरक की आग से बहुत डर लगता है।", यमराज बोला, "अब तू तो हमारे गाँव का ही है, तेरी मदद करना तो मेरा धर्म है, चित्रगुप्त के साथ मेरे सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं, कभी मैं उस की मदद कर देता हूँ और कभी वोह मेरी मदद कर देता है, वोह तेरी अच्छी रिपोर्ट लिख देगा तो धर्मराज जी भी तुमको अच्छी जगह भेजेंगे", मैंने कहा, 'यार मैंने तो सुना था, यहां दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है, फिर मुझे अच्छी रिपोर्ट कैसे मिल सकेगी।' वोह हँसता हुआ बोला, "भारतीय लोगों ने यहां सब कुछ भारत जैसा कर दिया है, अब यहां सब कुछ चलता है, कुछ लोगों की पहुँच तो धर्मराज जी तक भी है, वैसे भी यहां काम बहुत बढ़ गया है क्योंकि दुनियां की आबादी बहुत बढ़ गई है और भारत में लोग बेटियों को कोख में ही खतम कर देते हैं और हमें उनकी रूह लेने के लिए बार-बार भागना पड़ता है, तभी तो कोई यमराज की पोस्ट पर ज्यादा देर ठहरता नहीं है। आज तू मेरे महल में आराम कर, सुबह देखेंगे।" कहकर वह मुझे एक महल में छोड़ गया और खुद अपने भैंसे पर बैठकर आस्मां की तरफ उड़ गया।

हीरों जड़े सोने के पलँग पर रात गुजारने के बाद मैं उठा, दासियाँ हाथ जोड़े खड़ी थीं, उन्होंने मुझे गर्म पानी के हमाम में नहलाया और ब्रेकफास्ट की भरी प्लेटें मेज पर रख दीं। ऐसा खाना जिन्दगी में कभी नहीं खाया था, जी चाह रहा था कि मुझे यहीं रहने की इजाजत मिल जाए। खा ही रहा था कि यमराज आ गया। आते ही उसने मुझे चित्रगुप्त से लाइ रिपोर्ट दिखाई। रिपोर्ट बहुत बढ़िया थी। कुछ देर बाद हम दोनों धर्मराज जी के दरबार में पहुंचे। हमसे पहले एक आदमी धर्मराज जी के आगे गिड़गिड़ा रहा था, "महाराज! रहम करो, मैंने सारी उम्र कोई बुरा काम नहीं किया, फिर मुझे आग में क्यों फैंका जा रहा है?" "ले जाओ इसे और दूसरे को हाजर करो!" धर्मराज बोला और वोह आदमी रोता हुआ जा रहा था और बोल रहा था, धर्मराज तेरे राज में अंधेर है, कोई इन्साफ नहीं, बुरे लोगों को स्वर्ग मिलता है और सच्चे लोगों को नरक।

मैं खड़ा खड़ा कांप रहा था। मेरा नाम लेकर किसी ने पुकारा और मैं धर्मराज जी के आगे हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। धर्मराज जी ने मेरी फाइल देखी और हुकम दिया कि मुझे स्वर्ग में भेज दिया जाए। मन से खुश और 'धर्मराज की जय हो' के नारे लगाता मैं बाहर आ गया। यम भाई सामने खड़ा था और बोला, मेरा तो आज कोई काम नहीं है क्योंकि तेरे लिए मैंने छुटी ले ली है, अब चल तुझे सब कुछ दिखाऊं लेकिन अगर धरती पर जाना पड़ा, तो किसी को बताना नहीं, नहीं तो तुझे फिर यहां आना पड़ेगा। उसने कलाई पर कुछ नंबर डायल किये और हम दोनों आस्मान में उड़ने लगे। नीचे स्वर्ग का नजारा दीख रहा था।

मैंने पूछा, "यार! क्या यहां सभी धर्मों के लोगों के फैसले होते हैं?" तो उस ने जवाब दिया, "यहाँ सिर्फ हिन्दू सिख जैनी और बोधि ही आते हैं।" उसने एक झिल मिल करती पहाड़ी की ओर इशारा किया कि वहां इस्लाम धर्म के लोगों की जन्नत है और उसमें ही एक तरफ दोजख है। उधर ईसाई पारसी यहूदी और अन्य धर्मों के लोग जाते हैं। एक बात बताऊँ, यहां भी अब फैसले बहुत गलत होने लगे हैं, हिन्दू लोगों में बुरे लोगों को अप्सराएं मिल जाती हैं और अच्छे लोगों को नरक की आग में फैंक दिया जाता है। इसी तरह मुसलमानों में बुरे लोगों को हूरें मिल जाती हैं और अच्छे लोगों को दोजख की आग में जलना पड़ता है।

एक जगह आकर हम लैंड हो गए। गब्बर बोला, भाई जो तू सोचता है, मैं समझता हूँ और तुझे बताता हूँ कि धरती पे लोग स्वर्ग नरक की बातें करते करते अजीब अजीब खयालों में खो जाते हैं लेकिन यह भी

(शेष पृष्ठ १८ पर)

शब्द मीठे कड़वे/बनाओ तो बन जाते शस्त्र
तीखे बाण कानों को अप्रिय आदेश
हौसला ढाढ़स ऊर्जा बढ़ाते/मौत को टोककर रोक देते
उपदेशों से कर देते अमर
शब्दों का पालन
भागदौड़ भरी दुनिया से परे
सिग्नल मुहँ चिढा रहे बिन बोले
सौ बका और एक लिखा
कैसे वजन करें इंसाफ की तराजू
शब्द झूठ के/हो जाते विश्वास की कसमों में
बेवजह तब्दील चंद रुपयों की खातिर
अनपढ़ों को मालूम है शब्द बिकते हैं
पढ़े लिखे बने अंजान/वे खोज रहे शब्दकोश
जहाँ से बिन सके बिकने वाले सत्य और मीठे शब्द

-- संजय वर्मा 'दृष्टी'

जब तलक युग अर्थ-प्रधान रहेगा
आपसी सम्बन्धों में व्यवधान रहेगा
वक्त कितना भी हो जाए विकसित
तन पर भी नहीं पूरा परिधान रहेगा
उज्जड होगी तब व्यवहार की भाषा
मिलेगी न कभी मानव की परिभाषा
आशा भी मत करना कभी किसी से
मानवता का ही होता बलिदान रहेगा
अर्थ पिशाचों की होगी अपनी बोली
अंतर्मन विंधे जैसे बंदूक की गोली
बिगड़ जायेंगे व्याकरण सारे के सारे
हर पल-छिन ही बिकता ईमान रहेगा
ज्ञान उपदेश तक अज्ञानी ही भाखें
बचें न नीच करम से खुद भी माखें
झूठी प्रशंसा से ही संतृप्त हो मानव
अभिमान का ही होता भान रहेगा
सच कहता हूँ औ' सच ही लिखता हूँ
सच के खातिर नहीं कभी बिकता हूँ
मिले बहुत कम खरीदार यहाँ मितवा
जिस मंडी में झूठों का सम्मान रहेगा
सारी व्यथाएँ छलक जाती पलक पर
समझा धरोहर ही है इस फलक पर
अब आज किसे कौन समझा पायेगा
जब, खुद ही बुढ़ापा अपमान सहेगा

-- स्नेही 'श्याम'

मैं मनुष्य हूँ/मेरा भी जीवन है
मानवता का है विचार मेरा
अच्छे समाज की परिकल्पना में
आगे बढ़ना अपना धर्म मानकर
मैं कदम-कदम बढ़ाता हूँ
साहित्य के नये विचारों को लेकर
अनंत आकाश में मैं चलता हूँ
मेरे अंदर की सुलगाती आग/वह धर्म की दिविटी है
विशाल भव सागर में/मैं भी एक नाविक हूँ
हंसते-रोते जीवन में/मेरी हर पंक्ति का
अपना अलग अर्थ ढूँढ़ने का/प्रयास मैं करता हूँ ।

-- पी. रवींद्रनाथ

बहुत कोशिशें कर ली कि दूर चला जाऊं
पर दिल से क्यूँ दूर नहीं जा पाता
वादे जो किये थे अकेले में तुझसे
उन वादों को ठुकरा मैं क्यूँ नहीं पाता
हाँ यह सच है कि/किस्मतों पे हक नहीं हमारा भी
बैठे थे जो अग्नि की वेदी पे साथ
हमने तो सब कुछ है उन्ही पे हारा
क्या हुआ जो आंसू बहते हैं रात दिन
अब तो अपने आंसुओं पे भी
हक नहीं हमारा
अब तो बस एक ही कोशिश है
अपने चेहरे से वो नूर जला जाऊं
तुझसे दूर बहुत दूर चला जाऊं
पर चाहकर भी दूर नहीं जा पाता

-- महेश कुमार माटा

बिटिया! जरा संभल कर जाना/लोग छिपाये रहते खंजर
गाँव नगर अब नहीं सुरक्षित/दोनों आग उगलते
कहीं कहीं तेजाब बरसता/नाग कहीं पर पलते
शेष नहीं अब गंध प्रेम की/भावों की माटी है बंजर
युवा वृक्ष कांटे वाले हैं/करते हैं मनभाया
ठूंठ हो गए विटप पुराने/मिले न शीतल छाया
बैरिन धूप जलाती सपने/कब सोचा था ऐसा मंजर
तोड़ चुकीं दम कई दामिनी
भरी भीड़ के आगे
मुन्नी गुड़िया हुईं लापता
परिजन हुए अभागे
हारी पुलिस न वे मिल पायीं
मिला न अब तक उनका पंजर

-- त्रिलोक सिंह ठकुरेला

मैं प्यार हूँ/जी हाँ मैं प्यार हूँ
दिल मेरा बसेरा है/पर आज मैं भटक रहा हूँ
यहाँ से वहां वहां से यहाँ/खा रहा हूँ दर दर की ठोकर
किसी 'दिल' की तलाश में/जहाँ मैं पनाह ले सकूं
पर आज जैसे हर इंसान अपने दिल पर
'हाउस फुल' का बोर्ड लगाकर अपने में मस्त है-
दिल में नफरत है/झूठ के अफसाने हैं
किसी को धोखा फरेब देने को
हजारों तरकीबें हजारों बहाने हैं
कुछ झूठे अरमान हैं
कुछ खुदगर्जी के सामान हैं
और मैं दे रहा हूँ दस्तक
दिल के किसी कोने में/थोड़ा सा सुकून पाने के लिए

-- जय प्रकाश भाटिया

ए चाँद! रोज आते हो गली में
खिड़की से झाँककर
दिल में लहरें उठाकर निकल जाते हो
तौबा ये इश्क तुम से मेरा
कहीं चौखट पर मेरी
मेरी जान न ले ले

-- शिवानी शर्मा, जयपुर

सीढ़ियाँ यू ही नहीं बनी होंगी
कोई तो होगा जिसने/सोच-सोचकर मुकाम बनाये होंगे
लोग तो हार जाते हैं मजाक बनते ही
लोग छोड़ देते है, किसी के हंसते ही
कोई तो होगा, जिसने हौसले बढ़ाये होंगे
तेरा हंसना किसी को दर्द देता है
तेरा रोना किसी को सूकून देता है
किसी ने जरूर मरहम लगाये होंगे
गिर जाना और उठ जाना तेरा
किसी की तरफ आस से तकना तेरा
किसी ने तो अंगूली पकड़ चलाये होंगे
यूँ तो हर कोई नादान आता है
और धीरे-धीरे मुकाम पाता है
किसी ने तो कच्चे घड़े पकाये होंगे/सपने सजाये होंगे

-- हृदय जौनपुरी

त्यागकर तृणवत् स्वदेही, आत्म हो जाती विदेही
यन्त्र वत उड़ कर सनेही, दूर से तकती विमोही
लौट कर फिर आ न पाती, सूक्ष्म हो ना क्षुद्र चहती
देख सब का भाव पाती, आत्म-भव गोते लगाती
हो असीमित सीम को तर, त्याग भौतिक भित्ति स्तर
भ्रान्तियों का विपुल कलरव, लुभाता ना चित्त चितवन
त्राण की तरजों में छलकी, पलक मूँदे चली पुलकी
स्मृति जग की विहाती, सजन नव जगपति सुहाती
सृष्टि तारक की तरंगें,
ले चलीं बन सखी संग में
याद प्रिय 'मधु' नाद भव-नद,
बन बधु आत्मा सिधाती
बन वधू परमात्म धाती

-- गोपाल बघेल 'मधु'

चंद शब्दों में कोई समाहित कर देता संसार
चंद शब्दों से कोई प्रभावित कर देता अपार
साहित्य शिल्पी चंद शब्दों से मन हर लेता
प्रबल वक्ता चंद शब्दों से बन जाता है नेता
चंद शब्द व्यक्ति का व्यक्तित्व बता देते हैं
चंद शब्द अनगिनतों को लड़ा देते हैं
चंद शब्द तारीफ के फुला देते हैं
चंद शब्द किसी को रुला देते हैं
चंद शब्द पाते श्रोताओं की तालियाँ
चंद शब्दों से सुननी पड़तीं गालियाँ
बोलो सोच समझ के चंद शब्द तुम
नाम बड़ा करते हैं या,कर देते खुशियाँ गुम
इसलिए भाई चंद शब्द सोच समझ के बोलो
जहाँ दिमाग न काम करे, वहाँ न मुँह खोलो

-- नवीन कुमार जैन

तुने मेरा निस्वार्थ प्रेम ठुकराया
सिर्फ इसलिए कि मेरा प्रेम सिर्फ प्रेम था
पैसा न था/दोष तुम्हारा भी नहीं
भावनाएँ तो सिर्फ
होती है भावनाएँ
उससे पेट तो नहीं भरता
ऐशो-आराम तो नहीं मिलता !

-- रूपेश कुमार

शुभ स्वागतम् प्रधानमंत्री जी!

शरद सुनेरी

आइए प्रधानमंत्री जी! आपका स्वागत है। शुभस्वागतम्! आज आपका आगमन मेरे शहर की सड़कों का चित्र और चरित्र बदलने जा रहा है। किसी कुरूप गणिका की तरह उत्छृंखल-सी दिखनेवाली ये सड़कें आज किसी पतिव्रता की भाँति चमक रही हैं। कल तक इनके गड्ढे न जाने कितनी आत्माओं को उनके से अलग करके परमात्मा से मिलन का माध्यम बन गए थे। आज आपका आगमन आत्मा-परमात्मा मिलन में बाधक बन जाएगा। एक ओर तो आप 'सबका साथ-सबका विकास' की बात करते हैं, दूसरी ओर आपसे हमारा इतना सुख भी नहीं देखा जा रहा? हम कहाँ जाकर मरेंगे? मैं अक्सर एक कामना लेकर इस सड़क से गुजरता कि कभी किसी दिन इसके गड्ढे मेरी क्षुद्र आत्मा को परमात्मा से मिला देंगे। पुलिस से नजर बचाकर ट्रैफिक सिग्नल तोड़कर धड़धड़ाता हुआ बाईक से परमात्मा की ओर भागता कि एक दिन जब ये नश्वर शरीर इन गड्ढों में समा जाएगा, तो नगर पालिका इस अदने-से व्यंग्यकार की स्मृति में लिखवा देगी- 'शरद सुनेरी मार्ग।' लेकिन आपके आगमन ने मेरे सपने पर पानी फेर दिया। मेरी मूर्ति लगने की कल्पना मैंने नहीं की, क्योंकि यह काम कोई और महिला करवा चुकी है।

बरसाती नाले और नदियाँ कैसे उफनते हैं, मुझे नहीं पता। किन्तु बरसाती गड्ढे कैसे उबाल मारते हैं यह मुझे तब आसानी से पता चल जाता था, जब बगल से कोई वाहन मेरे चरित्र पर कीचड़ उछालता हुआ कालिख थोप जाता था। आपने कीचड़ में कमल खिलते देखा है, पर कमल जैसे मुखड़े को कीचड़ होते नहीं देखा होगा। कैसे कमलप्रेमी हैं आप? क्या कमल का महत्व आपके किए मात्र चुनाव जीतने तक ही था क्या?

आप नहीं जानते, आपके आगमन से भरनेवाले सड़कों ये के गड्ढे कितने इंजीनियरों और अधिकारियों के बँगले बनवा देंगे। आपका हर करीब को घर देने का सपना भले ही कभी पूरा न हो, लेकिन आप इसी तरह आते रहे तो मेरे शहर में अधिकारियों के बंगलों की संख्या जरूर बढ़ जाएगी।

मेरा इतना बड़ा शहर, जहाँ कुछ भी दर्शनीय नहीं। वहाँ ये गड्ढे ही तो उसकी आन-बान-शान-पहचान और जान थे, हमारा अभिमान थे। आपने हमारा वह सम्मान भी हमसे छीन लिया। कैसे प्रधानसेवक हैं आप? 'मन की बात' कहते तो हैं, पर मन की बात समझते तक नहीं? हमें गड्ढे भरी सड़क पर चलने की आदत हो गई थी। स्पीड ब्रेकरों की जरूरत ही नहीं पड़ती थी। क्या अब सपाट सड़कों पर दुर्घटनाएँ नहीं बढ़ जाएगी। बुरा न मानिएगा, पर आगे से इन सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं की जिम्मेदारी आप पर आएगी।

फिर भी आप हमारे शहर में आ रहे हैं, चिलचिलाती हुई धूप में इसी सड़क के किनारे लगे हुए पेड़ की ओट से छिपकर, हम चीथड़े लपेटे हुए भारत को विकास के पथ पर अग्रसर होता देख लेंगे।

शुभ स्वागतम् प्रधानमंत्री जी! ■

म्हारे गुटखेबाज किसी पिकासो से कम न हैं

सुमित प्रताप सिंह

अपने देश में कला की तो कोई कद्र ही नहीं है। आए दिन कोई न कोई ऐसा सरकारी फरमान जारी होता रहता है, जो कला का मानमर्दन करने को तत्पर रहता है। अब गुटखेबाज कलासेवी जीवों को ही ले लीजिए। कलासेवा की खातिर कड़ी और जहरीली चेतावनी का सन्देश पढ़ने के बावजूद भी अपने मुँह में नुकसानदायक जहरीला गुटखा गटकने वाले महान जीवों का त्याग भला वे लोग कहाँ समझेंगे, जिन्होंने कभी भी गुटखा छूने का साहस ही न किया हो। गुटखा को मुँह में धरकर पिच-पिच की ध्वनि का घोष करते हुए दफ्तर से लेकर पुरातत्व के महत्त्व की इमारत तक को पिचकारी मारकर भाँति-भाँति प्रकार की कलाकृतियों का निर्माण करनेवाले कलाकारों के परिश्रम का कुछ तो ध्यान रखना चाहिए।

सरकारी-गैरसरकारी दफ्तरों की सीढ़ियाँ, दरवाजे व शौचालयों की सुंदरता इन कलासेवकों के दम पर ही टिकी हुई है। इनके द्वारा ऐतिहासिक इमारतों पर गुटखा खाकर मुँह में गंभीर गुटखा मंथन के उपरांत उपजे अनोखे रंग के द्रव्य द्वारा ऐसी अनोखी कलाकृतियों का निर्माण किया जाता है, जिन्हें देखकर बड़े-बड़े चित्रकार भी दाँतों तले उँगलियाँ दबाने को विवश हो जाते हैं। देशी-विदेशी पर्यटक तो इन कलाकृतियों को देखकर इन्हें निर्मित करने वाले गुटखेबाज कलासेवियों की कलाकारी के आगे नतमस्तक हो उठते हैं।

कोई माने या न माने लेकिन घूमकर वापस लौटने पर पर्यटकों के मन-मस्तिष्क पर ऐतिहासिक इमारतों अथवा स्थलों की छवि बेशक न रहे पर गुटखेबाज कलासेवियों द्वारा प्रयत्नपूर्वक निर्मित की गईं अद्भुत कलाकृतियों की मनमोहक छवि गहराई से पैठ बना लेती हैं। यदि इन कलासेवियों की कला की प्रशंसा एक वाक्य में करें तो 'म्हारे गुटखेबाज चित्रकारी में किसी पिकासो से कम न हैं'।

गुटखेबाज कलासेवियों द्वारा विकसित की गई इस अनोखी भित्ति चित्रकला को संरक्षित करने की ओर हमें गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। यदि सरकार इस पुनीत कार्य को करने में उदासीनता दिखाती है तो स्वयंसेवी संगठनों एवं भले लोगों को मदद के लिए आगे बढ़कर आना चाहिए। वरना ऐसी अद्भुत भित्ति चित्रकला के विलुप्त होने की पूरी-पूरी संभावना है। इसके विलुप्त होने से गुटखेबाज कलासेवियों द्वारा सालों-साल से निरंतर किया जा रहा कठोर परिश्रम माटी में मिल जाएगा। इसलिए गुटखा, पान और तंबाकू सेवन पर प्रतिबंधरूपी कटार चलाकर इस कला को नष्ट करने का प्रयास बहुत ही निंदनीय है और हम सभी कलाप्रेमी एक मत से इस फैसले की कड़ी से कड़ी निंदा करते हैं। ■

(पृष्ठ १७ का शेष)

...ऊपर की सैर

एक धरती जैसा प्लैनेट ही है, सिर्फ यहां अपने अपने कर्मों के हिसाब से फैसले होते हैं, या कह लें कि सारी जिन्दगी के कर्मों का फैसला इसी हैड ऑफिस में होता है। इसी तरह दूसरे प्लैनिटों या ऐस्टरॉयड पर दफ्तर बने हुए हैं। एक प्लैनेट से दूसरे प्लैनेट पर जाने के लिए रास्ते बने हुए हैं जो हमें भी दिखाई नहीं देते, इनको गोपनीय रखा जाता है। अब ये नए प्लैनेट भी एलिअंज से भरने लगे हैं, इसीलिए काम बहुत बढ़ गया है। काम का बोझ तो बढ़ रहा है, लेकिन खर्चे कम किये जा रहे हैं क्योंकि मार्ज यूपीटर और दूसरे प्लैनिटों को रास्ते बनाने हैं। यह इसलिए कि धरती पर जगह कम पड़ गई है और लोग उधर जाने शुरू हो जाएंगे।

काम ज्यादा बढ़ने के कारण यहां गलत फैसले हो जाते हैं, मसलन, धरती के एक शख्स को अपने पर नए बॉस बहुत दुःख देते थे, उस ने भगवान् को पत्र लिखा और अर्ज की कि वह बहुत दुखी है और इस काम से उसका छुटकारा दिला दे। दो साल तक कोई जवाब नहीं आया, जब तक उसका काम बहुत अच्छा हो गया क्योंकि नए बॉस आ गए थे। उस ने फिर पत्र लिखा कि भगवान् उसकी अर्जी को अब इग्नोर कर दे क्योंकि वह अब सुखी था। भगवान के दफ्तर से उसको एक दिन खत मिला कि उन्हें खेद है कि जवाब देने में देर हो गई लेकिन उसकी अर्जी मंजूर हो गई है और उसको काम से छुट्टी दिला दी गई है। अब यह शख्स रो रोकर अपनी दूसरी चिट्ठी का इंतजार कर रहा है।

एकदम गब्बर चंद का चेहरा कुछ अजीब सा हो गया, कुछ देर बाद मुझे बोला, "भाई! एक और गलत फैसला हो गया है, जो मैसेज मुझे दिया गया था, उस पे किसी और का नाम लिखना था और लिख गया तेरा। भाई, जल्दी से भैंसे पर बैठ, ऐसा न हो तेरे शरीर को लोग जला दें, नहीं तो तू खामखाह भटकता रहेगा।"

यूँ ही मैंने भैंसे पर बैठकर आँखें बंद कीं। जब आँखें खोलीं तो मैं अपने बैड पे करवटें ले रहा था और पिछली रात के नशे से सर चकरा रहा था। सर दबाते दबाते मैंने कार्पेट की और देखा जो बिलकुल साफ थी। खुश होकर मैं उठा और चाय बनाने लगा। ■

पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता

अवधेश कुमार ‘अवध’

भारत बहुआयामी विविधता का सामासिक संगम है। तकरीबन १७१ भाषाओं और ५४४ बोलियों के साथ १२५ करोड़ आबादी वाला हमारा देश कश्मीर से कन्याकुमारी एवं कच्छ से अरुणाचल तक फैला हुआ है। संविधान सभा ने संविधान बनाते समय भारत के दक्षिणी और उत्तर-पूर्वी परिक्षेत्र को भाषाई आधार पर अहिन्दीभाषी मानते हुए ‘ग’ श्रेणी में रखा था, किन्तु व्यावहारिक तौर पर आज स्थिति पूर्णतया भिन्न है।

भारत के पूर्वोत्तर भाग में असम, अरुणांचल, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा व नागालैंड हैं जिनको त्रिपुरा के पत्रकार ज्योति प्रसाद सैकिया ने सात बहनों की संज्ञा दी है तथा इसमें आठवाँ राज्य सिक्किम और पश्चिम बंगाल के कुछ क्षेत्र आते हैं। इन राज्यों की विदेशी सीमायें तिब्बत, भूटान, चीन, म्यांमार और बांग्लादेश से मिलती हैं, जो निःसंदेह गैर हिन्दी राष्ट्र हैं। पूर्वोत्तर का विस्तार देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का ७.९ प्रतिशत में तथा इसकी आबादी देश की लगभग ३.२१ प्रतिशत है। यहाँ की ५२ प्रतिशत भूमि वनों से आच्छादित है तथा ४०० समुदायों के लोग २२० भाषायें बोलते हैं, इसलिए पूर्वोत्तर को भारत की सांस्कृतिक प्रयोगशाला कहना ही उचित होगा।

यह प्रमाणित हो चुका है कि सभी भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत है, जो देश, काल, परिस्थिति और वातावरण को देखते हुए सैकड़ों भाषाओं, उप-भाषाओं एवं बोलियों का स्वरूप धारण करती गई। किसी भाषा के प्रसार के लिए आवश्यक है कि उसकी लिपि सरल हो, व्याकरण स्पष्ट हो, उस क्षेत्र में रोजगार की प्रबल सम्भावनाएँ हों, आवागमन सुचारु हो तथा विविध भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की क्षमता हो। देवनागरी लिपि से सुसज्जित हिन्दी दुनिया की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह संस्कृत से बनी सबसे सशक्त भाषा है, जिसमें तकरीबन १८ उपभाषायें और सैकड़ों बोलियाँ निहित हैं। भारत के हर भू-भाग में हिन्दी की सक्षम उपस्थिति देखी जा सकती है। मध्य भारत इसका केन्द्र है जहाँ से परितः फैल रही है।

पूर्वोत्तर और मध्य भारत के बीच आवागमन का इतिहास बहुत पुराना है। यहाँ के लोगों के साथ धार्मिक, सांस्कृतिक एवं विवाहेतर सम्बंध भी रहे। रामायण में वर्णित गुरु वशिष्ठ का आश्रम आज भी गोवाहाटी में देखा जा सकता है। महाभारत के महायोद्धा भीम भी यहाँ आये थे जिन्होंने मणिपुर की हिडिम्बा से विवाह किया था। हिडिम्बा पुत्र घटोत्कच का पराक्रम अद्वितीय है। मणिपुर में ही भगवान विष्णु का अति प्राचीन मंदिर एवं श्रीकृष्ण व जामवंत से जुड़ी स्यमंतक मणि की कथा प्रचलित है। ब्रहमपुत्र के आँचल में सदियों पुराना माँ कामाख्या का मंदिर और वहाँ हर वर्ष लगने वाला अम्बूबाची मेला भारत ही नहीं अपितु विदेशों से भी दर्शनार्थियों को खींच लाता है। शिवसागर के शिव मंदिर को भारत में सबसे ऊँचाई पर होने का गौरव प्राप्त है। तेजपुर की राजकुमार उषा और द्वारिका (गुजरात) के राजकुमार अनिरुद्ध की प्रेम कथा सर्वविदित है। अरुणाचल का परशुराम मंदिर पौराणिक काल तथा त्रिपुरा का नीरमहल मध्यकालीन स्थापत्य का प्रतीक है। मेघालय में अवस्थित माँ जयन्तिया मंदिर भी प्राचीन कालीन आवागमन को पुष्ट करता है। अंग्रेजों ने जब चाय बागान का विस्तार करना शुरु किया तो उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा व उड़ीसा से मजदूरों को लाकर बसाया गया जो चाय जनजाति के नाम से आज भी जाने जाते हैं। असमिया जाति, सभ्यता व संस्कृति के प्राणतत्व श्रीमंत शंकर देव के पूर्वज उ.प्र. के कन्नौज से आकर बसे थे।

यद्यपि हिन्दी न्यून मात्रा में यहां पहले से ही विद्यमान थी किन्तु इसका वास्तविक पदार्पण सन् १९३४ में अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ की स्थापना के सिलसिले में महात्मा गाँधी के असम आने के साथ हुआ। एक आह्वान के जवाब में गड़मुड़ सर्वाधिकारी श्री श्री पीताम्बर देव गोस्वामी ने असम में हिन्दी सिखाने वाले व्यक्ति की माँग की। गांधी जी ने सहर्ष स्वीकार करते हुए संतमय तेजोमय तपस्वी बाबा राघवदास को हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु असम में भेजा। महात्मा श्रीमंत शंकरदेव और उनके समकालीन रचनाकारों ने ब्रजभाषा में रचना करके लोगों को आकृष्ट तो किया ही, श्रीमंत शंकरदेव ने पूर्वोत्तर में सबसे अधिक बोली जाने वाली असमिया भाषा में रामायण और श्रीमद्भागवत गीता का अनुवाद किया। हिन्दी में रचित रामचरित मानस, प्रिय प्रवास, कामायनी, बिहारी सतसई, सूरसागर, विनय पत्रिका, चालीसे एवं आरतियाँ हिन्दी को पूर्वोत्तर में जन-जन तक पहुँचाने में अग्रणी रहीं। राजस्थान से आए मारवाड़ी अपने साथ हिन्दी लाये और काम करने वाले लोगों के साथ साझा करते रहे।

देवनागरी लिपि को भारत की अधिकांश भाषाओं ने अपनाया और यह सत्य है कि समान लिपि होने पर कोई भी भाषा आसानी से सीखी जा सकती है। अरुणाचल प्रदेश में मोनपा, मिजी व अकाकी की लिपि देवनागरी है इसलिये यहाँ हिन्दी पूरी तरह व्याप्त है। असम प्रान्त की तीन भाषायें मिरी, मिसमि तथा बोडो (पहले बोडो की लिपि चीनी थी) की लिपि देवनागरी है। नागालैंड में अडागी, सेमा, रेग्मा चाखे तथा नेपाली भाषायें देवनागरी में लिखी जाती हैं। सिक्किम में नेपाली, लेपचा, भड़पाली तथा लिम्बू को देवनागरी में लिखा जाता है। संस्कृत के तत्सम रूप से बांग्ला तथा तद्भव रूप से असमिया भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। पूर्वोत्तर की अधिकांश भाषाओं की लिपि देवनागरी व संस्कृत से पैदा होने के कारण हिन्दी के बहुत निकट हैं।

मणिपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से सन् १९२८ से तथा मणिपुर हिन्दी परिषद् द्वारा १९३८ से हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य चल रहा है। पेशे से इंजीनियर श्री रमेश सिंघा ने यह बताया कि बिश्नुप्रिया समुदायों में रामलीला का आयोजन होता रहता है जिसके संवाद अधिकाधिक भोजपुरी में बोले जाते हैं। कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा हिन्दी का विरोध करने के बावजूद भी लाइयुम ललित माधव शर्मा, श्री द्विजमणि देव शर्मा, कला चांद शास्त्री तथा एन तेम्बी सिंह जैसे लोगों के प्रयास से हिन्दी फल फूल रही है।

सन् १९७१ ई० में पूर्वोत्तर के आठों राज्यों में हिन्दी के विकास के लिए केन्द्रीय संस्था के रूप में पूर्वोत्तर परिषद् (नॉर्थ इस्टर्न कौंसिल) की स्थापना की गई। इसके तीन केन्द्र गोवाहाटी, शिलॉग और दीमापुर में खोले गये। सुगम संचालन हेतु गोवाहाटी केन्द्र से असम, अरुणांचल और सिक्किम को जोड़ा गया। शिलॉग से मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम तथा दीमापुर से नागालैंड व मणिपुर जोड़े गये। मिजोरम में डॉ. इंजीनियरी ने हिन्दी-मिजो शब्दकोश लिखकर अभूतपूर्व कार्य किया है। श्री आर. एल. थनकोया तथा श्री मुआनो का योगदान सराहनीय है। नागालैंड से प्रत्येक वर्ष ३० हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण के लिये आगरा जाते हैं तथा वापस आकर हिन्दी राजदूत के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ तेजी से विकसित हो रही नागामीज भाषा मूलतरू हिन्दी, असमीया, नागा, बांग्ला और नेपाली का मिश्रण है जिसकी कोई लिपि नहीं। बढ़ई का काम करने वाले काइल मेरेन को हिन्दी बोलने में सहजता होती है। औद्योगिक शहर दीमापुर में हिन्दी के बिना जीवन दूभर है। मेघालय में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की ओर से कक्षा ५ से ८ तक की पुस्तकें तैयार कर ली गई हैं। शिलॉग (शिवलिंग) में रहकर डॉ अकेला भाई, डॉ मनोज कुमार, श्रीमती सुस्मिता दास व डॉ अनीता पांडा साहित्यिक दल-बल के साथ हिन्दी को नव आयाम दे रहे हैं।

त्रिपुरा, अरुणाचल और सिक्किम में हिन्दी की पहुँच घर-घर में ही नहीं है बल्कि अरुणाचल की विधानसभा में हिन्दी में सवाल तक पूछे जा रहे हैं। बी. बरुवा कालेज में हिंदी के प्राध्यापक अरविंद शर्मा के अनुसार हिंदी असम की ब्रह्मपुत्र घाटी को बराक घाटी से जोड़ती है। असम के डिमा हसाऊ जिले का मुख्य शहर हॉफलॉग के जनजातीय लोग हॉफलॉगी हिन्दी बोलते हैं जो निश्चित रूप से हिन्दी के लिए शुभ लक्षण है। तिनसुकिया को तो दूसरे बिहार के रूप में भी जाना जाने लगा है। डॉ रुणु बरुवा, जयश्री शर्मा, डॉ निशा गुप्ता, ॠतु गोयल, विमला शर्मा, मदन मोहन सिंह, दीपिका सुतोदिया, रीता सिंह, डॉ. नथमल टिबरेवाला, डॉ राजेन्द्र परदेशी, डॉ राजकुमार जैन, रविशंकर सिंह तथा प्रदीप मरोड़िया का प्रयास सराहनीय है। पूर्वांचल प्रहरी, दैनिक पूर्वोदय, प्रातः खबर, दैनिक प्रेरणा भारती

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

जन गण की आशाएं भी है, जन मन की पीड़ाएं भी हैं
दोनों की अपनी परिभाषा, दोनों की अपनी मजबूरी
हर कोई जन मन के रथ को, मन मर्जी से हाँक रहा है
चढे मुखौटों के भीतर से, जन गण सबको झाँक रहा है
जाने कितनी और बढेगी, जन की गण की है जो दूरी
कल्पित चेहरे कल्पित बातें, बदली बदली परिभाषाएँ
भ्रमित भ्रमित से पथपर्दर्शक, ओझल ओझल हुई दिशाएँ
सत्तासुख की उडी धूल ने, ढकी रोशनी पूरी पूरी
दोष लगाया है दीपक पर, तेज हवा ने अंधियारों का
कैसे उत्तर देगा बोलो, जन मन दोनों के नारों का
जीवन बिना हवा नामुमकिन, दीप बिना दुनियाँ बे नूरी
राजनीति के गलियारों की,
अभिलाषाएं मचल रही हैं
जन से गण के रिश्तों की नित
परिभाषाएँ बदल रही हैं
सत्ता से जन की सत्ता की
आस सदा ही रही अधूरी

-- सतीश बंसल

साथी साथ निभाऊंगा मैं, जीवन राग मिलाऊंगा मैं
अधरों पर मुस्कान सदा हो, जीवन में गुणगान सदा हो
ऐसा मीत बनाऊंगा मैं, साथी साथ निभाऊंगा मैं
जीवन में इक फूल खिला हो, खुशियाँ आए दूर गिला हो
पुनः उजाला लाऊँगा मैं, साथी साथ निभाऊंगा मैं
अब जीवन में ज्ञान सदा हो, हर दिल में सम्मान सदा हो
ऐसी रीति बनाऊंगा मैं, साथी साथ निभाऊंगा मैं
तुमसे कोई नहीं खफा हो, अब जीवन में सदा वफा हो
ऐसा रंग जमाऊंगा मैं, साथी साथ निभाऊंगा मैं
जीवन मैं अब प्यार भरा हो, दर्द नहीं अब कभी जरा हो
सारे रंज मिटाऊंगा मैं, साथी साथ निभाऊंगा मैं
खुशियों का भंडार भरा हो, सपनों का संसार हरा हो
पूरा ख्वाब कराऊंगा मैं,
साथी साथ निभाऊंगा मैं
तूफानों के संग लड़ा हो
हर कोई अब संग खड़ा हो
ऐसी आस जगाऊंगा मैं
साथी साथ निभाऊंगा मैं

-- दिनेश कुशभुवनपुरी

बीजू के छक्के

दिल्ली वालों ने किया है कुछ पश्चात्ताप
कजरी को दे वोट जो किया गया था पाप
किया गया था पाप, विकास सब पीछे छूटा
नौटंकी नित नई देख दिल उनका टूटा
'बीजू' कोई नहीं उड़ायेगा अब खिल्ली
फिर विकास के रस्ते पर निकलेगी दिल्ली

कजरी जी फिर रो रहे ईवीएम को हाय
बटन दबाओ कोई भी, मत बीजेपी को जाय
बीजेपी को जाय, बुद्धि ने चक्कर खाया
समझ नहीं कुछ आय, करूँ क्या अब मैं भाया
कह 'बीजू' झाड़ू की इज्जत सारी बिगड़ी
देखना है आत्महत्या ना कर डाले कजरी

-- बीजू ब्रजवासी

बिन तुम्हारे जिंदगी परिहास है
शेष अब तो आस ही बस आस है
भेजते थे तुम कभी जो खत हमें
छल रही है आज वो ही लत हमें
अब नही बाकी कोई उल्लास है
आँसुओं से नम हुई मन वादियाँ
बढ़ रहीं हैं बीच अपने दूरियाँ
दग्ध मन में जल रहा अहसास है
सोचती हूँ हौंसले कायम रखूँ
याद तेरी दिल में मैं हरदम रखूँ
पतझड़ों के बाद फिर मधुमास है

-- अनहद गुंजन गीतिका

बनी है जान की आफत, कहूँ पर प्राण की प्यारी
लगी थी वो बड़ी सुंदर, असल में यार बीमारी
सवेरे ही सवेरे गूंजते हैं बोल कानों में
खड़े होकर करो पतिदेव जी झाडू की तैयारी
सुना है मालकिन होती हमारे अर्ध अंगों की
यहाँ उलटी बही गंगा, हुई पूरे पे वो भारी
कभी जो सोचता हूँ यार शादी ना करी होती
करी जब से हुआ तन्हा,
बिगड़ी जिंदगी सारी
सुमन सोचो बला क्या ये?
दवा इसकी कहाँ होगी
हरी मिर्ची की जैसी है,
नमक जैसी लगे खारी

-- नवीन श्रोत्रिय 'उत्कर्ष'

मुहब्बत में गले मिलती गमों से
धड़कती आज सबकी धड़कनों से
जहाँ सारे हुआ है नाम रोशन
बहे आँसू बहुत पर लोचनों से
रिझाया दर्शकों को फिल्म से जब
दिखे तू चाँदनी सी महफिलों से
नशे में डूब अपने को भुलाया
कभी फिर से न उड़ पाई परों से
हमेशा याद में बसती सभी के
सजाया शायरों ने जब सुरों से
सखा ये जाम तेरा हो गया है
छूटती कैसे मगर तू साँकलों से
हवाएँ गुनगुनायेंगी तुझे जब
गूँजे मीना सदा इन बादलों से

-- डॉ मधु त्रिवेदी

थोक में गर नहीं तो फुटकर दे
चंद खुशियाँ मेरे मुकद्दर दे
जिस्म से अब थकान बोलती है
आज खारों का सही बिस्तर दे
मैंने शाखों पे उड़ लिया काफी
अब उड़ानों को मेरी अंबर दे
यूँ न मुझको हथेलियों में समेट
दे सके गर तो मुझको पैकर दे
ये फकीरी तो बख्श दी मौला
हाथ फैला सकूँ वो इक दर दे

-- पूनम पांडेय

कि किस्मत आजमाना चल रहा है
रवायत का निभाना चल रहा है
जो रुठे ख्वाब हैं आंखों से मेरी
उन्हें अब तक मनाना चल रहा है
बड़े ही सर्द हैं जज्बात दिल के
वफा की लौ दिखाना चल रहा है
बहुत जागी हैं उम्मीदों की आँखें
सुकूँ दे कर सुलाना चल रहा है
बरस जाते हैं आबे चश्म बरबस
गमे सावन सुहाना चल रहा है
मिली उल्फत में कब मंजिल किसी को
लिए हसरत दिवाना चल रहा है
गजल बनती है मेरी अब तुम्ही से
तुम्ही को गुन गुनाना चल रहा है
तुझे खोकर 'तनुज' बेजार दुनियां
गमों का कारखाना चल रहा है

-- सतीश मैथिल 'तनुज'

तन्हा रहे ताउम्र अपनों की भीड़ में
एक घर तलाशते गैरों की नीड़ में
वक्त के आइने में दिखा ये तमाशा
खुद को निहारा पर दिखे न भीड़ में
एक अनदेखी जंजीर से बँधा है मन
तड़पे है पर लहू रिसता नहीं पीर में
शानों शौकत की लम्बी फेहरिस्त है
हर साँस कर्जदार पर गिनती अमीर में
रूबरू होने से कतराता है मेरा मन
जंग देख न ले जग मुझ औ जमीर में
पहचान भी मिटी सब अपने भी रूठे
पर जिन्दगी रुकी कफस के नजीर में
बसर तो हुई मगर कैसी ये जिन्दगी
हँसते रहे डूब के आँखों के नीर में
सफर की नादानियाँ कहती किसे 'शबनम'
कमबख्त उलझी जिन्दगी अपने शरीर में

-- डॉ जेन्नी शबनम

दोहे

खान-पान की कमी से, रोज बिमारी होय।
खाना खाओ समय पर, रोग कभी ना होय।
रात को सोना जल्दी, सुबह करो ना देर।
वरना कोई रोग अब, लेगा तुमको घेर।।
हाथ खाने से पहले, मुँह खाने के बाद।
निश-दिन धोना सीख लो, जीवन हो आबाद।
मेहनत करना सीखिए, रोग रहे तब दूर।
जीवन हो आनंदमय, काया सुख भरपूर।
रोना-धोना छोड़ के, सीखो करना माफ।
रोग 'लाल' उसी दिन से, हो जायेगा हाफ।
व्यस्त रहो मस्त रहो, फटके ना तब रोग।
'लाल' संग-संग मिल के, जीवन को लो भोग।
हरा साग सब्जी खाओ, रहो सुखी दिन रात।
निश दिन रोग दूर रहे, 'लाल' मिले सौगात।।

-- लाल बिहारी लाल गुप्ता

ईवीएम का व्यवहार

विनय कुमार तिवारी

उन दिनों बैलेट पेपर से वोटिंग का जमाना था, हम भी बूथ-बूथ मजिस्ट्रेट बने फिर रहे थे। तब नौकरी के भी शुरुआती दिन थे, तो ठसक भी था। ऐसे ही वोटिंग के दिन मजिस्ट्रेटी करते-करते जब एक बूथ पर पहुँचे, तो दिन के लगभग ग्यारह बज रहे होंगे। पीठासीन अधिकारी जी ने बीस-पच्चीस पर्सेंट वोटिंग बताया था और मतदाताओं की कोई लाइन-वाइन भी वहाँ नहीं लगी थी। मतलब एकदम सुचारू ढंग से परिपूर्ण शान्तिपूर्ण दृश्य था। मैं इत्मीनान के साथ दूसरे मतदान केंद्र की ओर निकल पड़ा था।

करीब एक घंटे बाद मैंने फिर इसी मतदान केंद्र की ओर रुख किया था। उस बूथ की ओर जाते हुए मुझे रास्ते में उसी बूथ की ओर से लौटते हुए एक नेता जी अपने लाव-लश्कर के साथ दिखाई पड़े थे। खैर, मैं बूथ पर पहुँचा बूथ पर शांतिपूर्ण सन्नाटा था, पीठासीन अधिकारी ने अबकी बार मत-प्रतिशत सत्तर बताया! मैं इस मत-प्रतिशत से उचककर पीठासीन से बोल बैठा, "एक घंटे में ही मतप्रतिशत पच्चीस से सत्तर कैसे पहुँच गया, जबकि यहाँ मतदाताओं की लाइन भी दिखाई नहीं दे रही?" इस पर पीठासीन ने बताया कि मतदाता लोग मत डालकर चले गए हैं, हमें कोई समस्या नहीं है।

पीठासीन की बातों से मैं विचलित-सा हो गया था, निश्चित रूप से अचानक बूथ से लौटते नेता जी ही बढ़े मत-प्रतिशत का कारण थे। मैं समझ नहीं पा रहा था। शायद उनके कुर्ते की जेब में ही मतदाता भरे रहे हों। तब वे नेता जी मुझे यूटोपिया के गुलिवर जैसे विराट पुरुष नजर आने लगे थे और वोटर सहित हम स्वयं नेता जी के जेब में समाने वाले बौने नजर आए!

तब मैं उदास सा एक पेड़ की छाया में आ खड़ा हुआ अपने अकर्तव्यनिर्वहन पर मन मसोसकर सोचने लगा था। उस समय मेरा ड्राइवर मेरे पास आया और बोला, "साहब, जब पीठासीन अधिकारी सब ठीक बता रहा है तो आपको क्या पड़ी है? आइए दूसरी ओर चलें, यहाँ खड़े रहना ठीक नहीं!" और फिर मैंने भी अपनी मजिस्ट्रेटी अपने जेब में रखकर वहाँ से खिसकना ही उचित समझा था।

खैर, ये हुई बैलेट पेपर की बात! अब आते हैं ईवीएम पर। अभी बीते चुनाव में मैं स्वयं जिले भर के मतदान कार्मिकों के प्रशिक्षण का प्रभारी था, मतलब जनपद के सभी मतदान कार्मिकों को ईवीएम का प्रशिक्षण दिलवाना था। जनपद भर के इंजीनियरों को मास्टर ट्रेनर बनवाया और इनसे प्रशिक्षण कार्य कराया गया। सबको मॉक पोल द्वारा बताया गया कि "देखो, जिसको वोट दिया जा रहा है उसी को वोट जा रहा है।" चुनाव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, और इधर अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम पर मुझे भी गर्व हुआ।

लेकिन कहते हैं न, काम की सफलता से उपजी खुशी किसी से देखी नहीं जाती और ईवीएम पर ही वोट चोरी करने का आरोप मढ़ दिया गया। बेचारी एक मशीन, जिसे किसी राजनीति से कोई मतलब नहीं, कोई जीते कोई हारे, उस पर कोई फर्क नहीं, उसी बेचारी मशीन पर आरोप! किसी ने मशीन को हैक कर लिया, मशीन में छेड़छाड़ कर दिया! या यह ईवीएम न हुई नेता जी की जेब हो गई, जिसमें मनचाहा वोट भर लो और अपने ठप्पे लगा-लगाकर बैलेट-बाक्स में डाल दो, जैसा उन नेताजी ने बैलेट पेपर वाले चुनाव में किया था।

इस आरोप के बाद तो मेरे ईवीएम प्रशिक्षण पर पानी फिर गया। अब तो प्रशिक्षण का श्रेय लेने में भी धुकधुकी उठ रही है कि कहीं छेड़खानी का आरोप हमीं पर न मढ़ दिया जाए। इस ईवीएम ने तो हमें भी धोखा दे दिया! आखिर, मेरे सामने ईवीएम का व्यवहार सौ टके ईमानदारी वाला था, जिसका वोट उसी को मिलता हुआ इसने दिखाया था तो फिर, यह गड़बड़ कहाँ हुई? खैर, ईवीएम बेईमान कैसे हो गई इस खोज में मैं निकल भी लिया।

संयोग से मुझे गली के किसी नुक्कड़ पर, नेता जी अपने उसी पुराने टाइप वाले दबंगई के अंदाज में वोटर से ईवीएम में डाले गए उसके वोट का पता पूछते दिखाई पड़ गए। मरियल सा वोटर उनके सामने खड़ा रिरिया रहा था। नेता जी की मैंने भी आवाज सुनी, 'क्यों बे, तूने अगर हमें वोट दिया होता तो हम हारते कैसे?' अपने मूँछों को ताव देते नेता जी की ओर देखते हुए वोटर रिरिया रहा था, 'अरे नहीं नेता जी, ऊ मशीनवा में वोटवा हम आप ही को दिये रहे, जरूर ऊमां कुछ गड़बड़ रहा होगा। ऊ तोहार वोट ऊनका मिलि गवा।'

बस फिर क्या था नेता जी को भी जैसे अपने हारने के कारण का क्लू मिल गया, 'अब ई ईवीएम ही तो है, यह अपने ऊपर लगे आरोप पर सफाई देने के लिए थोड़ी न प्रेस कांफ्रेंस करेगा' और, नेता जी के चेहरे पर चुनावी हार के बाद पहली बार खुशी छलक उठी थी। चेहरे का पसीना पोंछते हुए झट से हाईकमान को अपना मोबाइल लगा दिया, 'अरे ऊ का है कि ईवीएम में भोट आप ही को पड़ा था, लेकिन ईवीएम ने ही अन्दरखाने गड़बड़ कर आपका सारा भोट विरोधी पक्ष मे ट्रांसफर कर दिया!' वाह भाई नेता जी! वोटर को तो आपने कहीं का न छोड़ा, मतलब चुनाव हारे तो ईवीएम ने हराया और चुनाव जीते तो ईवीएम ने जिताया! गोया, वोटर गया तेल लेने!

वाकई, इस ईवीएम ने अब पासा उलट दिया है, यह मशीन न होकर महानायक हो गया है, गुलिवर की तरह विराट मानव! इस ईवीएम को जाति-धर्म का गुणा-गणित नहीं मालूम। इसने तो निश्चित ही अपना काम ईमानदारी से किया होगा, अन्यथा बैलेट-पेपर वाले जमाने के विराट मानव आज असहाय टाइप के बौने न बन गए होते! खैर, भैलेट-पेपर से भोटिंग होता तो कम से कम इनके लिए एक घंटे में दो-चार सौ वोट बैलेट-बक्स में ठूँसने में आसानी रहती, लेकिन ससुरा ईवीएम, ऐसा काम झटापट नहीं निपटाता, दूसरे सीटी भी बजाता रहता है

अब यह बात मेरे समझ में आ गई, ईवीएम ने वोटर को उसका वोट सौंप दिया है, किसी और को

(शेष पृष्ठ ३० पर)

खट्टा-मीठा

बाप नम्बरी, बेटा दस नम्बरी

बीजू ब्रजवासी

'चोर का भाई गिरहकट' यह कहावत अब पुरानी हो गयी है। अभी-अभी बिहार से एक नई कहावत चली है- 'चारा चोर का बेटा मिट्टी चोर'। जी हाँ, आप सही समझे! मैं लालू प्रसाद के सपूत की ही बात कर रहा हूँ। अँगूठा छाप माँ और बड़बोले बाप की नौवीं फेल तेजस्वी औलाद को उपमुख्यमंत्री बनाने का जो महान् कार्य बिहार की जनता ने किया था, उसका सुपरिणाम सामने आने लगा है। कुर्सी संभाले हुए अभी अधिक दिन नहीं हुए, लेकिन सपूतों ने अपने बाप के चरणचिह्नों पर चलते हुए घोटालों का सिलसिला शुरू कर दिया है। इसे कहते हैं- पूत के पाँव पालने में दिखाई देना।

यह जरूर है कि घोटालों का आकार अभी छोटा है। बाप ने ६०० करोड़ का चारा खाया था, तो बेटा केवल ६० लाख की मिट्टी खा पाया। कहाँ ६०० करोड़ और कहाँ ६० लाख। लेकिन शुरूआत बुरी नहीं है। बिहार की जनता जनार्दन ने चाहा तो आगे और तरक्की करेगा। अगर तेजी से तरक्की नहीं की, तो दो-दो भाइयों तेजस्वी और तेज प्रताप का 'तेज' कब काम आएगा?

अब यह मत पूछना कि उनका सजायाफ्ता बाप अभी तक खुला क्यों घूम रहा है। जनाब जमानत पर हैं। मात्र तीन साल की ही तो सजा हुई है। उससे ज्यादा समय तो जमानत पर छूटे हो गया। अब अगर केस की सुनवाई कभी हुई भी, तो फैसला आते-आते कई साल और लग जायेंगे। तब तक चारा चोर और बूढ़ा हो जाएगा। तब अगर सजा हुई भी तो यह कहकर छूट जाएगा कि हुजूर मैं बहुत बूढ़ा और कमजोर हो गया हूँ, अब मुझे घर जाने दो। यह सुनते ही 'मी लार्ड' उनको बाइज्जत घर भेज देंगे।

अब अगर आपको सिर धुनना है तो धुनते रहिए। मर्जी आपकी। ■

भूख की आग

नीरू श्रीवास्तव

'माँ ये भूख की आग क्या होती है?'

'ये क्या ऊल-जुलूल सवाल पूछती रहती हो?' नीलम ने रूही को डाँटते हुए कहा.

रूही जो नीलम और मोहित की बेटी थी मोहित बहुत बड़ा व्यापारी था. पैसे शान शौकत में कोई कमी नही थी. रूही कक्षा छः की छात्रा थी.

'नही मा मुझे भूख की आग पर निबन्ध लिखना है, मा बताओ न क्या होती है भूख की आग '?

नीलम सोच में पड़ गई पर उसकी समझ में नही आया कि भूख की आग होती क्या है?

'पता नहीं क्या टोपिक दे देते हैं ये स्कूल वाले भी न!'-बड़बड़ाते हुए किचन में घुस गई.

'नीलम कहाँ हो तुम?' बाहर से नीलम के पति मोहित की आवाज आई, 'रूही कहाँ है?'

'अपने रूम में है.'- नीलम की आवाज आई.

'क्या आपको पता है कि भूख की आग क्या होती है?'-मोहित के पास बैठते हुए नीलम ने पूछा.

'क्या पागलों वाली बातें करती हो, और कोई सवाल नहीं है क्या पूछने के लिए?'-नीलम पर झल्लाते हुए मोहित चिल्लाया. तब तक रूही अपने कमरे से आई और मोहित के गले लग गई.

'कैसी हो रूही? खाना खाया या नहीं? और हाँ तुमने जो खिलौने मंगाए थे. वो मैं ले आया हूँ.' रूही ने कोई जवाब नहीं दिया.

'क्या हुआ बच्चे उदास क्यों हो?'-रूही की तरफ देखते हुए प्यार से मोहित ने पूछा.

'पापा ये भूख की आग क्या होती है?'-रूही ने मोहित से सवाल किया.

'ये हो क्या गया है आज सबको? सब एक ही सवाल पूछ रहे हैं.'- मोहित बड़बड़ाया. 'ये क्या है बेटा? किसने कहा तुमसे ये सब?'-उसने प्यार से पूछा.

'पापा मुझे भूख की आग पर एक निबन्ध लिखना है. बताइए न पापा, ये भूख की आग क्या होती है?' -रूही ने मासूमियत से मोहित से पूछा.

'अच्छा बेटा चलो कहीं घूमने चलते हैं. फिर लौटकर बताऊँगा.'-मोहित ने रूही को बहला दिया. परन्तु मन ही मन मोहित भी सोच रहा था कि आखिर यह है क्या?

'ओके पापा!' -रूही खुश हो गई. नीलम और मोहित चिन्तित दिखाई दे रहे थे.

सब लोग तैयार होकर घूमने चले गए. रूही बहुत खुश थी. लौट रहे थे कि अचानक नीलम को कुछ याद आया. 'सुनिए जरा गाड़ी रोकना, वो पास के मंदिर में पुजारी को पचास हजार रुपए देने हैं, उन्होंने हमारे कारोबार को किसी की नजर न लगे इसके लिए हवन किया है.'-मोहित को समझाते हुए नीलम ने कहा.

मोहित ने मंदिर के बाहर गाड़ी रोक दी और तीनों नीचे उतरकर मंदिर में जाने लगे. तभी एक बूढ़ा व्यक्ति आया, जिसके शरीर में सिर्फ हड्डिया थीं. वह इंसान कम कंकाल ज्यादा लग रहा था. मोहित कुछ समझ पाता तब तक वह मोहित के कदमों पर गिर पड़ा.

'बाबू! तीन दिन से कुछ नहीं खाया है, बाबू! कुछ दे दीजिए बहुत दुआएँ देंगे आपको.'-बूढ़ा व्यक्ति गिड़गिड़ा रहा था.

'दूर हटो, पता नहीं कहाँ से आ जाते हैं लोग, भारत देश भी न भिखारियों का देश है. बिलकुल तहजीब नहीं होती है इन भिखारियों में.'- अपने पैरों को खींचते हुऐ बूढ़े व्यक्ति पर झल्लाया मोहित. रूही अवाक सी देख रही थी, कभी अपने पापा को, कभी उस बूढ़े व्यक्ति को जो पेट पकड़कर मजबूर सा चुपचाप बैठ गया था.

तभी नीलम आ गई और तीनों गाड़ी में बैठकर घर चले गए. दस बजे घर पहुँचे. रूही उदास थी वह उस बूढ़े के बारे में सोच रही थी, जिसको पापा भिखारी कह रहे थे. रूही के दिमाग में कई सवाल उठ रहे थे.

'चलो बेटा सो जाओ, सुबह स्कूल जाना है' -मोहित ने रूही से कहा.

'पापा मुझे अभी निबन्ध लिखना है, बताइए न पापा भूख की आग क्या होती है?'-रूही ने फिर पूछा. मोहित फिर सोच में पड़ गया.

'रूही बेटा, सो जाओ अभी, सुबह बता दूँगा.' -मोहित ने उसको प्यार से समझाया.

सुबह तक भी मोहित और नीलम भूख की आग के बारे में सोच नहीं पाए थे. रूही उठ चुकी थी, तभी बाहर से बहुत तेज कुछ अजीब-सी आवाजें आ रही थीं. रूही आ चुकी थी. वो कुछ सवाल करती उससे पहले ही मोहित कुछ बड़बड़ाया.

मोहित बाहर निकला, पीछे से नीलम और रूही भी लपकी. बाहर बहुत लोगों की भीड़ लगी हुई थी. बीच से किसी के कराहने की आवाज आ रही थी.

'आह... तीन दिन से कुछ नहीं खाया, भूख की आग लगी है पेट में.'-पेट के बल पड़ा था कोई जमीन पर, पेट को अपने दोनों हाथों से दबाए हुए था. 'आह.. . आह...' अचानक आवाज आना बन्द हो गई.

'बेचारा भूख से मर गया'-किसी अजनबी व्यक्ति ने उसको सीधा करते हुए कहा.

जैसे ही उस अजनबी ने उस व्यक्ति को सीधा किया, मोहित और नीलम के कदम पीछे हो गए.

'ओह ये क्या! ये तो वही बूढ़ा है जिसको पापा ने पैसे नहीं दिए थे.' करुणा से भर गया उस नन्ही सी बच्ची का दिल. उसने लाचार और शिकायत भरी नजरों से अपने पापा और मम्मी की तरफ देखा. जैसे कह रही हो कि इस बूढ़े भिखारी की मौत के जिम्मेदार वही हैं.

'पापा क्या यही होती है भूख की आग?' खामोश नजरें सवाल कर रही थीं मोहित से. रूही थके कदमों से घर के अंदर गई और कलम-डायरी उठाकर लिखने लगी वो अनुभव, जो उसने दिल से महसूस किया था. स्कूल में उसे कहानी के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मिला. मंदिर में दान देने से हजार गुना अच्छा है कि किसी मजबूर की सहायता करके उसकी दुआएँ ली जाएँ. ■

ह...ह...ह...हलाला

विजय कुमार सिंघल

'अनवर भाईजान, फौरन आओ!' रात १० बजे अनवर को अपने दोस्त असलम की बीवी सलमा की घबराई सी आवाज फोन पर सुनाई दी, तो वह कुछ ही मिनटों में उनके घर पहुँच गया। उसने देखा कि असलम और सलमा दोनों बदहवास हालत में थे। सलमा अपना सिर पकड़े बैठी थी और असलम ऐसा लग रहा था जैसे अरसे से बीमार हो।

यह नजारा देखकर अनवर भी परेशान हो गया। उसने असलम की ओर देखते हुए पूछा- "क्या हुआ असलम?"

असलम ने एक बार सिर उठाकर उसकी तरफ देखा जरूर, लेकिन बिना जबाब दिये फिर सिर झुका लिया।

अब अनवर ने सलमा की ओर देखते हुए कहा- "भाभीजान, कुछ बताओ भी!"

सलमा ने सिर उठाकर कहा- "अभी थोड़ी देर पहले ये बाहर से दारू पीकर आये। मैंने कुछ कहा तो गुस्से में इन्होंने तीन बार 'तलाक' बोल दिया।" यह कहकर वह रोने लगी।

पूरी बात समझते ही अनवर का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। असलम को झिंझोड़कर वह गुर्राया- "साले तुझसे कितनी बार कहा है कि इतनी दारू मत पिया कर! आज कर दी न बेवकूफी?"

असलम का नशा कभी का उतर चुका था, लेकिन उसने अनवर की बात का कोई जबाब नहीं दिया।

रोते हुए सलमा बोली-"अब क्या करें भाईजान?"

"करना क्या है? अभी इसको खाना खिलाकर सुला दो। सवेरे ठीक करूँगा इसे।"

सलमा रोना भूलकर बोली- "पर भाईजान, हमारा तो तलाक हो चुका है। हम एकसाथ कैसे रह सकते हैं?"

"कौन कहता है आपका तलाक हो चुका है?"

"सब कहते हैं कि तीन बार 'तलाक' बोल देने से तलाक हो जाता है। अब मुझे हलाला कराना पड़ेगा, नहीं तो मैं इनके लिए नापाक रहूँगी।"

(शेष पृष्ठ ३० पर)

बाल लेख

आइए कविता लिखना सीखें-३

प्रिय बच्चो, सदा खुश रहो,

आपने होली खूब खेली होगी। कविता-लेखन के प्रयास में आइए सबसे पहले होली पर कविता की कुछ पंक्तियां देखते हैं-

होली का हुड़दंग है, बज रही मृदंग है,
जिधर नजर जाती है अपनी,
दिखते रंग-ही-रंग हैं.

गुलदस्ता-

फूलों से गुलदस्ता बनता,
गुलदस्ते की अनुपम शान,
देश के लोग हों अनुशासित तो,
बनता अपना देश महान.

धरा पर हरियाली-

मुस्काते हों चेहरे सबके,
रहे धरा पर हरियाली,
हे प्रभु करुणा करते रहना,
बढ़े जगत में खुशहाली.

राष्ट्रीय पक्षी मोर-

प्रभु कार्तिक की मैं हूं सवारी
पक्षीराज कहलाता हूं
भारत का मैं राष्ट्र पक्षी हूं
बच्चों के मन को भाता हूं.

राष्ट्रीय एकता-

आज एकता की चाहत ने,
फिर हमको ललकारा है
एक साथ सब मिलकर बोलो
भारत देश हमारा है.

अगली बार आप भी कुछ लिखकर भेजेंगे, इसी आशा के साथ-

आपकी नानी-दादी जैसी,

-- लीला तिवानी

कथा भूकम्प की

शशांक मिश्र भारती

बच्चो, कई वर्ष पहले जब हम गणतंत्र दिवस मना रहे थे। उसी समय हमारे देश के पश्चिमी राज्य गुजरात में एक महा विनाशकारी घटना घटी जिसको भूकम्प कहा गया। भूकम्प क्या होता है? कैसे आता है? ये जानने की बाते हैं। पहले हम जब छोटे-छोटे थे तो एक दिन सुबह-सुबह दादी कह रही थीं बेटा-रात में हाला-चाला आया था। उस समय मेरी समझ में न आया था यह हाला-चाला। हमारे देश की मान्यता है कि पृथ्वी शेषनाग पर टिकी है। जब वह विश्राम लेने को होते हैं तो यह (भूकम्प) आता है। राम के छोटे भाई लक्ष्मण व कृष्ण के बड़े भाई बलराम को शेषनाग का अवतार माना गया है।

हमारे देश मे ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भी इसको लेकर अपनी-अपनी मान्यताएं हैं। पहले तुर्की ईराक अमेरिका आदि देशों में धरती को भैंसे के सींग, सुअर के मुंह मेढक आदि पर टिकी हुई माना जाता था। जैसे-जैसे मनुष्य ने उन्नति की, विज्ञान की प्रगति हुई। अनेक रहस्यों के साथ-साथ पृथ्वी के हिलने के कारणों पर पड़ा परदा भी हट गया। विश्व के वैज्ञानिकों ने अनेक बार सिद्ध किया और निष्कर्ष निकाला कि जब पृथ्वी का धरातल अचानक ही कांप उठता है, तो उसे भूकम्प कहा जाता है। भूकम्प शब्द का शाब्दिक अर्थ भी हम देखें तो 'भू' का अर्थ पृथ्वी और कम्प का अर्थ 'कांपना' ही है। आज अनेक भूगर्भिक खोजों ने प्राचीन धारणाओं को निर्मूल सिद्ध कर दिया है। सारा संसार पृथ्वी की आन्तरिक हलचलों से धरातल का तेजी से हिल उठना भूकम्प आना कहकर पुकारा जाता है।

बच्चो, जिस स्थान पर से भूकम्प की तरंगें उठती हैं उसको भूकम्प का मूल या उत्पत्ति केन्द्र कहा जाता है। जहां पर सबसे पहले भूकम्पीय तरंगों का पता चलता है। वह अधिकेन्द्र कहलाता है। इसको नापने के लिए भूकम्पमापी यंत्र (सीस्मोग्राफ) का प्रयोग किया जाता है। जहां तीव्रता-१ का भूकम्प यंत्र द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है, वहीं तीव्रता-६ सर्वनाश की स्थिति उत्पन्न कर देता है। जमीन फट जाती है, नदियों का मार्ग बदल जाता है, अपार जन-धन की हानि होती है।

भूकम्प के झटके भी पहले हल्के उसके तत्काल बाद तेज अनुभव किये जाते हैं। भूकम्प के समय लहरें भी चला करती हैं, ऐसा माना गया है। लहरों को लम्बात्मक आड़ी और धरातलीय के रूप में बांटा गया है। बच्चो, भूकम्प आने के कारणों में ज्वालामुखी का फटना, भू-असन्तुलन प्लेटों की गतिशीलता, आभ्यान्त्रिक गैसों की मात्रा में वृद्धि, जलीय भार, विस्फोट, चट्टानों का खिंचाव, वलन, आदि प्रमुख माने जाते हैं, जिनमें से अधिकांश में आज का मानव कहीं न कहीं पर विनाशकारी भूमिका निभा रहा है।

भूकम्प के क्षेत्रों को नवीन वलित पर्वत माला क्षेत्र, महाद्वीपीय व महासागरीय सम्मिलन क्षेत्र, ज्वालामुखी क्षेत्र तथा दरार व भूपटल भ्रंश की क्रिया वाले क्षेत्रों में बांटा गया है। अकेले प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में ही विश्व के लगभग तिरेसठ प्रतिशत भूकम्प आते हैं। वैसे तो भूकम्प प्रकृति की सबसे बड़ी विनाश लीला का रूप है, लेकिन कभी-कभी इससे पीने के पानी के स्रोत, बहुमूल्य खनिज पदार्थ आदि भी प्राप्त हो जाते हैं। ■

बाल कविताएं

मछली

मछली कैसे जीती जल में, टीचर से पूछूँगी कल मैं
जीना चाहूँ जो मैं जल में, जान सकूँगी उसका हल मैं
जो ऐसा सम्भव हो पाया, तो मैं घूमूँगी जल-थल में
मछली के संग होगी यारी, दोस्त बनेंगे ढेरों पल में
सात समुन्दर पार करूँगी, छू पाऊँगी सागर-तल मैं
सागर का अनमोल खजाना, जा देखूँगी अपने बल मैं

डंकी-मंकी

डंकी के ऊपर चढ़ बैठा, जम्प लगाकर मंकी लाल
ढेंचूँ-ढेंचूँ करता डंकी, उसका हाल हुआ बेहाल
पूँछ पकड़ता कभी खींचता, कभी पकड़कर खींचे कान
कैसी अजब मुसीबत आई, डंकी हुआ बहुत हैरान
बड़े जोर से डंकी बोला, ढेंचूँ-ढेंचूँ ढेंचूँ-ढेंचूँ
खों-खों करके मंकी पूछे
किसको खेंचूँ कितना खेंचूँ
डंकी जी ने सोची युक्ति
लोट लगाकर जड़ी दुलत्ती
खीं-खीं करता मंकी भागा
टूट गई उसकी बत्तीसी

-- आनन्द विश्वास

शिशु गीत

१. मच्छरदानी

मच्छरदानी-मच्छरदानी, तेरी भी इक अजब कहानी
न तू दानी, न तू मच्छर, नाम तेरा किसकी शैतानी

२. दालचीनी

हाल दालचीनी का कैसा, बिल्कुल मच्छरदानी जैसा
दाल न चीनी फिर भी देखो, नाम अजूबा पाया ऐसा

३. चूहेदानी

चूहेदानी चूहे पकड़े, तनिक न बेचारी ये अकड़े
क्यों कहलाती चूहेदानी, सोच-सोच चिन्ता में जकड़े

४. हलवा

हलवा हम बच्चों का प्यारा, मीठा-मीठा न्यारा-न्यारा
चाहे जितना दे दो मुझको, मैं तो खा जाता हूँ सारा

५. खीर

खीर बहुत मन को भाती है
बिगड़ा मूड बना जाती है
ताकत मिलती इससे हमको
दीदी पूरी में खाती है

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

नानी आई नानी आई, टॉफी-गोली-बिस्कुट लाई
बेसन के लड्डू और बर्फी
मक्खन-पेड़े और मलाई
सुंदर-सुंदर खेल-खिलौने
नन्हा-सा कम्प्यूटर लाई
झूमूं-गाऊं-नाच दिखाऊं
नानी आई नानी आई

-- लीला तिवानी

(पहली किस्त)

बहादुर देवम

आनन्द विश्वास

देवम स्कूल से छूटकर साइकिल से घर आ रहा था। तभी पीछे से आती हुई कार का दरवाजा खुला और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, कार से उतरकर दो आदमियों ने देवम को कार के अन्दर खींच लिया। देवम का विरोध और शक्ति-प्रदर्शन कुछ भी काम न आ सका। साइकिल वहीं पड़ी रह गई।

लोगों ने चिल्लाया भी और शोर भी मचाया। और तो और, दो बाइक वाले लोगों ने उस कार का पीछा भी किया, पर सब कुछ बेकार। तेज गति से दौड़ती हुई कार ट्रैफिक की भीड़ में ओझल हो गई। कुछ भी अता-पता न चल सका, कार का और ना ही उन लोगों का।

आस-पास के लोग तो हक्का-बक्का ही रह गये थे। भीड़-भाड़ वाले बाजार में, सरेआम, दिन-दहाड़े ऐसी घटना हो जाये तो इसे व्यवस्था की असफलता न कहा जाय तो और क्या कहा जाये।

लोगों के बीच में चर्चा का विषय बन गई थी यह घटना। सबकी सोच एक ही थी बस, कौन हैं ये लोग, जो इस लड़के को उठा कर ले गये हैं? और कहाँ ले गये हैं? किसका लड़का है ये? और क्यों ले गये हैं? प्रश्न तो अनेक थे, पर उत्तर किसी के पास भी नहीं था।

सभी अपनी-अपनी राय व्यक्त कर रहे थे। जितने मुँह उतनी बातें। कोई इस घटना को आपसी रंजिश की संज्ञा दे रहा था तो कोई इसे पैसा लेने के उद्देश्य से की गई किडनैपिंग की घटना। पर सब कुछ था अनुमान ही और शायद, वास्तविकता से कोसों दूर।

प्रत्यक्षदर्शी, स्कूल ड्रेस के आधार पर, केवल इतना ही अनुमान लगा पा रहे थे कि यह लड़का सेन्ट जेवियर्स स्कूल का कोई छात्र होना चाहिए। घटना-स्थल पर उपस्थित एक दो व्यक्तियों ने इसकी सूचना स्कूल में देना उचित समझा। उन्होंने स्कूल में जाकर घटना की पूरी जानकारी प्रिंसीपल मैडम को दी। प्रिंसीपल मैडम ने तुरन्त ही स्कूल के ऑफिस क्लर्क और चपरासी को पूरी जानकारी लेने के लिए घटना-स्थल पर भेजा।

स्कूल की छुट्टी तो लगभग एक घण्टे पहले ही हो चुकी थी। ऑफिस स्टाफ भी जाने की तैयारी में ही था। पर सूचना मिलते ही प्रिंसीपल मैडम ने बाकी स्टाफ को रोक लिया। पता नहीं कैसी स्थिति आ जाये। ऑफिस क्लर्क और चपरासी को घटना-स्थल पर साइकिल के अलावा और कुछ भी तो नहीं मिल सका था। जिससे छात्र के बारे में कुछ पता चल सके। आस-पास के लोगों से पूछने पर भी छात्र का नाम नहीं पता चल सका था।

उधर काफी देर तक जब देवम घर नहीं पहुँचा तो उसकी मम्मी की चिन्ता बढ़ने लगी। वह कभी दरवाजे की ओर देखतीं तो कभी घड़ी की सूईयों की ओर। कई बार तो वे सोसायटी के गेट तक भी देख आईं देवम को। पर दूर-दूर तक कुछ भी तो पता न था देवम का। देवम के सभी साथी तो कब के घर आ चुके थे।

वे मन ही मन विचार करने लगीं। पता नहीं हर रोज तो देवम समय पर ही आ जाता था पर आज ही इतनी देर क्यों हो गई? व्याकुलता बढ़ने लगी, कहीं कुछ हो तो नहीं गया, तरह-तरह के विचार मन में आने लगे और सबके सब मन को भयभीत करने वाले।

उन्होंने स्कूल में फोन किया तो पता चला कि स्कूल की छुट्टी हुए तो लगभग एक घण्टा हो चुका है। स्कूल वालों ने बताया कि हमारे पास यह सूचना है कि अपने स्कूल के एक विद्यार्थी को कुछ अज्ञात लोग सर्किट-हाउस के सामने से अगवा करके ले गये हैं, पर उसका नाम अभी तक पता नहीं चल सका है। हमारा स्टाफ वहाँ पहुँचा हुआ है। आप वहाँ पहुँच कर जानकारी प्राप्त कर लें। और हो सकता है कि विद्यार्थी का नाम पता चलाने में शायद आपका सहयोग हमारे कुछ काम आ जाये। निशानी के नाम पर केवल उसकी साइकिल पड़ी है वहाँ पर। आप वहाँ जाकर साइकिल को देख कर बताएँ कि ये साइकिल कहीं आपकी ही तो नहीं है, तो हम भी किसी नतीजे तक पहुँच सकेंगे।

देवम की मम्मी तुरन्त ही, सोसायटी के दो लोगों को साथ लेकर सर्किट-हाउस के पास पहुँचीं। वहाँ स्कूल के क्लर्क तथा चपरासी पहले से ही मौजूद थे। उनके पास जो भी जानकारी थी, उसे उन्होंने देवम की मम्मी को बताया। देवम की मम्मी ने साइकिल को देखते ही बता दिया कि यह देवम की ही है। इससे यह निश्चय हो गया कि वे लोग देवम को ही उठा कर ले गये हैं।

देवम की मम्मी तो हक्का-बक्का ही रह गईं, उनकी आँखों के सामने तो अँधेरा ही छा गया। सारी दुनियाँ ही जैसे उजड़ गई थी उनकी। न जाने किस हाल में और कहाँ होगा, देवम। वे सोच भी नहीं पा रहीं थीं कि अब क्या किया जाय। पर दूसरे ही क्षण अपने आप पर नियंत्रण करते हुए उन्होंने देवम के पापा को फोन कर घटना की पूरी जानकारी दी और उन्हें सर्किट-हाउस पर आने को कहा।

इधर ऑफिस क्लर्क ने तुरन्त यह जानकारी प्रिंसीपल मैडम को दी और उनसे घटना-स्थल पर आने का अनुरोध किया। कुछ ही समय के बाद प्रिंसीपल मैडम घटना-स्थल पर थीं। उन्होंने देवम की मम्मी को तुरन्त पुलिस को सूचित करने का सुझाव दिया। तब तक देवम के पापा और उनके दोस्त भी वहाँ आ गये। पुलिस को सूचना दी गई और रिपोर्ट लिखाई गई। पुलिस ने घटना-स्थल का निरीक्षण किया और फिर सभी जगह मैसिज भेजा। शहर के बाहर जाने वाले सभी रास्तों पर चौकसी बढ़ा दी गई और शहर के चप्पे-चप्पे पर सर्च-ऑपरेशन चालू कर दिया गया।

साथ ही पुलिस ने देवम के पापा का फोन नम्बर लेकर उस नम्बर को वॉच पर रखा ताकि कोई कॉन्टेक्ट हो तो उस नम्बर को तुरन्त ही ट्रेस किया जा सके। साथ ही पुलिस-अधिकारी ने उनसे यह भी अनुरोध किया कि अगर आपसे कोई सम्पर्क करे तो उसकी सूचना तुरन्त ही हम को दें। ताकि हम शीघ्र कदम उठा सकें।

(शेष अगले अंक में)

बाल पहेलियाँ

(१) कभी भूनता कभी जलाए, पैर सभी के यह फिसलाए
हाथ-पैर मजबूत बनाता, सिर को भी ताजा कर जाए

(२) बेहद जिद्दी ये दो भाई, रहते चुप, कुछ दे न सुनाई
वही बात इनसे कर पाया, जिसने इनको चपत लगाई

(३) काम कई चीजों में आता, फटते ही सब्जी बन जाता
जल्दी नाम बताओ बच्चो, खास तुम्हीं से इसका नाता

(४) यारी इनकी बहुत निराली, गोरा एक, दूसरी काली
गोरा काली पर सिर रगड़े
जलती आग, बजाओ ताली

(५) बुद्धि सभी की यह खुलवाती
कभी जिताती, कभी हराती
जिसमें ज्ञान भरा रहता है
उसे डरा यह तनिक न पाती

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ ७ पर देखिए।)

बाल कविताएं

गर्मी के दिनों में ये फल, बच्चों के मन को भाता है
पापा के आने से पहले, अपनी फरमाइश सुना देते हैं
ले आना आज पापा मेरे, वो प्यारा-प्यारा तरबूज
पापा भी बच्चों की बात, कैसे टाल सकते हैं
जब घर को आते वो, थैले भर के साथ लाते
ऊपर से तो हरा दिखे, अंदर में रहे लाल
जब खाते बच्चे इसे
गर्मी से उन्हें राहत मिले
पेट को भी जब ठंडक पहुंचे
तब बच्चे हो जाते निहाल
मौसमी फल का होता कमाल
गर्मी में तरबूज करता धमाल

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

चौराहे की बत्तियां तीन, गुण भी इनके गिन लो तीन
अलग-अलग रंगों वाली ये, देती हैं संदेश भी तीन
'ठहरो' कहती बत्ती लाल, कर लो थोड़ा-सा आराम
माना चलते रहना जीवन, फिर भी जरूरी है आराम
पीली बत्ती कहती है अब, चलने को रहना होशियार
अच्छा मानव हरदम रहता, चलते रहने को तैयार
हरी घास-सी बत्ती कहती, 'अब चल दो और पहुंचो पार
लेकिन चलना संभल-संभलकर,
टकरें ना वाहन दो-चार
अच्छी शिक्षा मिले जहां
से उसको लेना बढ़के
छोटे-बड़े या चर-अचर से,
शिक्षा ले लो जी भर के

-- लीला तिवानी

बड़े आदमी

पूरन सरमा

वे इतने बड़े थे, इसलिए कभी भी अपनी बड़ाई आप नहीं करते थे। सदैव मुस्कुराना और कभी-कभार चेहरे पर गंभीरता लगा लेना उनकी फितरत थी। चूँकि वे बड़े थे, इसलिए स्वाभाविक तौर पर प्रशंसा के भूखे होना कोई गलत नहीं था। मन से यह चाहते थे कि लोग उनकी प्रशंसा करें, यशोगान करें तथा उनके बड़प्पन पर प्रकाश डालें। इसके लिए उनके पास कुछ चमचे किस्म के लोग थे, जो उनकी बड़ाई का काम करते थे।

वे अक्सर कहा करते कि उन्हें स्वयं की प्रशंसा करना अच्छा नहीं लगता। तब वे चमचे किस्म के लोग कहते- "हम किस मर्ज की दवा हैं। आपका बड़प्पन ही यह है कि आप अपने मुँह से अपनी बड़ाई नहीं करते, वरना आप में जितने गुण हैं, वह किसी मानव जात में मिलना कठिन है। चन्द्रमा में दाग हो सकता है, आप में नहीं।" उनकी बात से प्रसन्न होकर वे चमचों को भोजन कराते, चाय पिलाते, कुछ रुपया उधार देते, जिसे बाद में ब्याज सहित वसूल करते। बड़े होने से चमचे उफ भी नहीं करते तथा उनकी प्रशंसा में नये-से-नये छंद रचते रहते।

एक बार जब वे ऊँचे आसन पर बैठकर प्रवचन दे रहे थे, चमचे उनके आप्त वचनों को आत्मसात् कर बड़ाई का नया आख्यान रच रहे थे, उस समय उनके यहाँ मेरा जाना हुआ। मैंने हँसते हुए स्थान लिया और उनके अनमोल वचनों को सुनने लगा तो एक चमचा बोला- "कुछ समझ भी रहे हो अथवा खामख्वाह सिर हिला रहे हो। ये गृहस्थ रूप में महात्मा हैं। इनकी आत्मा का शुद्धिकरण हो चुका है। जो भी अपने निर्मल मन से कहते हैं, वह सब मानव-कल्याण के लिए हैं। तुम्हें शायद पता नहीं है, ये कितने बड़े आदमी हैं।"

मैं बोला- "ये भी पाँच फुट चार इंच लम्बे हैं, इससे ज्यादा तो ये क्या बड़े होंगे?" चमचे एक साथ हँसे और बोले- "तुम्हारी अक्ल घास चरने गई हुई है तो यहाँ आये क्यों हो? बड़े लोगों के साथ उठना-बैठना सीखो। धर्मशाला बनवाने के लिए इन दिनों चंदे का कार्य कर रहे हैं। कितना बड़ा पुण्य का काम है। क्या तुम चंदा कर सकते हो?"

मैंने कहा- "मैं एक मन्दिर का निर्माण करवा रहा हूँ। इनसे चंदा लेने आया हूँ, दिलवाओ ताकि भगवान का मन्दिर बन सके।"

चमचे बोले- "ये चंदा देते नहीं, लेते हैं। पुण्य का कार्य खुद करते हैं। चंदा लेना है तो दर-दर की खाक छानो। बड़े आदमी होते तो एक आवाज पर चंदा आ जाता। पहले बड़ा बनने का प्रयास करो, आचरण सुधारो। उसके बाद आना इनके दरबार में।" ■

अब पतियों पर भी गिरेगी गाज

अशोक मिश्र

सुबह सोकर उठा ही था कि मुसद्दी लाल किसी आतंकवादी की तरह घर में घुस आए। आते ही बिना कोई दुआ-सलाम किए गोला-बारी करने लगे, 'पंडी जी, अब तो जीने की तमन्ना ही नहीं रही। जब हुस्न पर ही पहरा हो, तो फिर जीने का क्या फायदा? आप किसी के हुस्न का ठीक से दीदार नहीं कर सकते, उससे बातें नहीं कर सकते, उससे छेड़छाड़ नहीं कर सकते, तो फिर इतनी सुंदर दुनिया में रहने का क्या मतलब है? आप पल-दो पल के लिए किसी पार्क, मॉल या रेस्त्रां में नहीं जा सकते, किसी चौराहे पर खड़े बतरस का आनंद नहीं उठा सकते? भला बताओ, यह भी कोई बात हुई?' मुसद्दी लाल की बात सुनकर मैं भौंचक रह गया। मैंने पूछा, 'बात क्या है, मुसद्दी भाई?'

मुसद्दी लाल गहरी सांस छोड़ते हुए बोले, 'पंडी जी, चलो मान लिया कि शोहदों, मनचलों को रोकने के लिए आपने एंटी-रोमिया स्क्वाड बना लिया। उन्हें श्लील-अश्लील हरकत करने और प्रताड़ित करने से रोक दिया। लेकिन आप प्यार पर ही पहरा बिठा देंगे। हुस्न का दीदार बंद करा देंगे? यह कहां का जहांगीरी इंसाफ है, भई? मेरे एक मित्र सीएम साहब के खास हैं। कल बता रहे थे कि मुख्यमंत्री जी जल्दी ही एंटी-हसबैंड स्क्वाड बनने वाले हैं। पति छेड़छाड़ निरोधक अधिनियम पारित होने वाला है। अब पति अपनी बीवियों से चुहुल नहीं कर पाएंगे, उन्हें घूर नहीं पाएंगे।

पार्क और रेस्त्रां तो छोड़ो, घर में भी पति अपनी घरैतिन से छेड़छाड़ नहीं कर सकेगा। हर पति को थाने जाकर शपथपत्र पर दस्तखत करके थानेदार के समक्ष शपथ लेनी होगी कि मैं फलां वल्द फलां शपथ लेता हूं कि आज से मैं अपनी बीवी से न चुहुल करूंगा, न उसे छेड़ूंगा। साली, सलहजों, भाभियों को बहन-बेटी के समान मानते हुए न तो उनसे किसी किस्म का मजाक करूंगा, न उनके मजाक का जवाब दूंगा। पूर्व में जिन रिश्तों के तहत छेड़छाड़, चुहुलबाजी, हंसी-मजाक के विशेषाधिकार पुरुषों को प्राप्त थे, उन्हें मैं स्वेच्छा से त्याग रहा हूं। मैं यह भी शपथ लेता हूं कि यदि बीवी, साली, सलहज, भाभी आदि चुहुल करती हैं, छेड़छाड़ करती हैं, चिकोटी काटती हैं, तो उसे प्रसन्नतापूर्वक सहन करूंगा, प्रतिवाद नहीं करूंगा।'

इतना कहकर मुसद्दी लाल ने गहरी सांस ली। फिर बोले, 'पंडी जी! आप ही बताएं, यदि ऐसा हो गया, तो क्या होगा?'

मैंने कहा, 'आप चिंता न करें, मुसद्दी लाल जी। ऐसा कोई अधिनियम पारित हुआ, तो सबसे पहले महिलाएं ही इसके विरोध में सड़कों पर उतरेंगी। छेड़छाड़, चुहुलबाजी, नैन-मटक्का हर इंसान के जीवन में प्रेरक का काम करते हैं। यह मानव स्वभाव का अभिन्न अंग है, इसे कोई कानून खत्म नहीं कर सकता है। अच्छा बताओ, महिलाएं घर से निकलते समय सजती क्यों हैं? ताकि लोग उन्हें देखें, उनके सौंदर्य को सराहें। अगर ऐसा न हुआ, तो अरबों-खरबों रुपये के सौंदर्य प्रसाधन बेकार हो जाएंगे। बाजार चौपट हो जाएगा।' यह सुनते ही मुसद्दी लाल उठे और बिना चाय-पानी पिये अपने घर चले गए। ■

लघुकथा

पहलू

दो प्रेमी युगल पत्रकार युवती और फोटोग्राफर युवक सर्द रात के नौ बजे बात कर रहे थे।

'श-श-चुप करो और जाओ हम कल मिलते हैं।'

युवक ने उसकी बात अनसुनी कर चलते चलते उसका रास्ता रोक लेता है- 'मजाक नहीं, सच बताओ हम कब शादी कर रहे हैं?' वह मौन रही।

युवक फिर बोला- 'यह क्या है? शादी की बात पर रुक क्यों जाती हो?'

वह गहरी सांस छोड़कर कहती है- 'मुझे आज रात ये रिपोर्ट तैयार करनी जरूरी है। मैं इन बड़े लोगो की एड्स पर दोहरी सोच का सच सामने लाना चाहती हूँ कि इन लोगों के सिर्फ विचार ही अच्छे हैं, पर हकीकत इससे कुछ अलग ही है।'

'क्या रिपोर्ट? किसी मेजर की जासूसी कर कि वो अपनी एचआईवी पॉजिटिव बहू के साथ हकीकत में क्या व्यवहार करता है, उसके साथ भेद भाव करता है- यार सब जानते है कि सुबह जो हमने एड्स दिवस पर बड़ा अच्छा भाषण सुना था, जिस पर उपस्थित भीड़ने बड़ी गर्म जोशी से ताली भी बजाई थी। क्या तुम समझती हो हकीकत में वे सब एड्स रोगी के बारे में ऐसा अच्छा ही सोचते हैं? सच जानने के बाद भी वे एड्स रोगी संग खाना तो दूर, बैठना भी नहीं चाहेंगे। यार सब हमारी तरह नई सोच वाले नहीं है।' वो कहता रहा- 'उस मेजर का बेटा अपनी पत्नी के कारण ही एचआईवी का मरीज हुआ, जिससे प्रभावित होकर उसने आत्महत्या कर ली सब यह जानते हैं। अब और क्या सच जानना है तुम्हें?'

'पर ये सच नहीं है। वो मेरी सगी बहन है।'

इस पर युवक ने कहा कि उसका कोई जरूरी फोन आ गया है और वह वहाँ से तुरंत चला गया।

-- अर्चना ठाकुर

काश! बेटियाँ होतीं

कल्पना रामानी

(पहली किस्त)

'अरे छाया! तुम यहाँ?'

'हाँ ज्योति, मेरा विवाह इसी शहर में हुआ है लेकिन तुम?'

'मेरा भी, छाया', ज्योति हँसकर बोली। बचपन की सहेलियाँ छाया और ज्योति इस समय शहर के मॉल में अपने-अपने पति के साथ खरीदारी करने आई हुई थीं, और एक ही स्टॉल पर खरीददारी करते हुए ज्योति की नजर छाया पर पड़ गई। खड़े खड़े ही खूब बातें हुईं फिर दोनों ने अपने-अपने पतियों का परिचय भी अपनी-अपनी सहेली से करवाया और एक दूसरे को अपने घर का पता देकर आने का निमंत्रण भी दे डाला।

यह शायद इत्तफाक ही था कि एक ही शहर के स्कूल, कॉलेज में एक साथ पढ़ने वाली इन दो सहेलियों का विवाह भी निकट के एक ही शहर में हुआ था। फर्क केवल इतना था कि वे मायके में एक दूसरी के पड़ोस में रहती थीं और यहाँ ससुराल कुछ दूर-दूर थे, लेकिन यह दूरी उनकी मित्रता में बाधा नहीं बनी और उनका एक दूसरे के घर आना-जाना शुरू हो गया। छाया के पति सुनील प्राइवेट नौकरी में थे तो ज्योति के पति जयेश की सरकारी नौकरी थी। दोनों के दफ्तर अलग-अलग इलाकों में थे, फिर भी अपनी बीवियों की गाढ़ी मित्रता के कारण वे भी आपस में अच्छे मित्र बन गए।

हर सप्ताहांत में उनका मिलना तय हुआ, फिर घूमना खरीदारी करना और खाना-पीना सब एक साथ ही होता। दिन गुजरते गए और दो साल बाद ही छाया की गोद में बेटा और ज्योति की गोद में बेटी आ गई। अब उनका मिलना-जुलना दिनों के बजाय महीनों में होने लगा। दो साल और गुजरे तो छाया ने पुनः बेटे और ज्योति ने दूसरी बेटी को जन्म दिया। पर इस बार मिलने पर छाया ने गर्व से बताया कि दूसरी बार गर्भ में कन्या होने से उसने अबार्शन करवा लिया था और अब दूसरा बेटा होते ही अपना परिवार नियोजित कर लिया है। लेकिन जब ज्योति ने बताया कि बेटे हों या बेटियाँ, उसने सिर्फ दो संतानों के बाद परिवार नियोजित करने का निर्णय लिया था और उसने भी परिवार नियोजित कर लिया है तो छाया आश्चर्य से बोली- 'लेकिन ज्योति, बेटे के बिना परिवार का वंश-वर्धन कैसे होगा? बेटियाँ तो एक दिन अपने घर चली जाएँगी, तुम्हें अभी ऑपरेशन नहीं करवाना था।'

'छाया, इस आधुनिक युग में भी तुम्हारी रूढ़िवादी सोच जानकर मैं चकित हूँ। वंश-वर्धन क्या केवल बेटों से होता है? बेटियाँ विवाह के बाद जिस परिवार में जाएँगी, उनका भी तो वंश बढ़ाएँगी न! सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए सृष्टि-चक्र के साथ खिलवाड़ करना क्या उचित है? आगे क्या होना है यह कौन जानता है सखी, अभी तो हमें अपनी बेटियों की परवरिश सही ढंग से करनी है और पति के साथ ही मेरे सास-ससुर भी परिष्कृत विचारों के हैं वे हमारे निर्णय से पूर्णतः सहमत और संतुष्ट हैं'।

दो-दो बच्चों के बाद उनकी व्यस्तता बढ़ती गई और मुलाकातों के बीच लंबा फासला होने लगा। जिम्मेदारियों का निर्वाह करते-करते लंबा अरसा बीत गया। छाया का घर दो बहुओं से गुलजार हो गया और ज्योति की बेटियाँ ससुराल चली गईं। दोनों सहेलियों के सास-ससुर तो नहीं रहे, लेकिन साल-दर-साल पोते पोतियों के आगमन से छाया के परिवार में वृद्धि होने से उसका ज्योति के यहाँ आना-जाना कम हो गया।

ज्योति को तो अब सूनापन काटने दौड़ता था, वो एक तरफा ही अपना मन हल्का करने छाया के पास जयेश के साथ आ जाती थी। छाया को न आने का उलाहना देती तो वो अपने बढ़ते परिवार का हवाला देकर कहती- 'भई हमारा समय तो मूलधन-ब्याजधन ने ही आपस में बाँट लिया है मुझे ये बच्चे नहीं छोड़ते तो सुनील को बाजार के कार्य निपटाने पड़ते हैं। बेटों की नई और प्राइवेट कंपनियों में नौकरी होने से उन्हें छोटे-मोटे कार्यों के लिए समय ही नहीं मिलता। तुम लोग आ जाते हो तो बहुत अच्छा लगता है।

लेकिन ज्योति भी कब तक आना जाना करती, तो मुलाकातों में फासला बढ़ता ही गया. फिर अचानक जयेश का तबादला दूसरे शहर में हो गया और सखियों के मिलने जुलने का सिलसिला सिमटकर मोबाइल पर बातचीत तक रह गया। नई जगह पर ज्योति का मन बिलकुल नहीं लगता था। यहाँ पड़ोस मुहल्ले में भी आना जाना कम ही था तो ज्योति ने समय काटने के लिए कंप्यूटर से नाता जोड़ लिया।

इस विस्तृत दुनिया में उसका मन खूब रम गया। कहानियाँ पढ़ने और बच्चों को सुनाने का उसे बचपन से ही शौक था। अब उसका यह शौक पुनर्जीवित हो गया। पढ़ते-पढ़ते कब कलम हाथ में आई और कागज काले होने लगे उसे पता ही न चला। समय तो जैसे हवा से होड़ लेने लगा था। धीरे-धीरे कहानियों पर उसकी पकड़ अच्छी जम गई।

छाया से बातचीत होती रहती लेकिन मिलना फिर नहीं हो पाया। कभी कभी अपने हालचाल एक दूसरे को अवश्य साझा करतीं। इस तरह एक लम्बा अरसा गुजर गया। फिर उनकी बातों का सिलसिला भी अचानक बंद हो गया। छाया का मोबाइल हमेशा स्विच ऑफ बताता। ज्योति सोचती कि बड़े परिवार की बड़ी परेशानियाँ भी हैं, दस कारण होते हैं। अब वो उसके फोन आने का इंतजार करने के अलावा कर भी क्या सकती थी, घर के कार्यों और साहित्य-साधना में ही उसकी दुनिया सिमट गई।

आखिर वो समय भी आ गया जब जयेश सरकारी नौकरी से सेवामुक्त हो गए। अब वे अपना समय समाजसेवा में काटने लगे। ज्योति को भी अब शारीरिक ऊर्जा में कमी महसूस होने लगी थी लेकिन कलम को इससे क्या लेना देना! उसे तो अपनी खुराक चाहिए ही, तो उसने घर के कार्यों के लिए एक गरीब अधेड़ महिला सुमित्रा को रख लिया। वो दिन भर काम के साथ ही उसका घर भी व्यवस्थित रखती और रात में अपने घर चली जाती थी। अब वो निश्चिंत होकर अपना समय लेखन को दे सकती थी। उसने दिन भर घूम-घूम कर कलम की उदरपूर्ति के लिए अपने आसपास बिखरी कहानियों को सहेजना शुरू कर दिया। झूलाघर, नारी-निकेतन, अनाथालय, आरोग्य-केंद्र, आदिवासी बस्तियाँ आदि स्थानों से नित्य नई कहानी का किरदार खोज लाती और उसे पन्नों पर साकार करती रहती।

कभी-कभी बेटियाँ अपने बच्चों के साथ मिलने आ जातीं, तो कभी पति-पत्नी लम्बे भ्रमण पर निकल जाते। वहाँ भी उसे पहाड़ों और वादियों में कहानियों के किरदार मिल जाते। इस बार होली निकट थी तो उन्होंने वृन्दावन-मथुरा जाकर देवदर्शन के साथ ही श्री कृष्ण की लीला-स्थली ब्रज भूमि पर बरसाने की लट्ठमार होली देखने का कार्यक्रम बनाया और एक पर्यटन-गाड़ी में अपना आरक्षण करवा लिया। फिर घर की देखरेख की जवाबदारी सुमित्रा को सौंपकर वे निश्चित दिन मथुरा पहुँच गए। होली में अभी ८ दिन बाकी थे, प्रतिदिन वे बारी-बारी वहाँ के प्रसिद्ध पौराणिक स्थल घूम-घूमकर देखते और आनंदित होते रहते। कभी यमुना नदी तट पर पहुँच जाते तो कभी प्राकृतिक श्यावली को निहारने एकांत स्थलों पर समय बिताते। ज्योति हर स्थान के अपने अनुभव कलमबद्ध करती रहती। अब केवल वृद्धाश्रम रह गये थे जो ज्योति की नई कहानी के केंद्र बिंदु थे। उसने यहाँ के आश्रय-स्थलों में अपना अंतिम समय व्यतीत करने वाली महिलाओं के बारे में सुना तो खूब था, अब रूबरू होने के लिए होटल से पूरी जानकारी लेकर एक दिन वो सुबह जल्दी ही पति के साथ चल पड़ी और वे सबसे पहले वहाँ के पुराने वृद्धाश्रम पहुंचे।

यहाँ वृद्ध-जन पूरा दिन भजन कीर्तन करने और नाचने गाने में बिताते थे। कुछ वृद्ध वहाँ स्थायी निवास कर रहे थे, तो कुछ संपन्न वृद्ध दम्पति अपने अलग घर बनाकर भी रहने लगे थे जो पूरा दिन वहीं बिताकर रात में घर जाते थे। सबकी अपनी कहानी थी। लेकिन एक बात समान थी कि सब अपनों से ही चोट खाए हुए थे। ज्योति ने महसूस किया कि जैसे एक मोर जब प्रसन्न होता है तो नाचने लगता है, लेकिन जब उसकी नजर अपने भद्दे पैरों पर पड़ती है, तो नाचना भूलकर रोने की आवाज निकालने लगता है। उसी तरह ये बुजुर्ग मन को समझाने बहलाने के लिए कितने भी यत्न करें, नाचें गाएँ, एकांत पाते ही परिजनों द्वारा दिए हुए जख्मों को याद करके उनका हृदय चीत्कार करने लगता है।

(अगले अंक में जारी)

सिर्फ प्रधान मंत्री से ईमानदारी की उम्मीद क्यों?

विजय बाल्याण 'विभोर'

८ नवम्बर २०१६ को प्रधान मंत्री ने नोटबंदी का ऐलान किया तो पेट्रोल पम्प मालिकों ने उस दिन अपनी सेल दोगुनी की। उपभोक्ता को १०० रूपये के पेट्रोल की जरूरत थी, परन्तु मजबूरी में ५०० का ही डलवाना पड़ा क्योंकि उसको उतना पेट्रोल डलवाने को मजबूर किया गया। नोट बदलवाने की सीमा ४००० निर्धारित की गयी, जिसमे २-४ दिन का घर खर्च आराम से चल जाता है और ज्यादातर का तो महीना भर भी निकल जाता है। लोगो ने तिकड़मबाजी से तीन गुना नोट बदलवाये। बैंक कर्मियों ने भी खूब भाई-भतीजावाद निभाया, जिसके परिणामस्वरूप नोटों की कमी दिखने लगी। जबकि ईमानदारी से सभी अपना कर्तव्य निभाएं तो नोटों की कमी नहीं है। जिसका मौका लगा उसी ने ही पग पग पर बेईमानी की। घर में भी एक सदस्य बेईमान और एक ईमानदार हो, तो वो घर परिवार कैसे चल सकता है? ईमानदार प्रधान मंत्री के लिए जनता को भी ईमानदारी निभानी होगी। नहीं तो जनता छाती पीटेगी और नेता ढोल।

१६७८ में प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई थे, जिन्होंने देश हित में बहुत बड़ा फैसला लिया और बहुराष्ट्रीय कंपनी कोका कोला को भारत में बैन कर दिया था। उन्होंने ही उस समय मुद्रा में प्रचलित सबसे बड़ा नोट भी बंद कर दिया था। उनके इन फैसलों से उस समय महंगाई पर लगाम लग गयी थी। परन्तु चंद बेईमान नेताओं के बहकावे में आकर, जिस जनता ने उन्हें पूर्ण समर्थन दिया था वो ही उनके खिलाफ हो गयी, जिसका परिणाम रहा कि श्री देसाई को सत्ता से हाथ धोना पड़ा।

वर्तमान में कांग्रेस के भ्रष्टाचार से तंग जनता ने नरेंद्र मोदी को अपना पूर्ण समर्थन दिया (याद रहे ये समर्थन भा.ज.पा. को नहीं दिया)। ८/११ को मोदी जी ने एक कठोर कदम उठाया जाली (नकली) नोटों को खत्म करने के लिए। ऐसा करने से जनता को थोड़ी बहुत परेशानी तो होनी लाजमी है। जिस जनता ने काम करने के लिए इतना बड़ा जनसमर्थन दिया हो तो उसके लिए परेशानी उठाना भी जनता का फर्ज है।

आज यदि जनता ने प्रधान मंत्री जी का पूर्ण समर्थन नहीं किया, तो बेईमान नेता (जो सभी दलों में हैं) प्रधान मंत्री को उखाड़ फैंकेंगे (जैसे मोरारजी देसाई जी को खत्म कर दिया था) फिर भविष्य में कोई भी प्रधानमंत्री इतना कड़ा कदम नहीं उठाएगा।

हमारा (जनता का) नैतिक फर्ज बनता है कि यदि कुछ बेईमान नेता ऐसा कदम उठाते हैं जिससे मोदी जी के इस फैसले पर आंच आये तो, कम से कम इस समय इस कड़े फैसले पर प्रधान मंत्री जी का समर्थन करना होगा, क्योंकि जनता ने उन्हें भ्रष्टाचार, आतंकवाद व कालाबाजारी खत्म करने के लिए समर्थन दिया है, वे इसी तरफ कदम बढ़ा रहे हैं। हाँ जनता द्वारा विरोध भी दर्ज करवाना जरूरी है, ताकि वे बेलगाम न हो जाएं।

किसी भी ईमानदार कोशिश के पीछे सबसे पहले उसका काला पक्ष खोजने में अपनी शक्ति लगायी जाती है और उस कोशिश को साम दाम दंड भेद की नीति के तहत फेल करके ही दम लिया जाता है। ताकि वह ईमानदार कोशिश बदमान (क्यूंकि ईमानदारी बदमान तो हो सकती है परंतु बदनाम नहीं होती) हो जाए। ये कोशिश सिर्फ इसलिए की जाती है ताकि अपनी खामियां उजागर न होने पाएँ। ■

खुले में शौच एवं शिक्षा

रूपेश कुमार

क्या आपने किसी गाय भैंस भेड़ बकरी ऊँट हाथी कुत्ते को गोबर लीद या कुछ ऐसा ही करते देखा है? या कोई भैंस गोबर करते शर्मा गयी हो? हाय मैं शर्म से लाल हुई! कोई बछड़ा अपनी मम्मी से कहे कि मम्मी, मैं ऐसे सबके सामने गोबर नहीं करूँगा मुझे शर्म आती है। तो गाय उससे यही कहेगी कि 'भैया, गोबर करना एक नितांत प्राकृतिक और नैसर्गिक प्रक्रिया है। इसमें शर्माने की जरूरत नहीं होती।'

मोदी इस चिंता में मरे जा रहे हैं कि ६०% हिन्दुस्तान खुले में शौच करता है। अरे भैया, ईश्वर का बनाया हर जीव ऐसा ही करता है। सो ये ६०% भी कर रहे हैं तो गलत क्या है। बल्कि वो ४०% जो संडास में जाते हैं वो एक अप्राकृतिक कार्य कर रहे हैं। मेरे हिसाब से उन्हें भी खुले में ही निपट लेना चाहिए। मैंने अपने गाँव में कई ऐसे लोगों को देखा है जो घर में शौचालय होने के बावजूद रात के अंधेरे में सड़क पे निपटने जाते है। उन्हें लगता है कि अगर पूरा घर उसमें जाएगा तो उनका सेप्टिक टैंक जल्दी भर जाएगा।

सुलभ शौचालय वाले मात्र १२ हजार रुपये में गाँव में शौचालय बनाते हैं। मेरे एक पड़ोसी ने आज तक नहीं बनवाया। बहुत गरीब हैं बेचारे। ये अलग बात है कि उनके ५ सदस्यों के घर में ६ मोबाइल फोन हैं और सब साले दिन भर बतियाते हैं। एक दिन मैंने यूँ ही पूछ लिया, 'किससे बतियाते हो बे?' इतना मुझे शक था कि इन्होंने कोई कॉल सेंटर खोल लिया लगता है।

एक दिन मैंने उनसे कह दिया कि 'अबे तेरी माँ सड़क पे शौच करने जाती है साले, एक गड्ढा खोद के उसके इर्द गिर्द टाट ही लगा ले।' बस वे नाराज हो गए।

मोदी जी बात को समझो ये जो ६०% खुले में शौच कर रहे हैं न, ये साले सब पशु हैं। इनके लिए सरकारी पैसे से संडास बनवाने से पहले इन्हें पशु से मनुष्य बनाओ। समस्या संडास का न होना नहीं है। समस्या शिक्षा का अभाव है। उन्हें ये पता ही नहीं कि संडास का होना क्यों जरुरी है। जिस दिन इनको ये पता लग गया, तो आपको सरकारी संडास नहीं बनवाना पड़ेगा। और लानत है आपकी शिक्षा व्यवस्था पे जो आज तक इन्हें ये नहीं समझा पाई कि संडास क्यों जरूरी है।

देश और समाज की हर समस्या का हल शिक्षा और सिर्फ शिक्षा है ■

लघुकथा

प्रवृत्ति

आज पाँचवीं बार विद्यालय की गिरी हुई कोट (खेल मैदान की दीवार) को दीर्घविश्रांति में वह ठीक कर रहा था। तभी साथी शिक्षक सुदेश ने पास आकर कहा, 'सर जी! यह सब महेश का किया धरा है। वह स्कूल के छात्रों को आपके खिलाफ उकसाकर पत्थर की कोट गिरवा देता है। ताकि छात्र इस शार्टकट के रास्ते से मैदान में आ सकें।'

'जी। आपने उन्हें ऐसा करते हुए देखा है?'

'मैंने तो नहीं देखा है।' सुदेश ने कहा, 'कक्षा में छात्रों से पूछा था। वे ही बता रहे थे कि महेश सर ने कहा था।'

'अच्छा, अच्छा।' कहते हुए वह पत्थर जमाकर कोट दुरुस्त करता रहा।

'जी हां। मैं सही कह रहा हूं।' सुदेश बोला, 'वैसे भी आप स्कूल के लिए बहुत काम करते हैं। वह आपका काम बिगाड़ देना चाहता है ताकि आप बदनाम हो जाए। इसलिए आपको महेश के खिलाफ एक्शन लेना चाहिए।'

'किस बात के लिए?'

'वह हर बार कोट गिरवाकर शासकीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाता है।'

'अच्छा, अच्छा!' उसने जमीन से दूसरा पत्थर उठाकर कोट पर रखा, 'मैं एक्शन लूंगा, क्या आप गवाही देंगे?'

'हां, हां, क्यों नहीं। आप प्रधानाध्यापक हैं। आपकी तरफ तो बोलना पड़ेगा।' कहकर सुदेश उठा, 'सर जी, मुझे बच्चों का मूल्यांकन करना है। चलता हूं। फिर जैसा आप कहेंगे, वैसा करूंगा।'

'ठीक है।' कहकर उसने पत्थर उठाया और कोट पर जमा दिया।

तभी उसे याद आया। सुबह महेश कह रहा था, 'सर जी! सुदेशजी से बच कर रहना। वो पूरा कामचोर, मक्कार व साक्षात् नारदमुनि है। आपको और मुझको लड़ा सकता है।'

उसके हाथ काम करते-करते रुक गए।

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

गलती किसकी?

अंजु गुप्ता

जून की चिलचिलाती धूप में सुधा अभी घर के बाहर पहुँची ही थी कि उसे घर के अंदर से कुछ आवाजें सुनाई दीं। उसकी जेठानी और पड़ोसन बैठी उसी की बातें कर रही थीं। उसकी जेठानी कह रही थी- 'अरे बहन क्या बताऊँ, नई देवरानी तो कुछ काम ही नहीं करती है। महारानी सुबह फैशन करके सात बजे निकल जाती है और शाम को सात बजे घर पधारती है।' यह सुनते ही थकी-हारी सुधा का मन मसोसकर रह गया।

सुधा की शादी हुए अभी एक महीना ही हुआ था। उसका ऑफिस घर से काफी दूर था। आने-जाने में ही लगभग चार घंटे लग जाते थे और ऊपर से घर का कामकाज। थककर चूर हो जाती थी। अपने घर की लाडली, संस्कारों में पली सुधा बहुत ही सुलझी, पढ़ी-लिखी लड़की थी। इक बार तो मन हुआ कि बैठक में जाकर उनकी बात का जबाब दे। पर फिर माँ-बाप के दिए संस्कार आड़े आ गए। चुपचाप अपना पर्स अपने कमरे में रख, वह रसोई की तरफ शाम का चाय-नाश्ता बनाने और रात के खाने की तैयारी करने चली गयी।

सुधा के परिवार में यूँ तो सभी अच्छे थे, पर सास न होने कारण घर की बागडोर उसकी जेठानी के हाथ में थी जो कम पढ़ी-लिखी और झगड़ालू किस्म की महिला थी। सुधा के मिलनसार और पढ़ी-लिखी होने की वजह से उसकी जेठानी की कुण्ठा और बढ़ गयी थी। वह घर में किसी न किसी बहाने लड़ाई का माहौल बनाए ही रखती थी। घर की शान्ति बनाये रखने की खातिर, उसके जेठ, ससुर और ननद भी हर बात पर चुप्पी साधे रहते थे।

इस प्रकार के माहौल की आदत न होने के कारण और अत्यधिक कामकाज के बोझ से सुधा की सेहत भी गिरने लगी। सुधा के पति समीर दूसरे शहर में नौकरी करते थे और सप्ताह के अंत में ही घर आ पाते थे इसलिये सुधा अपने मायके भी न जा पाती थी। तीन-चार महीने बाद जब वह मायके गई तो उसके माता-पिता भी उसका चेहरा देख कर हैरान रह गए। बेटी के घर के मामले में दखल देना उन्हें सही न लगा, पर जाते वक्त उन्होंने सुधा को किसी से भी न दबने की सलाह दी और उसे विश्वास दिलाया कि उसके किसी भी कदम में वे सदा उसके साथ हैं।

समीर भी समझदार थे और अपने घर के हालात से भलीभाँति परिचित थे। उन्होंने सुधा को समझाते हुए कहा भी कि काम उतना ही करो जितना सम्भव है और अगर कोई बात गलत लगे तो उसका विरोध करो वरना हालात और खराब हो जायेंगे। पर सुधा पर तो आदर्श बहू बनने का भूत चढ़ा था। उसे लगा कि शायद उसका अच्छा व्यवहार उसकी जेठानी को भी बदल देगा।

इधर घर में सुधा की जेठानी की ज्यादतियां भी बढ़ने लगीं। वह लगातार बीमारी का बहाना किये सुबह-शाम सोई रहती या इधर-उधर घूमने निकल जाती। बात-बात पर ताने देना, रिश्ते-नातेदारों के सामने सुधा को नीचा दिखना उसकी आदत में शामिल हो गया था। हद तो तब हो गई जब एक दिन उन्होंने सुधा पर हाथ उठा दिया। पर वह सुधा की बर्दाश्त की इंतिहा थी। उसी तेजी से झन्नाटेदार आवाज के साथ सुधा का हाथ भी अपनी जेठानी के मुँह पर पड़ा और उसके साथ ही उसका ऊँचा स्वर सुनायी दिया- 'मेरे चुप रहने को मेरी कमजोरी समझना आपकी भूल थी। मैं जो इज्जत आपको दे रही थी, आप उसकी हकदार ही नहीं थीं। अगर आगे से गलती से भी मुझे परेशान किया, तो मैं पुलिस में कम्प्लेन कर दूँगी।'

घर के सभी लोग सुधा का यह नया रूप देखकर हैरत में पड़ गये और सोच रहे थे कि अगर सुधा ने शुरू में ही गलत व्यवहार का विरोध किया होता तो शायद उसकी जेठानी की इतनी हिम्मत न बढ़ती। उधर सुधा सोच रही थी कि अगर घर वाले शुरु से ही उसका साथ देते, तो शायद घर के हालात इतने बुरे न होते। जिस घर की शान्ति बनाए रखने के लिए सुधा ने इतना कुछ सहा था, वो पल भर में खत्म हो गयी थी। आखिर गलती किसकी थी ? ■

पुस्तक समीक्षा

सार्थक लघुकथाओं का अनुपम संग्रह

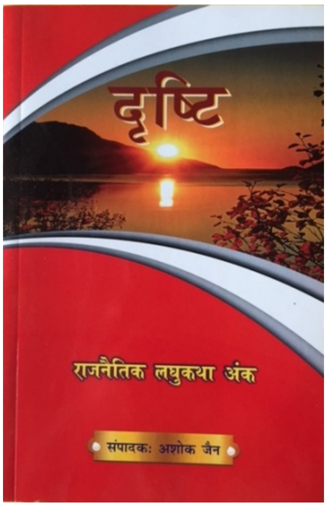

लघुकथाओं को समर्पित अर्द्ध-वार्षिकी 'दृष्टि' का प्रथम वर्ष का दूसरा अंक 'राजनैतिक लघुकथा अंक' के रूप में प्रकाशित है। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है इसमें केवल राजनैतिक पृष्ठभूमि पर आधारित लघुकथाओं का ही संकलन किया गया है।

इस अंक में ६३ रचनाकारों में से प्रत्येक की एक या दो लघुकथाओं को प्रकाशित किया गया है। विशेष बात यह है कि किसी भी रचनाकार को कम या अधिक महत्व न देते हुए उनको अकारादि क्रम में प्रस्तुत किया गया है। इन रचनाकारों में अधिकांश चर्चित लघुकथाकार हैं। केवल इसी तथ्य से लघुकथाओं की गम्भीरता का अनुमान लगाया जा सकता है। अधिकांश लघुकथायें चुटीला अंदाज लिये हुए हैं और वर्तमान राजनीति की विद्रूपताओं को सफलता से प्रकट कर देती हैं।

यदि कुछ लघुकथाओं का उल्लेख करना आवश्यक ही है तो अशोक जैन की 'अपने अपने स्वार्थ', अशोक भाटिया की 'लोक और तंत्र', आभा सिंह की 'विकल्प', कान्ता रॉय की 'कागज का गाँव', ज्योत्सना सिंह की 'स्टिंग ऑपरेशन' आदि रोचक लघुकथायें हैं।

इसमें संकलित लघुकथाओं के अवलोकन एवं पठन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्पादक श्री अशोक जैन ने इसके संकलन और सम्पादन में पर्याप्त परिश्रम किया है।

प्रारम्भ में डॉ अशोक भाटिया का आलेख 'समकालीन हिन्दी-लघुकथा में राजनैतिक संदर्भ' पठनीय ही नहीं संग्रहणीय दस्तावेज है। इसी प्रकार माधव नागदा का आलेख 'लघुकथा में शिल्प की भूमिका' भी उल्लेखनीय है। कुल मिलाकर यह अंक बहुत सुन्दर और संग्रहणीय बन पड़ा है।

-- विजय कुमार सिंघल

लघुकथा अर्द्धवार्षिकी : दृष्टि (वर्ष १, अंक २)
सम्पादक एवं प्रकाशक : अशोक जैन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या : १२६
वार्षिक सहयोग : रु. २००

क्षणिकाएँ

शातिरों से पटी इस दुनिया में
हम जाहिल कहाँ ढूंढ़ें
चलो ढूंढ़ते हैं कोई तो शहर में
जेहन के बदले
दिल से फैसला लेता होगा!

-- अमित कु. अम्बष्ट 'आमिली'

राम मंदिर बनाओ
तुम्हें रोकता कौन है?
बहती जल धारा को छेड़ता कौन है?
विपक्ष हो या पक्ष
आपस में युद्ध करता कौन है?
सत्य के आगे सभी मौन हैं!

-- अनिल कुमार सोनी

दोहे

नीर लिए आशा सदा, नीर लिए विश्वास।
नीर से सांसें चल रही, देवों का आभास।।
अमृत जैसा है 'शरद', कहते जिसको नीर।
एक बूंद भी कम मिले, तो बढ़ जाती पीर।।
नीर खुशी है, चैन है, नीर अधर मुस्कान।
नीर सजाता सभ्यता, नीर बढ़ाता शान।।
जग की रौनक नीर से, नीर बुझाता प्यास।
कुंए, नदी, तालाब में, है जीवन की आस।।

-- प्रो. शरद नारायण खरे

अवैध कार्यों के विरुद्ध योगी सरकार का हल्ला बोल

मृत्युंजय दीक्षित

उप्र में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा की जबर्दस्त बहुमत वाली सरकार ने अपना काम करना शुरू कर दिया है तथा इसका असर जनमानस में दिखायी भी पड़ने लगा है। विगत दिनों सीएम योगी ने कहा था कि प्रदेश के गुंडे व असामाजिक तत्व या तो सुधर जायें या फिर प्रदेश को छोड़कर चले जायें, यही उनके लिए बेहतर होगा। अब सरकार ने भ्रष्टाचार, अपराधियों व बाहुबलियों के खिलाफ जंग छेड दी है। मुख्यमंत्री योगी मंत्रियों व विधायकों को भी लगातार दिशा निर्देश दे रहे हैं तथा उनकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए २५ विधायकों पर एक सचेतक भी पार्टी की ओर से नियुक्त किया जा रहा है। अभी तक तो उनके सभी कदम सकारात्मक ही हैं।

मुख्यमंत्री भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कदम उठाने के लिए वचनबद्ध हैं। हर विभाग एवं योजना में पारदर्शी व्यवस्था कायम करने का काम किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक महत्वपूर्ण आदेश अपने मंत्रियों को दिया है कि किसी भी दागी को निजी स्टाफ में न लायें। अभी सभी मंत्रियों के स्टाफ की कुंडली ज्ञात की जा रही है। इस बात की पूरी संभावना है कि जल्द ही सभी नये मंत्रियों के स्टाफ पूरी तरह से बदल दिये जायेंगे।

साथ ही पार्टी के सभी विधायकों को अनुशासन का पाठ पढ़ाते हुए नसीहत दी गयी है कि वे सामाजिक जीवन में न केवल अपनी वाणी और व्यवहार में संयम रखें अपितु यह भी अपेक्षा की गयी है कि सरकारी कामकाज में मंत्रियों और विधायकों के परिवार वाले दखल न दें। इसी प्रकार की नसीहत पीएम मोदी अपने सांसदों को दे चुके हैं उनका कहना है कि सांसदों को अधिकारियों के स्थानांतरण और पोस्टिंग आदि से दूर रहना चाहिये। यह एक प्रकार से व्यवस्था को पूरी तरह से बदलने का एक छोटा सा प्रयास किया जा रहा है।

विगत ७० सालों से देश व प्रदेश के राजनैतिक इतिहास व व्यवस्था में एक प्रथा सी बन गयी है कि जब जिस दल की सत्ता आती हे तथा जो सांसद या विधायक चुनकर जाते रहे हैं वह अपनी मांगों को पूरा करवाने के लिए सरकारों पर दबाव बनाते रहते हैं जिसके कारण सरकारों के कामकाज पर विपरीत असर पड़ता है और भ्रष्टाचार भी बढ़ता है तथा अपराधियों को संरक्षण भी मिलता है।

भगवान राम की तपोभूमि चित्रकूट में पार्टी विधायकों को प्रदेश में रामराज्य लाने की सीख दी गयी है। चित्रकूट में कानपुर-बुंदेलखंड क्षेत्र से चुने गये विधायकों को उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सत्ता की हनक और धमक से दूर रहकर सिर्फ विकास पर ध्यान लगाने की सलाह दी है। इस दो दिवसीय बैठक में ५२ विधानसभा क्षेत्रों के सभी विधायक, प्रत्याशी, मंत्री, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी, चुनाव प्रभारी सहित अनेक पदाधिकारी गण उपस्थित हुए थे।

सरकार ने अब तक जो भी कदम उठाये हैं तथा उठाये जा रहे हैं वे सब भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का नमूना हैं। पहले अवैध बूचड़खानों पर हल्ला बोला गया, उसके साथ एंटी रोमियो अभियान शुरू हआ। यह काम लगातार जारी है। सरकार ने किसानों के हित में भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए कई छोटे किंतु ऐतिहासिक कदम भी उठाये हैं। सरकार ने फैसला लिया है कि अब समर्थन मूल्य की धनराशि सीधे किसानों के बैंक खाते में भेजी जायेगी। अब सरकार किसानों से सीधे गेहूँ की खरीद करेगी तथा इसमें बिचौलियो की भूमिका को पूरी तरह से समाप्त कर दिया जाएगा।

साथ ही सभी विधायक व सांसद गेहूं खरीद पर सीधे नजर भी रखेंगे तथा स्थलीय निरीक्षण भी करने निकलेंगे। किसानों की पहचान और कृषि क्षेत्रफल की जानकारी के लिए उनके आधार नंबर की मदद ली जायेगी। विगत सरकार ने बिचौलियों के माध्यम से गेहूं की खरीद की थी, जिसके कारण खूब भ्रष्टाचार होने की खबरें आयी थीं। यह किसानों के हित में लिए निर्णय मील का पत्थर साबित हो सकते हैं। किसानों का कर्जमाफी का बड़ा फैसला भी आ चुका है, जिसका सर्वत्र स्वागत हुआ है।

योगी सरकार में किसी भी प्रकार का अवैध काम करने वाले लोगों और संगठित गिरोहों पर आफत आ गयी है तथा कुछ पर आने वाली है। एंटी रोमियो अभियान के बाद भू माफियाओं व अवैध खनन कारोबारियों पर भी हल्ला बोल शुरू हो गया है। प्रदेशभर में बिजली चोरों के खिलाफ महाअभियान शुरू हो गया हैं यह अभियान बहुत दिनों से सुस्त पड़ा था। अब प्रदेश के ऊर्जा विभाग को बहुत दिनों बाद एक ऊर्जावान मंत्री मिला है। ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा ने बिजली चोरी रोकने के लिए महाअभियान चलाने की बात कही है और बिजली विभाग में भी किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार स्वीकार नहीं करने की भी घोषणा की है।

सबसे बड़ी बात यह है कि अब योगी सरकार में बाहुबलियों पर कड़े तेवर अपना लिये हैं। अभी तक जो बाहुबली जेलों में आराम फरमा रहे थे तथा अपनी हर तरह की फरमाइश पूरी कर लेते थे उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी हैं। यही कारण है कि एक बाहुबली मुख्तार अंसारी ने केंद्रीय मंत्री मनोज सिन्हा पर आरोप लगा दिया कि वे मेरी हत्या करवाना चाहते हैं। दूसरे बाहुबली अतीक अहमद की जेल बदल दी गयी है तथा उन्हें सामान्य कैदियों के साथ बिना किसी सुविधा के रखा जा रहा हैं। योगी का साफ कहना है कि उन्हें अपराधियों व बाहुबली के खिलाफ दो से तीन घंटे में व दिनों में कार्यवाही परक परिणाम चाहिये। वह स्वयं बाहुबलियों व अपराधियों के मामलों को देख रहे हैं।

आज प्रदेश का कोई विभाग ऐसा नहीं बचा है जहां पर बदलाव साफ नजर न आ रहा हो। समाजवादी आवास योजना बंद होने जा रही है। खाद्य एवं रसद विभाग में प्रदेश के सभी नागरिकों के राशन कार्डो को रदद कर दिया हैं। अब सभी को स्मार्ट राशनकार्ड देने की योजना है। प्रदेश के विद्यालयों में हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाओं में जमकर नकल हो रही थी जिससे निपटने के लिए कड़े कदम सरकार की तरफ से उठाये जा रहे हैं। नकल करने वाले तथा नकलचियों के खिलाफ हल्नला बोल दिया गया है। अभी तक ५७ कालेजों की मानयता रदद की जा चुकी है तथा ५४ से अधिक को डिबार किया जा चुका है। सबसे बड़ी बात यह है कि सरकार नकल के खिलाफ अब महाअभियान को और तेज करने जा रही है। प्रदेश के शिक्षा विभाग को भ्रष्टाचार के दीमक ने पूरी तरह से जकड़ रखा है।

एक के बाद एक प्रदेश के सभी विभागों में भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग शुरू हो रही है। समाजवादी सरकार के ड्रीम प्रोजेक्टों की जांच हो रही है, जिसमें गोमती रिवर फ्रंट पहला निशाना बना है। पूर्व मंत्री आजम खान का कार्यकाल व विभाग भी शक के घेरे में आ चुका है। अब सभी योजनाओं से समाजवादी, लोहिया आदि का नाम हटने जा रहा है। अब प्रदेश की योजनाओं का नामकरण दलितों, पिछड़ों के महापुरुषों के नाम पर किया जाएगा।

प्रदेश को पहली बार एक योगी व महंत मुख्यमंत्री मिला है, जो न तो बिस्तर पर सोता है और न ही एसी व लिफ्ट का उपयोग करता है। योगाी आदित्यनाथ १८ से २० घंटे तक बिना थके काम करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। अब कम से कम यह तय हो गया है कि सत्ता प्रतिष्ठान भ्रष्टाचार और बाहुबलियों के दबदबे से हल्का हो जायेगा। प्रदेश का जनमानस निश्चय ही अपने आप में अच्छा अनुभव करेगा तथा उत्तर प्रदेश उत्तम प्रदेश बनकर रहेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इलाहाबाद में हाईकोर्ट के १५० वर्ष पूर्ण होने पर कहा भी है कि सीएम योगी छोटे कामों के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री नहीं बने हैं अपितु वह काफी बड़े-बड़े काम करेंगे। प्रदेश सरकार जो भी कदम उठा रही है वह भ्रष्टाचार और अपरारधियों के खिलाफ ही हैं। सरकार जैसे-जैसे आगे बढ़ेगी वैसे-वैसे कानून व्यवस्था में भी सुधार आयेगा और परिवर्तन भी। ■

(पृष्ठ २२ का शेष) **ईवीएम का व्यवहार**

उसके वोट पर कब्जा जमाने नहीं दे रहा! इसलिए बौखलाए हुए लोग इस ईवीएम को ही रास्ते से हटाने में लग गए हैं, अन्यथा वोटर की बजाय नेता जी इस बेचारी मशीन के विरोध में न होते। मैं तो ईवीएम के विरोधी नेताओं से बस इतना ही कहूँगा, 'नेता जी, अब आप भी ऐसा साफ्टवेयर डेवलप करें कि यह ईवीएम चोरी हुआ आपका वोट आपको वापस लौटा दे।' ■

शिक्षक का बाजारीकरण

डॉ निशा गुप्ता

पहले शिक्षक या गुरु का पद बहुत ऊँचा व सम्माननीय होता था। गुरु भी बहुत ज्ञानी और मर्यादित होते थे, क्योंकि वे बनाये नहीं जाते थे बल्कि जन्मजात होते थे। जिनके जीवन का उद्देश्य बच्चों के माध्यम से एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना होता था। पर आज हर गली-मोहल्ले में स्कूल खुल रहे हैं। मेरे छोटे से जिले में सभी प्रकार के बोर्ड और माध्यमों को मिलाकर लगभग तीस स्कूल हैं। स्कूलों की बाढ़ सी आ गई है। उस पर प्ले हाउस या किड्स हाउस का तो कहना ही क्या! जिसके पास भी दो कमरों का मकान है, वह आराम से एक कमरे में प्ले हाउस खोल सकता है।

तो भाई स्कूल और प्ले हाउस तो खुल गए। अब शिक्षक की बारी आती है। शिक्षक तो आज हर गली मोहल्ले के बाजार में बिक रहे हैं। ख्वाब तो बड़े ऊँचे ऊँचे देखे थे बहुत कुछ बनने के। जब नहीं बन पाए तो कोई बात नहीं। शिक्षक का पेशा तो सबके लिए खुला है, चलो टीचर बन जाते हैं। जिनके लिए बड़ा पुराना और प्रसिद्ध स्लोगन है- टीचर फटीचर। लेकिन उपाय क्या है खाली बैठने से तो अच्छा है टीचर बनना।

अब इतना तो आप समझ ही गए होंगे कि यह मजबूरी वाले शिक्षक कितनी रुचि से शिक्षार्थियों को शिक्षा परोसेंगे और देश का भविष्य कैसा बनाएंगे। जब इतनी अधिक संख्या में स्कूल और प्ले हाउस होंगे और टीचर उनसे भी चार गुना अधिक मात्रा में होंगे, तो स्कूलों की मनमानी होना स्वाभाविक है। यहां मैं आपको बता दूँ कि मैं सरकारी नहीं, गैरसरकारी स्कूलों की बात कर रही हूँ।

आज घर में काम करने वाला या खाना बनाने वाला चार-पांच हजार से नीचे नहीं मिलता है और बूढ़े व्यक्तियों की सुरक्षा करने वाला तीस हजार रुपए लेता है। आज एक गाड़ी का ड्राइवर दस हजार महीना लेता है, दिहाड़ी मजदूर दो सौ से पांच सौ रुपये प्रतिदिन का लेते हैं। पर एक टीचर आपको डेढ़-दो हजार में आराम से मिल जाएगा। मेरे जिले में कितने ही गैरसरकारी स्कूल है जो आज भी बच्चों और शिक्षकों के साथ खिलवाड़ करके अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। उन्होंने शिक्षा को व्यवसाय बना रखा है। ऐसे स्कूलों की नकेल कसना आवश्यक है।

एक भूखा शिक्षक बच्चों को क्या देगा? क्रोध, दुख और कुंठा। इससे अधिक कुछ नहीं। हाँ, और देगा ट्यूशन प्रवृत्ति को बढ़ावा और भ्रष्टाचार। उसको अपना पेट तो भरना है, तो भाई जिसको भी परीक्षा में अच्छे अंक चाहिए वह घर पर पढ़ने आ जाओ। कवि नीरज की बड़ी प्रसिद्ध पंक्तियां हैं

तन की हवस मन को गुनहगार बना देती है।
बाग- बाग को बीमार बना देती है।
भूखे पेट को देश भक्ति सिखलाने वालो!
भूख इंसान को गद्दार बना देती है।

अब आप समझ ही गए होंगे कि मेरा इशारा किस तरफ है। शिक्षक जन्मजात होते हैं बनाये नहीं जाते हैं।

हम सारा दोष छात्रों पर मढ़ देते हैं। जबकि आप स्वयं समझ सकते हैं कि दोष किसका है और कितना है। आज आवश्यकता है विद्यालयों और शिक्षकों पर नजर रखने की, साथ ही नियम बनाकर कड़ाई से उसका पालन करवाने की, कुकुरमुत्तों जैसे फैलते स्कूलों पर ध्यान देने की। तब ही हमारे देश भविष्य उज्ज्वल और चरित्रवान होगा। ■

(पृष्ठ २० का शेष)

पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी

और सेंटीनल जैसे ख्यातिलब्ध समाचार पत्र पूर्वोत्तर में हिन्दी को लोकप्रिय बना रहे हैं।

सन् १९७० के दशक में अन्तर भाषाई और द्विभाषिता पर अनुसंधान करने वाले महादेव एल आप्टे ने पूर्वानुमान किया था कि 'अन्य भारतीय भाषाओं से संरचनात्मक समानता के लिहाज से हिन्दी द्विभाषिता की सम्भावनायें बेहतर होनी चाहिए। साक्षरता में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ प्रमुख भाषाओं और हिन्दी के बीच अन्तर भाषाई संचार बढ़ सकता है।' अब हिन्दी निश्चित रूप से सम्पर्क भाषा (लिंगुआ फ्रैंका) बन चुकी है। पूर्वोत्तर में आठ साल से रहते हुए लेखक का निजी अनुभव है कि न सिर्फ आठ राज्यों के लोग बल्कि एक ही राज्य के विविध क्षेत्र के लोग एक-दूसरे से बात करते समय हिन्दी का प्रयोग करते हैं, जबकि किसी की भी मातृभाषा हिन्दी नहीं होती। तेजपुर से शिक्षिका वाणी बरठाकुर एवं जोरहाट से कवयित्री ममता गिनोड़िया ने हिन्दी के ऐसे हजारों शब्द बताये जो पूर्वोत्तर के लोग धड़ल्ले से बोलते हैं। सन् २००६ में केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री के. संगमा ने हिन्दी में शपथ ग्रहण कर सम्बंध को मजबूत किया। सोशल मीडिया द्वारा संचालित मंच यथा नूतन साहित्य कुंज, पूर्वोत्तर हिन्दी साहित्य अकादमी, नारायणी साहित्य अकादमी, हिन्दी साहित्य अकादमी तथा नव गठित पूर्वाशा हिन्दी अकादमी आदि हजारों लोगों के साथ मिलकर हिन्दी साहित्य को जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। बढ़ते उद्योग धंधों, समाचार पत्रों, कवि सम्मेलनों एवं फिल्मों ने वाचिक रूप से हिन्दी को सर्व प्रमुख भाषा बना दिया है। अब वह समय दूर नहीं जब पूर्वोत्तर में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए संविधान संशोधन द्वारा इसे श्रेणी 'ग' (अहिन्दी क्षेत्र) से बाहर किया जा सकेगा। ■

(पृष्ठ २३ का शेष)

कहानी : ह...हलाला

"भाभीजान, जब गलती इसकी थी, तो आपका हलाला क्यों होगा? जो कुछ होगा इसी का होगा। नापाक आप नहीं, यह हुआ है।" फिर असलम की ओर देखते हुए कहा- "साले, रातभर तेरा पिछाला करूँगा तो सुबह तक पाक हो जाएगा।" कहकर वह हँसा।

सलमा को उसकी हँसी अच्छी नहीं लगी। बोली- "लेकिन, भाईजान, हमारा तो तलाक हो चुका है।"

"कौन कहता है कि आपका तलाक हो चुका है?"

"मौलवी साहब कहते हैं कि तीन बार 'तलाक' बोल देने से तलाक हो जाता है, ऐसा कुरान में लिखा है।"

"मौलवी झूठ बोलता है। कुरान में लिखा है कि दोबारा-तिबारा 'तलाक' बोलने के बीच कम से कम एक-एक महीने की मियाद होनी चाहिए। ऐसा कहीं नहीं लिखा कि एकदम से तीन बार 'तलाक' बोल देने से तलाक हो जाएगा।"

सलमा को अपने सिर से बोझ उतरता मालूम हुआ। बोली- "तो भाईजान! हमारा तलाक नहीं हुआ?"

"अभी नहीं हुआ! अभी पहला ही 'तलाक' हुआ है। जब यह साला एक महीने बाद दूसरा 'तलाक' बोलेगा, फिर उसके एक महीने बाद तीसरा 'तलाक' बोलेगा, तब तलाक मुकम्मल होगा। अगर नहीं बोलेगा तो नहीं होगा।"

अनवर की बात पूरी होते न होते असलम और सलमा के चेहरों पर रौनक वापस आ चुकी थी। असलम अनवर से लिपट गया और माफी माँगने लगा।

सलमा बोली- "भाईजान, खाना तैयार है! खाकर ही जाइए।" और थोड़ी देर बाद तीनों खाना खाते हुए कहकहे लगा रहे थे। ■

पैबंद

पंकज त्रिवेदी

बचपन में जब नहलाकर माँ मुझे तैयार करती और फटी-सी हाफ पेंट में पैबंद लगाकर मुझे स्कूल भेजना चाहती थी, तब मैं नाराज होकर हाफ पेंट पहनने का इनकार कर देता था। पिताजी उस वक्त मुझे समझाकर कहते, 'मैं जब शहर में जाऊँगा, तेरे लिए नए कपड़े जरूर ले आऊँगा।'

फिर मैं उनकी बात पर यकीन रखकर पैबंद लगाई हुई हाफ पेंट पहनकर स्कूल चला जाता था।

दो दिन से स्कूटी बंद हो गई थी। बेटी ने अपनी माँ से कहा था कि मैं पैदल स्कूल कैसे जाऊँ? पापा को वक्त ही नहीं मिलता। उसकी माँ ने मुझे कहा भी, कुछ करो। आज स्कूटी की चाबी बेटी के हाथों में थमाते हुए मैंने उसके चेहरे को देखा। वो बहुत खुश थी और स्कूल जाने के लिए उत्साह भी था।

कितना फर्क हो गया है दो पीढ़ियों के बीच ! मगर यही सत्य है उसे स्वीकार करना होगा। यही सोचता हूँ मैं आँगन में टँगे झूले पे बैठा हुआ खुद में खुद की तलाश करता हुआ। और लगता है, दो पीढ़ियों के बीच हम भी लगा रहे हैं कहीं न कहीं पैबंद! ■

मनोज कामदेव की पुस्तक 'देवभूमि उत्तराखण्ड' का लोकार्पण

नई दिल्ली। साहित्यकार एवं कवि मनोज कामदेव की पुस्तक 'देवभूमि उत्तराखण्ड' का लोकार्पण हिंदी भवन, नई दिल्ली में 'आगमन' साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें अतिविशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश अरोड़ा एवं विशिष्ट अतिथि आर.सी.जोशी, पवन जैन एवं पंजाब केसरी के न्यूज एडिटर- सूर्यप्रकाश सेमवाल और टू मीडिया के संपादक ओम प्रकाश प्रजापति रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गीतकार, गजलकार, एवं अभिनेता-निर्देशक डॉ अशोक मधुप रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने माँ सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर पुस्तक 'देवभूमि उत्तराखण्ड' का लोकार्पण किया।

कवियित्री मनीषा जोशी ने अपने मधुर स्वर में सरस्वती वंदना कर आयोजन का शुभारम्भ किया मंच संचालन डॉ स्वीट अंजेल ने किया। मनोज कामदेव ने अपने वक्तव्य में श्रोताओं को बताया कि उनके द्वारा लिखी पुस्तक 'देवभूमि उत्तराखण्ड' में उन्होंने समस्त उत्तराखण्ड का इतिहास, संस्कृति, प्राकृतिक धरोहर, सामजिक रीति रिवाज, आर्थिक व भौगोलिक दर्शन को जन मानस तक पहुँचाने का प्रयास किया है। उत्तराखण्ड मुख्यतः दो भागों में बंटा हुआ है पहला भाग मानस खण्ड (वर्तमान कुमाऊँ) और दूसरा भाग केदारखण्ड (वर्तमान गढ़वाल)। इन दोनों भागों का वर्णन इस पुस्तक में बताने का प्रयास किया है।

विशिष्ट अतिथियों में आर.सी.जोशी ने मनोज कामदेव को उनकी पुस्तक के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए उत्तराखण्ड के जन जीवन को वहां कैसे जिया जाता है और किस तरह से पहाड़ खिसक जाने पर उन्हें कितनी तकलीफों का सामना करना पड़ता है संक्षेप में सांझा किया। डॉ. हरीश अरोड़ा ने अपने कालेज के विद्यार्थियों के साथ उत्तराखण्ड की यात्राओं का जिक्र किया। साथ में अपने कालेज के समय की लिखी एक सुन्दर रचना भी सुनाई। इसी कड़ी में सूर्यप्रकाश सेमवाल, डॉ पवन जैन और ओम प्रकाश प्रजापति ने मनोज कामदेव को अपनी ओर से शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर मनोज कामदेव की जीवन संगिनी चंद्रा शर्मा ने भी मनोज कामदेव को इस उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं दी।

लोकार्पण एवं काव्य गोष्ठी के सुअवसर पर सभी कवियों ने अपना सुन्दर काव्य पाठ किया जिनमें अजय अज्ञात, इन्द्रजीत सुकुमार, अनिमेष शर्मा, कवियित्री स्वदेश चरौरा, सुनील शर्मा, बिहार के समस्तीपुर से पधारे अतुल प्रभाकर, हरदा रावत, समोद सिंह चरौरा, डॉ पूनम माटिया आदि सहित दर्जनों कवि एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। ■

मुक्तक

जीवन के प्रारम्भ में कुछ नहीं था तेरे पास
जीवन कितना मधुर था, ईश्वर का था वास
माया-मोह, मद-द्वेष वश हो अहंकार में लीन
अंत समय क्या ले चला, जीवन इक उपहास

बहुत खुशहालियों में भी कभी मगरूर मत होना
जीत का ताज सर पर हो कभी मजबूर मत होना
ऊंचाई व्योम हो लेकिन जमीं को भूल जाना मत
तुम अपनी कामयाबी में नशे से चूर मत होना

-- डॉ रमा द्विवेदी

कोई रोके ना, इन्हें उड़ने दो
इनके सपनों को सजने दो
कुंठित ना हो बचपन इनका
बेखौफ समष्टि में बढ़ने दो

-- प्रदीप कुमार तिवारी

कार्टून

-- श्याम जगोता

ममता की चुनौती ... बंगाल को निशाना बनाया तो दिल्ली पर हमला करेंगे

सरस काव्य संध्या का आयोजन

नई दिल्ली। काव्य-दरिया साहित्यिक मंच के तत्वावधान में एक सरस काव्य संध्या का आयोजन वसुंधरा सेक्टर-६, गाजियाबाद में जगदीश मीणा की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि राजेश वर्मा के सान्निध्य में कवियत्री डॉ प्रज्ञा खुशी के निवास स्थान पर किया गया! सर्वप्रथम संजय कुमार गिरि ने मां शारदे की वंदना कर कार्यक्रम की शुरूआत तत्पश्चात निर्देश शर्मा पाबला, जगदीश मीणा, राजेश वर्मा, डॉ प्रज्ञा 'खुशी', अभिषेक झा ने काव्य के विभिन्न रसों का रसास्वादन कराया।

कवियत्री डॉ प्रज्ञा खुशी ने पढ़ा- 'कल तक जो ख्वाब था वो हकीकत ही बन गया', कवि अभिषेक ने पढ़ा- 'हर जवानी आग पानी में लगा सकती मगर ये होश तो जाकर मिलें जोश में हर नौजवां के।' कवि एवं पत्रकार संजय कुमार गिरि ने पढ़ा- 'करें हैं धर्म के जो नाम पर फतवा यहाँ जारी, जरा सी बात पर तलवार उनको खींचते देखा', निर्देश शर्मा ने पढ़ा- 'डाँट भी यारा मुझे है जान से प्यारी, तेरी जानता हूँ दिल में तेरे है शहद खारा नहीं।'

इसी कड़ी में राजेश वर्मा ने भी अपनी कुछ गुदगुदाती हुई हास्य रचनाओं की फुलझड़ी छोड़ी जिस पर सभी कवि हँसते-हँसते लोट पोट हो गए। अंत में कवि जगदीश मीणा ने भी बहुत लाजबाव पढ़ा- 'उसके 'खयालों' का भी रक्खा बखूबी खयाल, कुछ इस कदर रस्मे उल्फत निबाह दी हमने।' मंच का संचालन निर्देश शर्मा पाबला ने बहुत लाजबाव अंदाज में किया ! ■

जय विजय मासिक

कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०६ (महा.)
मोबाइल : 09919997596; ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।